

सुरभि

वार्षिकांक
२०१९-२०२०



Bharatiya Seva Sadan's
**Smt. Radhadevi Goenka
College for Women, Akola.**

NAAC Reaccredited Grade - B⁺ with CGPA - 2.71
(Certified Minority Institution)

Website : www.rdgakola.ac.in ▶ E-mail : rdgcollegeakola@gmail.com

भारतीय सेवा सदन, अकोला के उपक्रम

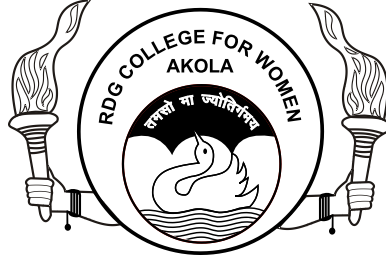
- १) आर.डी.जी. पब्लिक स्कूल इंग्रजी माध्यम (C.B.S.E.)
- २) विद्यामंदिर प्राथमिक शाळा (हिंदी व मराठी माध्यम)
- ३) श्रीमती राधादेवी गोयनका विद्यामंदिर बॉईज हायस्कूल (हिंदी व मराठी माध्यम)
- ४) विद्यामंदिर कन्या शाळा (हिंदी व मराठी माध्यम)
- ५) श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला.
 - ▶ कनिष्ठ महाविद्यालय : कला / वाणिज्य / विज्ञान / व्होकेशनल (अकाउंटिंग, फुड टेक्नॉलॉजी)
 - ▶ वरिष्ठ महाविद्यालय : कला / वाणिज्य / गृहविज्ञान
 - ▶ पदव्युत्तर विभाग (विनाअनुदानित) : कला / वाणिज्य / गृहविज्ञान
 - ▶ विनाअनुदानित अभ्यासक्रम (NGC) : BBA, BCA, MCM, Fashion Designing, Communication Skill in English, Banking & Insurance.



Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.

Goals and Mission of the College

- 1] Inspired by National Freedom Movement the Society was founded in 1942 with a goal to inculcate the spirit of Nationalism,
- 2] To impart education to women in Vidarbha Region,
- 3] To attain Community and Social development through infrastructure and resources available at the college,
- 4] To provide platform to the students by giving them opportunity to face challenges of competitive world,
- 5] To ensure and inculcate discipline in terms of regularity, punctuality among students so that they can contribute to the society and nation,
- 6] To inspire students to participate in Sports, NSS, NCC and various cultural activities for their all round development,
- 7] To aim at overall personality development of students.



भारतीय सेवा सदन द्वारा संचालित
श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय
अकोला.

-: श्रद्धास्थान :-

आदरणीय माताजी स्व.श्रीमती राधादेवीजी गोयनका
संस्थापिका अध्यक्ष - भारतीय सेवा सदन, अकोला

संरक्षक

श्रीमान दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष, भारतीय सेवा सदन, अकोला.

मार्गदर्शक

डॉ.देवेन्द्र व्यास
प्राचार्य

मुख्य संपादक

डॉ. सौ. निभा उपाध्याय

संपादक मंडळ

▶ प्रा.डॉ.चारुशिला रुमाले ▶ डॉ.शालिनी बंग ▶ प्रा.प्रमिला बोरकर

संपादकीय विद्यार्थिनी

मराठी विभाग : कु. रुपाली पांडे, कु. कांचन गुढे, कु. सुवार्ता खरात, कु. प्रियंका चौव्हाण,
कु. मनिषा चक्रदेवे, कु.रुपाली पांडे, कु. देव्यानी हातवळणे, कु. निकीता तापसी, कु. शारदा साठे,
कु. जान्हवी मांडळे, कु. कोमल ढोरे, कु. नेहा ढोरे, कु. पुजा गिरी.

हिंदी विभाग : कु. संध्या प्रजापति, कु.दिव्या चव्हाण, कु. प्रिया मिश्रा, कु. कोमल ढोरे, कु. साक्षी बजाज, कु. ईशा पांडे,
कु. राखी चौहान, कु. नेहा ढोरे, कु. गायत्री कामळे.

संस्कृत विभाग : कु. अदिती देशपांडे, कु. सायली सुदामे, कु. जाई विद्यासागर, कु.माधुरी शुक्ला,
कु.वृषाली जोशी, कु. ललिता सावरकर, कु. रेश्मा भोकरे, कु. रेणु जैस.

इंग्रजी विभाग : कु. शिवानी कराले, कु. रोहिणी जाधव, कु. संध्या प्रजापति, कु. ईशा प्रधान, कु. निकीता नवले.

प्रकाशक

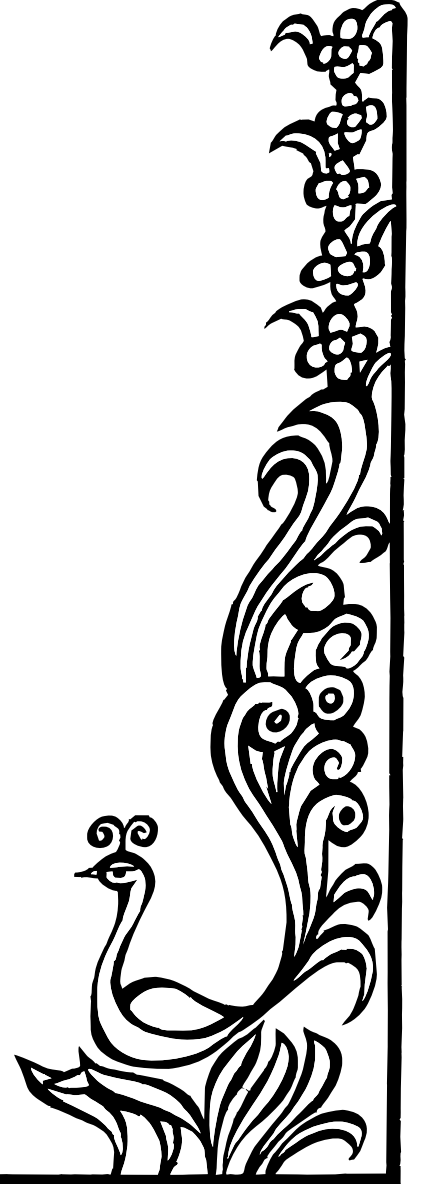
प्राचार्य, श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला.

रूपरेखा : सुरज एन.भांगे, अकोला. मो. ९९२३९३६४४३



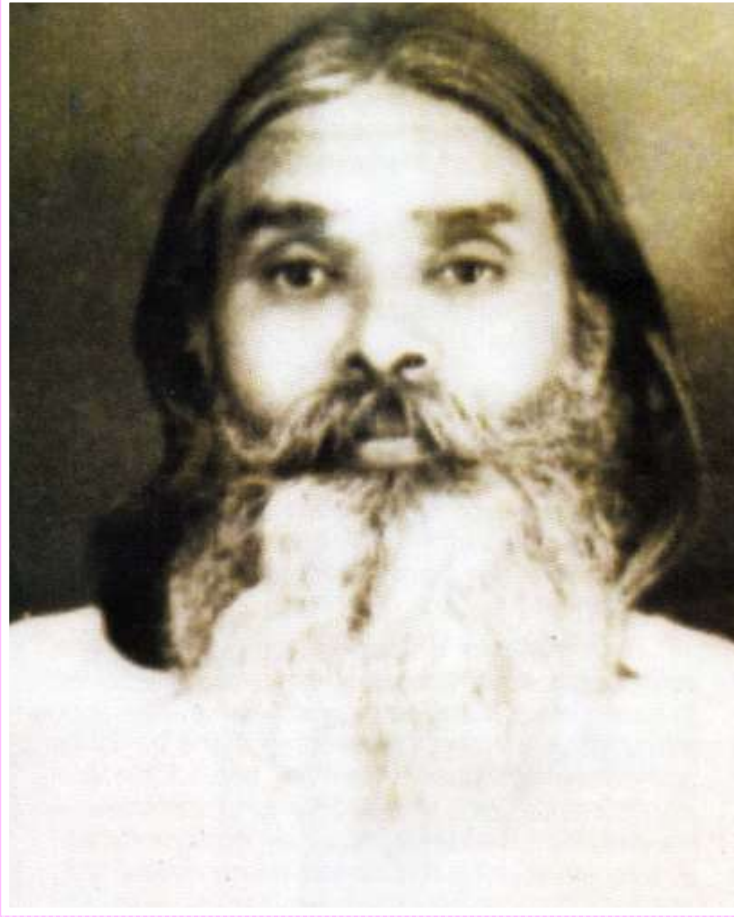
अंतरंग

- ▶ मराठी विभाग
- ▶ हिंदी विभाग
- ▶ इंग्रजी विभाग
- ▶ संस्कृत विभाग
- ▶ विविध अहवाल



सुरभि-२०१९/२०२०

॥ हमारे श्रद्धास्थान ॥



भारतीय सेवा सदन संस्था के आश्रयदाता
सेठ स्व.श्रीमान किसनलालजी गोयनका



॥ प्रेरणा पाथेय ॥

श्रद्धेय माताजी **स्व.राधादेवीजी गोयनका** के स्वर्गारोहण के पश्चात यद्यपी उनकी भौतिक उपस्थिती आज हमारे बीच नहीं है, किंतु उनके प्रेरणादायी विचारों का आलोक हमारे विकास पथ को आलोकित करता रहा और सदैव करता रहेगा ।

श्रद्धेय माताजी द्वारा “सुरभि” २००९-१० में उनके द्वारा लिखे गए सारगर्भित अंतिम आशिर्वचन का अंश प्रस्तुत है ।

“मै चाहती हूँ आप सब खूब पढ़े । केवल पढ़े लिखे ही नहीं बल्कि स्वावलंबी व ज्ञानी और देश, समाज व संस्था का नाम उँचा करें ।”

आप सबको और कितने संदेश मै लिख पाऊंगी मै नहीं जानती हूँ । जीवन का संध्याकाल है । यात्रा अस्ताचल की ओर है अतः मै अपने जीवन के अध्ययन तथा अनुभवों का निचोड आप तक पहुंचाना चाहती हूँ । हमारे पास जो भी है, विद्या, शक्ति तथा धन सबका उपयोग परहित में होना चाहिये । यही धर्म है । जो आप सब स्वयं के लिए होना पसंद नहीं करते वह दुसरो के साथ कभी न करें ।

जीवन सुख दुःख का मिश्रण है । दोनो में तटस्थ रहना चाहिए । कहना आसान है, करना कठिन है लेकिन असाध्य नहीं है । साधना जरूरी है । स्कूल, कॉलेजों की शिक्षा के अलावा संतो की अनुभूती और भी जरूरी है । इसके लिए मै आप सबसे गीता और रामायण नित्य पढ़ने का तथा उन्हे जीवन में उतारने का अनुरोध करती हूँ । अतः सुबह-शाम नियम से प्रतिदिन कम से कम बीस मिनट ध्यान करना चाहिए । यह मेरे अनुभव की बात है । केवल उपदेश नहीं है । भारतीय सेवा सदन व संस्थाओं में मेरे प्राण बसते है । इन्हे आप सबका सदैव सहयोग और स्नेह मिलता रहे ।

मैं आप सबको अनेकों शुभाशीर्वाद देती हूँ ।

सबका कल्याण एवम् मंगल हो ।

सुरभि-२०१९/२०२०

Source of Inspiration



The Founder President of Bharatiya Seva Sadan, Akola
Great Freedom Fighter

Late. Mataji
Smt. Radhadeviji Kisanlalji Goenka

VISION

**Empowerment of Women Through Economic
Independence for Betterment of Society**

MISSION

**“To impart holistic Education to the girl students in order to transform
them into Empowered, Capable of Self-earning and Efficient Individuals,
Family Members and Citizens in their Future Lives”**

सुरभि-२०१९/२०२०

भारतीय सेवा सदन, अकोला के सम्माननीय पदाधिकारी



श्री. दिलीपराजजी
गोयनका
अध्यक्ष



आ.श्री. गोपीकिसनजी
बाजोरिया
वरिष्ठ उपाध्यक्ष



श्री. रविंद्रकुमारजी
गोयनका
उपाध्यक्ष



श्री. आलोककुमारजी
गोयनका
सचिव



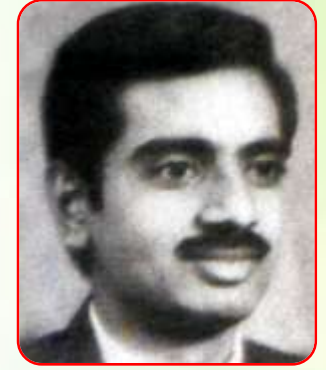
श्री. प्रफुल्लजी
संघवी
सह सचिव



श्री. दुर्गाप्रसादजी
अग्रवाल
कोषाध्यक्ष



श्रीमती. मंजुदेवीजी
गोयनका
सदस्या



श्री. संजयकुमारजी
गोयनका
सदस्य



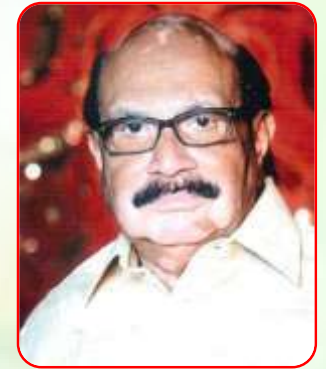
श्री. विनीतकुमारजी
गोयनका
सदस्य



श्री. तुलसीरामजी
गोयनका
सदस्य



श्री. हरमिंदरसिंह
छटवाल
सदस्य



श्री. अँड. रमेशचंद्रजी
श्रावगी
सदस्य

सुरभि-२०१९/२०२०



श्री.अॅड. बी. के. गांधी
सदस्य



श्री. दिपककुमारजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. सुनीलजी अग्रवाल
सदस्य



श्री. रणजीतबाबु गुप्ता
सदस्य



श्री. शिवप्रकाशजी रुहाटिया
सदस्य



श्री. भरतराजजी गोयनका
सदस्य



श्रीमती इंदुबालाजी चौधरी
सदस्य



श्री. राजकुमारजी रूंगटा
सदस्य



श्री. घनश्यामजी गोयनका
सदस्य



श्री. पवनजी माहेश्वरी
सदस्य



डॉ.वंदनजी मोहोड
सदस्य



श्री. के. के. जोशी
सदस्य

सुरभि-२०१९/२०२०

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला
शाळा समिती (कनिष्ठ महाविद्यालय)



श्री.दिलीपराजजी गोयनका
अध्यक्ष



श्री.रविंद्रकुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.आलोककुमारजी गोयनका
सदस्य



श्री.तुलसीरामजी गोयनका
सदस्य



डॉ.वंदनजी मोहोड
सदस्य



डॉ.देवेंद्र व्यास
प्राचार्य/पदसिध्द सचिव

President's Message



Dear Students,

It is my great pleasure to welcome you to RDG College for Women. The college is unique within the landscape of Vidarbha region of Maharashtra State because it is exclusively the first women college providing education from PG to PG under one campus. What you see in these pages provides only the snapshot and trailer of incredible and excellent work carried out at this college. The college is privileged to have well qualified & experienced staff & administration dedicated to academic excellence, diversity, integrity, community services, social

engagement, student success & the environment that foster RDG Culture, critical thinking & self-determination and with the vision of

**“EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH ECONOMIC
INDEPENDENCE FOR BETTERMENT OF SOCIETY ”**

We would be delighted to host you for a campus visit to see for yourself the good work of RDG College community, where students thrive & progress towards the realization of their full potential in every field. We provide quality education to the students and take their every possible care.

I am pleased & proud to have the opportunity to lead this institution with earnest cooperation of my colleagues, Principal and all the teaching and non-teaching staff.

Education enables one to differentiate between the good & the bad. We at Bharatiya Seva Sadan believe that “If you make a mind educated automatically all the evils of the society will be taken care of.”

Our Moto is “Quality Education at Affordable Cost.”

Our endeavor is to create a world class educational facility where lives are shaped as per today's needs, where you learn to meet the challenges of tomorrow.

Being a social organization it is our mission to not only fulfill the educational needs of the population but also contribute towards its upliftment from all social entrapments.

With best wishes

Dilipraj Goenka

President

Bharatiya Seva Sadan, Akola.

प्राचार्य का मनोगत



वर्ष २०१९-२० के वार्षिक विशेषांक 'सुरभि' का प्रकाशन हो रहा है अत्यंत आनंद का विषय है।

हमारी प्रेरणा पुंज स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सफल समाजसेविका, साहित्यकार, श्रद्धेय माताजी की प्रेरणा का अभिरंग 'सुरभि' जिसके माध्यम से हमारी छात्राओं में व्याप्त सुप्त गुणों को मुखरित होने का अवसर प्राप्त होता है। और माताजी के विचारों के आलोक के साथ ही भारतीय सेवा सदन के अध्यक्ष मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका जी का विशेष मार्गदर्शन से हमारी छात्राओं में सामाजिक दायित्व की भावना भी जागृत हो रही है और इसी भावना के परिणाम स्वरूप हमारी एन.एस.एस., एन.सी.सी. की छात्राएं कोरोना महामारी के समय जनसेवा का कार्य कर रही हैं। मिशन मास्क के अंतर्गत मास्क न लगाने वाले लोगों को मास्क लगाने की विनती कर रहे हैं और मास्क का महत्व भी समझा रहे हैं ऐसे ही कर्तव्य दक्ष युवा पीढ़ी की आज समाज को आवश्यकता है। साथ ही हमारे प्राध्यापक वर्ग की और से भी कोरोना महामारी के काल में कैसे स्वस्थ रहा जा सकता है, हमारा पोषण आहार कैसा होना चाहिए, इस संबंध में जनजागृती की जा रही है। इस हेतु अकोला जिल्हाधिकारी एवं जिला आरोग्य विभाग को एक निवेदन भी दिया गया है।

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। भारतीय समाज और संस्कृति की विशेषताएं हमें साहित्य में दिखाई देती हैं।

महाविद्यालयीन जीवन यह विद्यार्थी जीवन का स्वर्णकाल कहा जाता है। इसी समय विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ जीवन के सर्वांगीण विकास का ध्येय लिये आगे बढ़ता है। अतः महाविद्यालय की छात्राओं को निरंतर आगे बढ़ाने की दृष्टि से उनके पंखों को नई उर्जा देने के लिए एवं उनके सपनों को साकार करने के लिए महाविद्यालय सदैव उनके साथ है।

आज इस बदलते हुए परिवेश में हमें एक ऐसी ही युवा पीढ़ी का निर्माण करना है जो शिक्षित होने के साथ-साथ संस्कारित हो, घर, परिवार व समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हो, आर्थिक रूप से सक्षम होकर राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान करने के लिए दृढ़ संकल्प हो।

महिला सक्षमीकरण के इस दौर में महिलाओं की अहं भूमिका को देखते हुए हमारे महाविद्यालय में छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिये हम सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। साहित्य अभिमुख बनाने के लिए कहानी, कविता, नाटक, इत्यादि लेखन की प्रेरणा दी जाती है।

आधुनिक तंत्रज्ञान का उपयोग कर उद्योग क्षमता विकसित करना, पर्यावरण सुरक्षा, मतदान जनजागृति, रक्तदान, अवयवदान का महत्व, नागरिक संरक्षण, स्वयं रक्षण कार्यशाला, कानून की जानकारी 'स्वस्थ राष्ट्र सशक्त राष्ट्र' को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य सम्बंधी विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और प्रतीवर्ष महाविद्यालय से सभी क्षेत्र में प्रतिभावान छात्राओं में से स्टूडेंट ऑफ द इयर, आर.डि.जी. ऑयडॉल का चयन किया जाता है एवं खेल जगत में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। जिसकी सम्पूर्ण छवि 'सुरभि' में विद्यमान है।

यह 'सुरभि' हमारे महाविद्यालय के अंतरंग की अभिव्यक्ति है।

स्वर्णिम युग के सपने संजोये हमारी छात्राये निरंतर आगे बढ़े इसी विश्वास के साथ.....

डॉ. देवेन्द्र व्यास
प्राचार्य

संपादकीय...



‘सुरभि’ वार्षिक विशेषांक आपके हाथ सौपते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

साहित्य समाज का पथ प्रदर्शक माना जाता है, अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की दिशा दिखाता है। हर युग में ज्ञान-

विज्ञान के सत्य को साहित्य ने उजागर किया है। हृदय और बुद्धि दोनों में समन्वय साधने की कला हमें साहित्य देता है ऐसे में आज की युवा पीढ़ी को साहित्य से जोड़ना आवश्यक है क्योंकि वे ही महान देश का भविष्य है जैसे यह वर्ष कोरोना महामारी के कारण मानव जीवन के लिए संघर्ष का वर्ष बन गया है किंतु दृढ़ इच्छा शक्ती, सहयोग, सहकारिता की भावना के साथ हम इस संघर्ष भरे वर्ष को भी पार कर जायेंगे और फिर से नया सवेरा होगा इस विश्वास के साथ हमें आगे बढ़ना है।

इस बार हम किसी विशेषांक से जुड़े नहीं है बल्कि छात्राओं को लेखन की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है, जिससे वे अपने पसंद के विषय पर लिख सकें और हुआ भी वैसा ही कि उन्हें जो अच्छा लगा उस पर उन्होंने लिखा कहीं दोस्ती की यादे तो कहीं माता-पिता का स्नेह, कहीं परिवार की जिम्मेदारिया तो कहीं हास्य-व्यंग, कहीं देश भक्ति के स्वर तो कहीं सामाजिक - राष्ट्रीय दायित्व का निर्वाह तो, कहीं जीवन आनंद की रंगीन छटा इस ‘सुरभि’ में समाहित है।

अपने नाम के अनुरूप यह पत्रिका विविध रंगी फुलों की सुगंध अपने आप में समेटे परिसर को सुवासित करने का प्रयास कर रही है। इस सन्दर्भ में कवि सुमित्रानंदन पंत की ये पंक्तियाँ याद आती है।

“सुन्दर है विहंग, सुमन सुन्दर
मानव ! तुम सबसे सुन्दरतम्
निर्मित सबकी तिल-सुषमा से
तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम।”

‘सुरभि’ में जहाँ एक ओर सप्तरंगी सुनहरी छटा है वहि

दूसरी ओर अभ्यास पूरक कार्यों के अहवालो में महाविद्यालय की ‘सुरभि’ रच बस गयी है।

विगत वर्ष हमने कैसे नियोजनबद्ध कार्य किया है यह जानना हो तो पढ़िये हमारे विविध समितियों के अहवाल और जान लीजिए हमारी छात्राओ की निष्ठा और प्राध्यापको की कर्तव्य निष्ठा। राष्ट्रनिर्माण के लिए आवश्यक सशक्त पीढ़ी को तराशने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। यह प्रेरणा हमें श्रद्धेय माताजी के आशिष, वचनो से मिली है।

माताजी के सपनो को साकार करने व छात्राओं के सर्वांगिण विकास के लिए अनमोल मार्गदर्शन हमारे संस्था के अध्यक्ष महोदय मा.दिलीपराजजी गोयनका सदैव करते है।

इसके साथ ही समय-समय पर भारतीय सेवा सदन कार्यकारिणी सदस्यो के अनमोल मार्गदर्शन भी हमें मिलता रहता है, जिससे उनके बताये मार्गपर मा.प्राचार्य डॉ.देवेंद्रजी व्यास के साथ-साथ हम सभी एक जुट होकर कार्य करते है। जिससे सशक्त भावी पीढ़ी का निर्माण हो सके। मा.प्राचार्य महोदय के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए, संपादक मंडल के सहयोगी प्राध्यापक जिन्होने मेरा बखुबी साथ निभाया अनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। मै उन सभी शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण जिन्होने मुझे सहयोग दिया उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ। प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष सभी सहयोगी के प्रति कृतज्ञ हूँ एवं छात्राओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होने अपने लेखो से इस ‘सुरभि’ को सँवारा है। जीवन के विकासात्मक परिदृश्य को समावेशित ‘सुरभि’ को प्रकाशन योग्य बनाने के लिए प्रकाशक सुरज एन. भांगे के अथक परिश्रम के लिए धन्यवाद देती हूँ।

सप्तरंगिनी भाव लहरी ‘सुरभि’ को सौप कर प्रसन्न हूँ, अगर कोई कमी रह गयी है तो उदार पाठक उसे सह लेंगे इस विश्वास के साथ...

डॉ. सौ. निभा उपाध्याय

संपादक

महाविद्यालय मे हुए विविध उपक्रमों के क्षणचित्र....



मा. श्रीमती निलमताई गोरे, उप-सभापती, विधान परिषद यांना मानवंदना देतांना RDG NCC च्या विद्यार्थीनी



मा.अध्यक्ष श्री. दिलीपराज गोयनका व श्रीमती मधुजी गोयनका यांच्या हस्ते Fashion Designing Exhibition चे उद्घाटन.



मा.अध्यक्ष श्री. दिलीपराज गोयनका यांच्या हस्ते पु.ल.देशपांडे स्टॅंड-अप कॉमेडी स्पर्धा २०१९ चे उद्घाटन संपन्न.



महाविद्यालयात २१ जून International Yoga Day कार्यक्रमाचे आयोजन



महाविद्यालयीन NCC Unit तर्फे घेण्यात आलेल्या रक्तदान शिबीरात प्राध्यापक वृंद व विद्यार्थीनी यांचा सहभाग.



महाविद्यालयाच्या स्नेह संमेलनात महाविद्यालयीन विद्यार्थीनी नृत्य सादर करतांना.



महाविद्यालयात पार पडलेल्या आंतर महाविद्यालयीन हॉली बॉल स्पर्धेत विजयी चमु समवेत प्राचार्य.



महाविद्यालयात SPARK Quiz Competition संपन्न झाला त्यात विजयी स्पर्धकांसमवेत प्राचार्य, शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारी.

संजय धोत्रे
SANJAY DHOTRE



राज्य मंत्री
इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी, संचार एवं
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार

Minister of State
Electronics & Information Technology,
Communications and
Human Resource Development
Government of India

शुभेच्छा संदेश

आपल्या महाविद्यालयाचा 'सुरभि' वार्षिकांक प्रकाशित होत आहे हे ऐकून मला आनंद वाटत आहे. आपल्या महाविद्यालयाचा प्रत्येक कार्यक्रम आपण पूर्ण निष्ठेने व समर्पित वृत्तीने पूर्ण करता. या अंकामध्ये सुध्दा विद्यार्थीनींच्या शैक्षणिक व बौद्धिक दृष्टीने विकासाचा विचार समोर येईल हा विश्वास मला आहे.

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे जे भावविश्व असते ते कसे उमललेल, तसेच त्यांच्या विचाराला विकासाचे पंख कसे फुटतील हे बघणे व त्यास वाव देणे हे आपले कर्तव्य आहे व आपण ते सक्षमतेने या वार्षिकांकाच्या माध्यमातून पूर्णत्वास नेत आहात.

सदर अकांत आपण विद्यार्थीनींना त्यांच्या कला गुणांना त्यांच्या अंगीभूत शैलीला अत्यंत समर्थपणे विकसित कराल, तसेच आपल्या संस्थेचे नावलौकिक वाढवाल अशी खात्री आहे. त्यासाठी मी आपणास व आपल्या संपादक मंडळास शुभेच्छा देतो.

(संजय धोत्रे)





गोपीकिशन राधाकिशन बाजोरीया
(बी.एस्सी., एल.एल.बी.)

विधान परिषद सदस्य, महाराष्ट्र राज्य


विद्यापीठ कार्यकारी परिषद सदस्य : डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषी विद्यापीठ, अकोला । संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती

शुभेच्छा संदेश

आपल्या महाविद्यालयाच्या वार्षिकांक 'सुरभि' प्रकाशित होत आहे. हे ऐकून मला अत्यंत आनंद वाटत आहे. श्रद्धेय माताजी स्व. राधादेवीजी गोयनका यांनी सुरु केलेल्या या महाविद्यालयाची होणारी उत्तरोत्तर प्रगती पाहून मला अत्यंत अभिमान वाटतो. आपल्या महाविद्यालयाचा प्रत्येक कार्यक्रम आपण पूर्ण निष्ठेने व समर्पित वृत्तीने पूर्ण करता या अंकामध्ये सुध्दा विद्यार्थीनींच्या शैक्षणिक व बौद्धिक दृष्टीने विकासाचा विचार समोर येईल हा विश्वास मला आहे.

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे जे भावविश्व असते ते कसे उमलेल, तसेच त्यांच्या विचारांना विकासाचे पंख कसे फुटतील यावर लक्ष केंद्रीत करून त्यास वाव देणे हे आपले कर्तव्य आहे व आपण ते सक्षमतेने या वार्षिकांकाच्या माध्यमातून पूर्णत्वास नेत आहात.

सदर अंकात आपण विद्यार्थीनींना त्यांच्या गुणांना त्यांच्या अंगीभूत शैलीला अत्यंत समर्थपणे विकसीत कराल, तसेच आपल्या संस्थेचे नावलौकीक वाढवाल अशी खात्री आहे. त्यासाठी मी आपणास व आपल्या संपादक मंडळास अनेक शुभेच्छा देतो.


(गोपीकिशन बाजोरीया)

शुभेच्छा संदेश



महाराष्ट्र विधानसभा



गोवर्धन शर्मा

विधानसभा सदस्य
अकोला पश्चिम विधानसभा

निवास : आळशी प्लॉट, गोरक्षण रोड, अकोला फोन नं.: (0724) 2437058 मो.: 9403113504



MESSAGE

It gives me immense pleasure to know that Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola is going to publish annual college magazine "Surbhi" having contents of which are contributed by the students of your college. I am sure that, by this activity, the skills and hidden potential of your students will be exhibited and a concise picture of the activities and achievement of your college will be projected.

I hereby convey my best wishes for the magazine.

(Govardhan Sharma)



महाराष्ट्र विधानसभा



रणधीर सावरकर

विधानसभा सदस्य

अकोला (पूर्व)



MESSAGE

I am delighted to know that your well known education institution run by the Bhartiya Seva Sadan used to bring out hidden talents of the students every year, through its magazine "Surabhi".

First of all my heartiest Congratulations and Best Wishes to the students for their success in the recently held exams. for their brightest future.

The hard work and the dedication, honesty and integrity, confidence and self determination with which your institution has achieved the desired results since last so many decades, will be able to achieve success in all the phases of its life only by retaining these qualities.

I wish that all of you get lots of fame and achieve a greater distinction than what you have achieved today. and I hope that you all will make Akola and our country proud with your achievements in future too.

रणधीर सावरकर

विधानसभा सदस्य

अकोला (पूर्व)

पत्ता : शंकरवाडी, अकोला - ४४४ ००५ * दूरध्वनी : (०७२४) २४५६६०० (ऑ.), २४५०९८९ (नि.)

E-mail akolaemla@gmail.com

DR. MURLIDHAR CHANDEKAR
M.COM., M.Phil., Ph.D
VICE-CHANCELLOR



SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI - 444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

NAAC Accredited at the 'A' level

Message

Date : _____

I am delighted to know that Smt.Radhadevi Goenka College for Women, Akola is bringing out the issue of their annual magazine "SURABHI " for this academic year. I congratulate the team comprising of Principal, editorial board.

The magazine is indeed a platform for the students to express their perception clearly and logically, which develops in them originality of thoughts. I am sure that students of this college will make the greatest use of this opportunity by contributing to the theme of the magazine and the readers will be benefitted from the knowledge contents.

I wish this college a very big success in all their endeavors and the magazine a dazzle future.

(Dr.Murlidhar Chandekar)

Dr. Devendra Vyas,
Principal
Smt.Radhadevi Goenka College for Women,
Akola.

Phone : Office - 0721 - 2662373, Resi. 0721 - 2662108, 2662093, Fax No. 0721 - 2662135, Gram : sgbamuni

E-mail : vc@sgbau.ac.in Website : www.sgbau.ac.in

DR. RAJESH S. JAIPURKAR
M.Sc. (Tech.), Ph.D.
PRO-VICE- CHANCELLOR



SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI-444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

Accredited by NAAC at level 'A'

No.: SGBAU / PVC / /2020
Date : 20/09/2020

MESSAGE

With great pride, I would like to congratulate the Principal, Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola. & the entire team of Editors for bringing out this college Annual Magazine "Surbhi". The college has been achieving higher degree of success under the visionary leadership & dedicated staff. The Students of the college are offered several opportunities for all round development. The publication of College Annual Magazine "Surbhi" is an Unique step for bringing out Students talent of writing on a subject and will strengthen the academic activities of the college.

I congratulate all those efforts of whom have brought the magazine to on the distinct honour I wish the college a great Success in such future endeavors.

I hereby convey my best wishes for the magazine.

RSJL

Dr. Rajesh Jaipurkar,
Pro-Vice-Chancellor

Phone : Office - 0721-2551961 Resi. - 0721-2672702 Fax No. 0721-2662135 Gram : SGBAMUNI

Website : www.sgbau.ac.in E-mail : provc@sgbau.ac.in

मराठी विभाग

महात्मा गांधी काल आज उद्या

‘सच्चाई का लेकर शस्त्र
और अहिंसा का ले अस्त्र
तुने अपना देश बचाया
गोरो को दूर भगाया’

मोहनदास करमचंद गांधी (ऑक्टोबर २, इ.स. १८६९ - जानेवारी ३० इ.स. १९४८) हे भारताच्या स्वातंत्र्य संग्रामातील प्रमुख नेते आणि तत्वज्ञ होते, महात्मा गांधी या नावाने ते ओळखले जातात. अहिंसात्मक, असहकार आंदोलने केली. गांधींनी भारताला स्वातंत्र्य मिळवून दिले. अहिंसात्मक मार्गांनी स्वातंत्र्य मिळवण्यासाठी त्यांनी संपूर्ण जगाला प्रेरित केले. रविंद्रनाथ टागोर यांनी सर्वप्रथम त्यांना ‘महात्मा’ म्हणजे महान आत्मा हि उपाधी दिली.

‘मी माझ्या बांधवांना असं सांगेन की,
मला महात्मा म्हणतात म्हणून माझं
वचन प्रमाण आहे असं समजून कोणी
चालू नये. महात्माचे वचन देशातील
बुद्धीच्या कसोटीवर घासून घ्यावे.’

भारतातील लोक त्यांना प्रेमाने ‘बापू’ म्हणत आणि त्यांना अधिकृतपणे भारताचे राष्ट्रपिता म्हटले जाते. सुभाषचंद्र बोस यांनी इ.स. १९४४ मध्ये पहिल्यांदा त्यांना ‘राष्ट्रपिता’ असे संबोधले.

गांधीजींच्या महात्मात असे काय होत वा आहे, की ज्यांची संमोहिनी आईनस्टाईन पासून रिचर्ड अँटेनबरो पर्यंत, रविंद्रनाथ टागोरांपासून विनोबा भावे पर्यंत, मार्टिन लुथर किंग पासून नेल्सन मंडेलांपर्यंत सर्वांना पडावी सर्वांचा आदर्श महात्मा गांधी का ?

गांधीजींच्या हत्येनंतर आपली प्रतिक्रिया देतांना अल्बर्ट आईनस्टाईन म्हणाले होते की, या भुतलावर असा एक माणूस होऊन गेला, असे पुढील पिढ्यांना कोणी सांगितले तर त्यावर त्यांचा विश्वास बसणार नाही. त्यांच्या काळात दूरचित्रवाणी नव्हती. आजच्या इतकी वर्तमानपत्रे, रंगीबिरंगी नियतकालिके नव्हती. गांधीजी मुख्यतः हिंदी, गुजराती आणि इंग्लिश या तीनच भाषांमध्ये बोलत, त्यांची लेखन किती लोक वाचनार कारण देशाची साक्षरता १० ते १५ टक्के होती.

विशेष म्हणजे सुशिक्षित, सधन वगपिक्षा गांधीजींना पाठिंबा होता तो निरक्षर, अडाणी, गरीब, अर्धपोटी सामान्य लोकांचा होता. गांधीजींनी कोणताही मुलभूत ग्रंथ लिहिला नव्हता की, ज्यात त्यांच्या तत्वज्ञानाची त्यांनी सविस्तर मांडणी केली नाही.

‘वैष्णव जन तो तेने कहिये - पीड पराई जाने रे’ यां गांधीजींनी लोकप्रिय केलेल्या ओळी संत नरसी मेहतांच्या.

गांधीजी प्रत्यक्ष सत्तेवर कधीच आले नाही. तसेच ते काँग्रेसचे चार आण्याचे सभासदही नव्हते. त्यांनी स्वतः गांधी टोपीही अगदी कमी वेळा परिधान केली.

गांधीजी सविनय सत्याग्रहाच्या कल्पनेचे जनक होते. त्यांनी २६ जानेवारी १९३० भारताचे स्वातंत्र्य जाहीर करून घेतले. ‘गांधींनी आयुष्यभर सत्य, अहिंसा या तत्वांचा पुरस्कार केला.’

क्षमा मागितल्याने मनुष्य लहान होत नाही.

गांधीजींचे विचार आजही उपयुक्त आहे काय यावर नेहमीच प्रश्न उपस्थित केला जातो. विसाव्या शतकातले बापू आज कितपत रेलिव्हंट आहेत हे तपासून पहाणे यामागचा मुख्य उद्देश. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी मंत्रालया परिसरातील सदनिकेत नेहमी बोलत असतात. अधिकार पदाची झूल न बाळगणारे साधे घर, मोठेपणाची भाषा या घराला अमान्य. गांधी-विनोबांच्या मुर्तिसोबतच तीन माकडे घरात आवर्जून ठेवलेली. न्यायमुर्ती सांगू लागतात, मुळात गांधीजी आज, उद्याच नव्हे तर चिरंतन रेलिव्हंट आहेत. नव्या युगाने निर्माण केलेल्या वेगवेगळ्या समस्यांवर गांधीविचार हेच उत्तर आहे.

गांधीविचार सर्वश्रेष्ठ आहे हे समोर आणण्याच्या चळवळी सुरु झाल्या, युवक मोठ्या प्रमाणात समोर आले. 'वुई वॉट पीस, नॉट वॉर' हा या युवकांच्या चळवळीचा मंत्र. यावर न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी म्हणतात मी याचे वर्णन 'बुध्द हवा, युध्द नको' असे केले.

'अहिंसा' हा मुळात नकारात्मक शब्द नाही, 'अहिंसा' याचा अर्थ मी तर जगेनच पण दुसऱ्यालाही जगायला मदत करेन, असा होतो. गांधीविचार हे भारतातीलच नव्हे तर जगातील सर्व प्रश्नांच्या उत्तरांचा मार्ग दाखवतो. श्रमाला प्रतिष्ठा हे गांधीजींचे आवडते तत्व.

गांधीजींनी 'राजकारण' हा शब्द कधीही वापरला नाही ते म्हणत असत 'राष्ट्रकारण' सत्तेचे राजकारण नको देशाला पुढे नेणारे प्रयत्न हवेत. 'स्वातंत्र्य' हा आपण वापरात आणलेला शब्द, पण गांधीजींना भावणारा शब्द 'स्वराज्य', 'स्वातंत्र्य'

आणि 'स्वराज्य' यातला नेमका फरक या महामानवाने ओळखला होता.

महात्मा गांधीजींचे विचार हे काल, आज नव्हेच तर उद्या सुध्दा उपयुक्त राहणार आहे, कारण त्यांनी सांगितलेली जी पण तत्वे आहेत ती कधीच नष्ट न होणारी आहेत.

'सत्य', 'अहिंसा' ही त्यांची तत्वे मानली जातात आणि या सोबतच ते त्यांच्यामध्ये प्रामाणिकपणा, सहनशिलता, धीर, शांती आणि समाधान हे सर्व त्यांच्यामध्ये होते आणि याच गोष्टींमुळे आजही त्यांची किर्ती तेवढीच अमर आहे आणि उद्या आणि नेहमीच राहणार आहे.

आज आपल्या भारत देशाला संरक्षणाची खूप गरज आहे याचे कारण हे पण असू शकते. आज काही व्यक्ती त्यांचे विचार बाजूला सोडून स्वतःचाच विचार करत आहे.

जगामध्ये जर शांतता, सुव्यवस्था आणि प्रगती जर पाहिजे असते तर त्यांच्या विचारांची म्हणजे 'महात्मा गांधीजींच्या' विचारांची खुप गरज आहे, आणि त्यांच्या तत्वांची सुध्दा कारण यामध्ये ऐवढे सामर्थ्य आहे की भविष्यात होणारे महायुध्द सुध्दा टळू शकते.

तसेही कोणत्याही व्यक्तीला आपण रागावून आणि भांडून जिंकूच नाही शकत, आपल्याला जिंकायचे असते ते बस 'शांती' च्या मार्गाने याचा अवलंब जर आपण केला तर भारताला किंवा जगातील कोणत्याही देशाला जेवढा खर्च संरक्षण करावा लागतो तेवढा करावा लागणार नाही, आणि ह्याच पैसाचा देशातील प्रगती, शिक्षण, आरोग्य, सेवा या कार्यांमध्ये उपयोग होणार आणि 'भारत' व त्या सोबत जगातील प्रत्येक देश विकसनशील

आपल्या खाद्यांला सोसणार नाही असे ओझे आपल्यावर ईश्वरही टाकत नाही.

नव्हे तर 'विकसीत' देश बनेल.

'सत्य आणि अहिंसा ही तत्वे तुम्हाला
आचारावयाची

असतील तर तुम्ही पुर्णपणे निर्भय बनले पाहिजे'

३० जानेवारी १९४८ ला दिल्लीच्या बिल्दा
भवनाच्या बागेतून लोकांबरोबर फिरत असतांना
गांधीजींची गोळी मारून हत्या करण्यात आली.

'सत्य'

'सत्यापासून वेगळे असे
सौंदर्य असूच शकत नाही,
सत्य हेच सौंदर्य हे
मला मान्य आहे, परंतू सर्व सौंदर्य
सत्यारूप असते असे मात्र नव्हे'.

'अहिंसा'

'अहिंसा हा धर्म काही फक्त

ऋषी व साधुसंत यांच्यासाठी नाही,

तो बहुजन समाजाचाही धर्म आहे.

हिंसा हा जंगली पशूचा धर्म असून, अहिंसा हा
मानवाचा धर्म आहे.फ

'महात्मा गांधी' हे आजही आपल्या बरोबरच
आहेत कारण त्यांनी सांगितलेली अमूल्य तत्वे हे
त्यांच्या जिवंतपणाची साक्षी आहे. गांधीजी होते,
आहेत आणि नेहमीच राहणार कारण त्यांचे विचार
हे 'अमूल्य' आहेत.

'बिन हथियार लढे हो
फिर भी हट गया शैतान
हे बापू तुमको मेरा प्रणाम
हे बापू तुमको मेरा प्रणाम.'

कांचन जनार्दन गुठे

बी.ए. प्रथम वर्ष

जगण्याचे गुपित कोडे

निघून जाते आयुष्य खिसे आपुले भरताना
वेळ जाते निघून दिवस रात्र धावतांना
हरवून गेले आहे सारे सुख विकत घेताना
क्षणभर हसणे सुध्दा म्हाग झाले लोकांना विसरलीत नातीगोती सारे जवळ असताना
धावपळीचे आयुष्य, निमूटपणे जगताना
आयुष्य आहे सुरेख कुणीच पाहत नाही नुसती दगदग सुरु वेळ कुणाजवळच नाही
बसून मित्रांसोबत आज कुणी बोलत नाही
सुखामागे धावताना, माणूस लागला आहे. आयुष्य काय आहे आज कुणालाच कळले नाही
जगण्याचे गुपित कोडे कुणालाच उमजले नाही.

मनिषा गो. चक्रदेवे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

आपली आपल्या मुल्यांवरची निष्ठा निर्णय घेणे सोपे बनविते.

स्त्री सक्षमीकरण

“Empowerment of Women
Through Economic Independence
for Betterment of Society”

श्रद्धेया पूज्य माताजी श्रीमती राधादेवी
गोयनका यांचे हेच जीवनध्येय.

२१ व्या शतकात महिलांनी कित्येक क्षेत्रात
भरारी घेतलेली आहे. प्रशासन, शासन, विज्ञान,
तंत्रज्ञान, कला, साहित्य या सर्वच क्षेत्रात
स्त्रियांनी यशसंपादन केले आहे.

आपला देश विकसनशील देशाच्या यादी मध्ये
येतो असे आपण अभिमानाने सांगतो आणि हा
अभिमान असायलाच हवा. परंतू आपण
विकसनशील का आहोत. विकसित का नाही हा
प्रश्न अनेकांना पडत असेलही आणि याची कारणे
सर्वांची वेगळी असणार पण या सर्व कारणांमध्ये
एक आहे जे खूप महत्वाचे आहे. पण आपण सतत
त्याकडे दुर्लक्ष करतो आणि आतापर्यंत दुर्लक्षच
करत आलो आहोत.

ते कारण आहे ‘स्त्री सक्षमीकरण’

भारत सरकारने २००१ हे वर्ष ‘महिला
सबळीकरण वर्ष’ म्हणून जाहीर केले. त्यामुळे
महिलांच्या आर्थिक व सामाजिक परिस्थितीचा
आढावा घेतला गेला. त्यात काही सकारात्मक
आणि नकारात्मक बाबी दिसून आल्या त्यामुळे
भारतातील विविध क्षेत्रात कार्यरत असलेल्या
महिलांनी केलेली प्रगती केंद्रस्थानी ठेऊन,
तत्कालीन पंतप्रधानांनी ‘स्त्री शक्ती पुरस्कार’
सुरु केला. १९७५ हे वर्ष, संयुक्त राष्ट्रसंघाने ‘अ’
दर्याचे स्थान असलेल्या, ‘आंतरराष्ट्रीय महिला

वर्ष’ म्हणून घोषित करण्यात आले. ८ मार्च हा
दिवस जगभरात ‘जागतिक महिला दिन’ म्हणून
दरवर्षी साजरा केला जातो. हे सर्व वर्ष, दिन साजरे
करण्यामागे ‘महिलांचे सबळीकरण’ हा प्रमुख हेतु
असल्याचे दिसते.

‘महिला सक्षमीकरण’ म्हणजे नेमके काय ? हा
प्रश्न सतत मनाला भेडसावणारा असतो तेव्हा एक
विचार समोर येतो.

‘स्वयंविकासाबरोबरच समाजात समानतेने,
बरोबरीने विकसित होण्यासाठी महिलांना
स्वतंत्रपणे निर्णय घेण्याचा अधिकार असणे, स्त्रीचे
व्यक्तिमत्व एक माणूस म्हणून, व्यक्ती म्हणून
विकसित करणे आणि त्यांना समान संधी देणे,
स्त्रीचं शारिरीक, शैक्षणिक सबळीकरण, आर्थिक
सबळीकरण, वैचारिक, सामाजिक सशक्तीकरण
या सगळ्या पैलूंनी स्त्री जेव्हा सशक्त होते आणि
त्याचा उपयोग सकारात्मक दृष्टीने समाजासाठी
केला जातो तेव्हाच खऱ्या अर्थाने स्त्रीचं
सशक्तीकरण, सक्षमीकरण झालं असं म्हणता
येईल.’

समान मानव माना स्त्रीला

तीची अस्मिता खुडू नका ।

देवी म्हणूनी पूजू नका

वा दासी म्हणूनी पिटू नका ॥

वैदिक कालखंडापासून म्हणजे पूर्व वैदिक
कालखंड सोडला तर उत्तर - वैदिक कालखंडा
पासून स्त्रियांना दुय्यम स्थान आहे. त्यांना नेहमी
दुय्यमच समजलं जात असे.

स्त्रीचा जन्मच मुळात ‘चुल आणि मुल’ या दोन

मित्रांची निवड काळजीपूर्वक करा यावरून तुमचे चारित्र्य कळते.

गोष्टीसाठी झाला असतो असा लोकांचा समज. उंबरठ्याच्या आत पाऊल एवढीच तिची मर्यादा होती.

हुंडा, सती, केशवपन, मुरळी, बालविवाह, देवदासी अशा कितीतरी दृष्ट प्रथा भारतात होत्या.

महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, रमाबाई रानडे, महादेव गोविंद रानडे, अण्णासाहेब कर्वे, राजा राममोहन रॉय या सर्व समाज सुधारकांचे कार्य अनमोलचं, या सर्वांनी स्वतःच्या जीवाची पर्वा न करता समाजासाठी किती त्रास सहन केला की समाजाला एक नवी दिशा मिळावी. खऱ्या अर्थाने स्त्री-पुरुष यांच्या अधिकारांमध्ये समानता यावी हेच त्यांचे जीवनध्येय.

अशा थोर समाज सुधारकांची आठवण आपल्याला येते ती फक्त त्यांच्या स्मृतीदिवस आणि जन्मदिवस या दोनच दिवशी इतर दिवशी तर हे अशक्यचं.

खरोखर जर त्यांच्यासाठी काही कराव असं आपल्याला वाटत असेल तर, आपण त्यांचे विचार, त्यांचे कार्य हे सतत चालू ठेवले पाहिजे.

त्यांना फुलांची माळ घातल्यानंतर त्यांच्या विचारांची माळ जर आपण घातली तर आपली आणि आपल्या देशाची प्रगती निश्चितच होणार...

आपण म्हणतो आम्ही प्रगतीपथावर आहोत, प्रगती होत आहे आमची, विकसित होत आहे आम्ही, कशाला म्हणतात प्रगती होणे.

देशात पायाभूत सुविधा असणार, राष्ट्रीय

उचल वाढत असेल, परकीय चलन साठा आपल्याकडे असेल. म्हणजे झाली का प्रगती, ही आपली प्रगती आहे पण फक्त आर्थिक प्रगती, मानसिक दृष्ट्या आपला देश आपल्या देशातील जनता किती सक्षम आहे याचा आढावा घेणे तितकेच महत्वाचे...

आजची जर स्थिती आपण बघितली म्हटलो तर आज स्त्री अनेक क्षेत्रात प्रगती करीत आहे हे सर्वांना माहित आहे.

खंत आहे ती या गोष्टीची कि स्त्रीयांनी कितीही मेहनत केली आणि कितीही उंच शिखरावर ती पोहोचली तरी तिला स्थान दिल्या जाते ते दुय्यमच हे असे का आहे. हे सर्व कधी संपणार, कधी आमचे अधिकार आम्हाला मिळणार, खऱ्या अर्थाने 'समानता' कधी येणार...

आपले 'संविधान' यामध्ये आपल्या काही मूलभूत हक्क दिलेले आहेत यामध्ये 'कलम १४' 'समानतेचा हक्क' याचा समावेश आहे.

पण खरोखर ही समानता आहे का ? हा एक प्रश्नच. आपल्या देशाचे 'संविधान' हा एक सुंदर ग्रंथ आहे. देशाचा मुलभूत कायदा आहे. प्रत्येक गोष्ट ही जर संविधानानुसारच चालली तर आपली प्रगती ही सुनिश्चितच होणार...

देशाला स्वातंत्र्य मिळून ७४ वर्षे झाली आहेत पण स्त्रियांना स्वातंत्र्य कधी मिळणार...

या ७४ वर्षांमध्ये आपण ह्या रुढी, प्रथा, परंपरा बदलू शकलो नाही. खंत आहे ती या गोष्टीची की ती बदलविण्याचा प्रयत्नही कुणी करत नाही.

मन शांत असेल तर आतला आवाज ऐकू येतो.

‘स्त्री - सक्षमीकरण’ ही अशी संकल्पना आहे ही ज्यावर विचार आणि कृती दोन्ही करायला हवी, पण अशी कुणाचीच मानसिकतचा नाही.

‘स्त्री-सक्षमीकरण’ हा एक चांगला विषय बनवून समाज यावर भाषणे, व्याख्याने आयोजित करतो, राजकारणासाठी प्रामुख्याने हा विषय वापरला जातो. बस एवढेच काय ते या संकल्पनेचे महत्व...

ग्रामीण भागातील स्त्रियांची स्थिती तर बिकटच आहे. आपण म्हणतो अनिष्ट प्रथा बंद झाल्या आहेत पण वास्तवात हे असे नाही, काही प्रमाणात ह्या अजुनही सुरुच आहे आणि ह्या प्रथा संपल्या नाही तर नवीन प्रथा जन्माला आल्या.

जसे : अत्याचार, हिंसाचार, मानसिक आणि शारिरीक दृष्ट्या छळ, तिरस्कार.

आता ह्या प्रथा कधी बंद होणार कि ह्या संपायच्या आधी परत आपल्याला दुसऱ्या प्रथांना सामोरे जावे लागेल. हे कधी संपणार...

हे सर्व संपविण्यासाठी आपल्याला काहीतरी कृती करायला हवी ‘स्त्री सक्षमीकरण’ यावर फक्त बोलून आणि लिहून चालणार नाही. आपण किती सक्षम आहोत हे आपल्याला आपल्या कृतीमधून दाखवून द्यायला हवं.

काही वेगळं करायच म्हटलं की लोकं म्हणतात. तु एकटी काय करणार ? तु तर शेवटी मुलीची जात आणि आपणही हाच विचार करतो की मी तर मुलगीच...

पण लोकं हे विसरतात की,

हिच ती स्त्री जीला तुम्ही आदीमहाशक्ती मानता, देवी म्हणून दुर्गा, काली, चंडी, अंबा,

लक्ष्मी, सरस्वती अशा स्त्री रुपांची पूजा करता आणि सुखःदुखात सावलीसारख्या सोबत असणाऱ्या गृहिणीचा मात्र छळ करता...

हा किती विरोधाभास आहे.

सर्वात वाईट तर तेव्हा वाटते जेव्हा एक स्त्रीचं दुसऱ्या स्त्रीचा छळ करते. स्त्रियांना गुलामगिरीच्या बेड्यात अडकवणारी विचारसरणी मोठ्या अर्थाने जोपासली जाते. अशिक्षित, श्रमिक कुटूंबात तर स्त्रीची अवस्था गोठ्यातील गाईप्रमाणे दावणीला बांधलेली असते.

एकटी स्त्री काय करू शकते हा विचार जेव्हा मनात येतो तेव्हा आपण इतिहासाकडे बघावं... मातोश्री जिजाबाई, अहिल्याबाई होळकर, झांशीची राणी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, समाबाई रानडे, डॉ. आनंदीबाई जोशी अशी कितीतरी नावे आपल्याला घेता येतील की ज्यांनी स्त्रिला एका उंचीवर नेऊन ठेवले.

ह्या ही एकट्याच होत्या यांनी सुरुवात केली एका क्रांतीची आणि हळूहळू त्यांचे संघटन झाले त्यांच्याकडे काय होते, होता तो फक्त आत्मविश्वास. की मी बदल घडवून आणू शकते.

हा एक आत्मविश्वासच

‘पुन्हा येऊ दे लक्ष्मीबाई
एक अहिल्या पोटी ।
पुन्हा होऊ दे रणरागिनीची
शौर्य कहानी ओठी ।
बाई विणा ही वैरान दुनिया
कशी होईल आखुन ।
पुन्हा एक सावित्री असेल
गर्भात श्वास रोखून...।’

ध्येय गाठण्यासाठी जिद्द, चिकाटी आणि परिश्रम यांची गरज असते.

ह्या थोर स्त्रिया होऊन गेल्यात पण सर्वांच्या स्मरणात त्या अजूनही आहेतच.

या थोर स्त्रियांचे जीवनधैर्य पूर्ण करणे हे आता आपले जीवन धैर्य असले पाहिजे.

यांच्याकडे जो आत्मविश्वास होता तो आपणही आत्मसात करायला हवा...

जे बदल, जे अधिकार, जी समानता आपल्याला हवी आहे ती आपणच मिळवायला हवी...

अगदी तळागाळातील स्त्रियांपर्यंत ही समानता पोहोचायला हवी...

क्रांती ही कधी आपोआप घडत नसते. ती घडवून आणावी लागत असते. ही करेल, ती करेल हा विचार बाळगण्यापेक्षा हे मलाच करायचे आहे असा जर निश्चय केला तर नक्की क्रांती घडणारच आणि हळू हळू संघटन ही तयार होईल.

स्त्री म्हणून जन्म घेतला आहे आता
तर हे उसने मी कसे फेडावे
माती जरी झाली माझी
तरी प्रत्येकाच्या स्मरणात मी राहावे

हे प्रत्येक स्त्रिला वाटले पाहिजे आणि कुठल्याही चांगल्या कामात कुणी सुरवात करत असेल तर तीला मागे न खेचता तीला सहकार्य केले पाहिजे.

‘एकलीस गेली बाई मी
झाड काही हलले नाही
दुकलीस गेली बाई मी
झाड काही हलले नाही
तिकलीस गेली बाई मी
झाड काही हलले नाही

सान्याच जणी मिळून गेलो
झाड काही राहिलं नाही...’

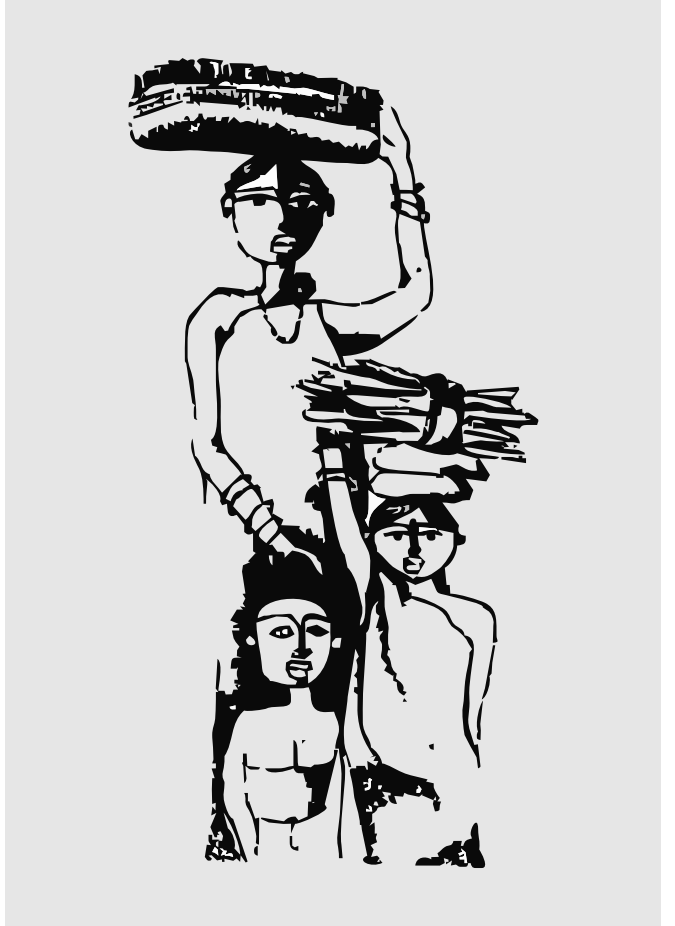
आज दिनांक १९/०९/२०२० म्हणजे माझ्या आईचा जन्मदिवस...

माझ्या आईचे नाव : सौ. सुनिता जनार्दन गुढे

जी फक्त माझी आईचं नाही तर माझी मैत्रीण, माझी मार्गदर्शक, माझी गुरु, माझे सर्वच काही असे बहुआयामी नेतृत्व असणारी माझी आई...

जीच्यामुळे हा लेख लिहण्यासाठी मी प्रोत्साहित झाले. त्यामुळे हा लेख माझ्या आईसाठी...

कांचन सुनिता जनार्दन गुढे
बी.ए. तृतीय वर्ष



वेडेपणा जपण्याकडे आपण प्रयत्नपूर्वक लक्ष दिले पाहिजे, कारण वेड असलेलीच माणसे जग बदलतात.

स्त्री (एक संघर्ष)

खरं तर स्त्री या विषयावर लिहायचे म्हटले की द्विधा मनस्थिती होते. पुरुषांच्या खांद्यानाखांद्या लावून जगात वावरणारी स्त्री की घराच्या संपूर्ण विश्व आदीशक्तीपुढे नतमस्तक व्हायचे ही आदीशक्ती कोण ? स्त्रीच ना ! मग या स्त्रीचे स्थान गेले तरी कुठे ? पुरुषांच्या धाडधिप्पाड शरीर्यष्टीमागे किंवा कर्कश आवाजामागे दबले आहे की समोर येण्यासाठी झुंज देत आहे ? अर्थातच स्वतःची लायकी सिध्द करायला समाजाशी झुंज देत आहेत. श्री. सौदागर यांनी स्त्रीचे वर्णन अगदी यथार्थ केले.

पोराटोरा, घरचा आपला
बायलांट जास्ती वजा
टिकली तेची लावन संभाळतत
पुरुष प्रधान, ती राजा

श्री. विजय सौदागरांनी 'स्त्रीच' 'राजा' म्हणून अगदी योग्य वर्णन केल आहे.

स्त्री जर कुटूंबातील कणा आहे तर मग स्त्रीच का नको. घरात मुलगी जन्मली की सगळ्यांची तोंड लाल का होतात ? याच उत्तर शोधण्याची गरज नाही. 'चूल आणि मूल' या परंपरेतून स्त्री जरी बाहेर आली तरीही तिला संपूर्ण स्वातंत्र्य मिळालेले दिसत नाही. कारण एकच समाजाची मानसिकता. आजही आपल्या समाजाचा स्त्रीयांकडे भोगवस्तू म्हणून बघण्याचा दृष्टीकोन काही गेला नाही.

कुटूंबाचा पायाच जर स्त्री आहे आणि पायाच

कमकुवत असेल तर वरचे चार मजले काय कामाचे ? तिच्या हक्कांची, स्वातंत्र्यांची, अब्रुची रक्षा आपण का करू नये ? घरातील मंडळींकडून सुध्दा तिची पिळवणूक होत असते. आजची स्त्री जर पंतप्रधान होऊन संपूर्ण देशावर अधिराज्य गाजवू शकते. तर ती कुटूंबाला सुध्दा धान्यावर आणू शकते. पण तिच्यात असलेले कुटूंबावरील प्रेम, आपुलकी, तिची सहनशिलता या गोष्टींमुळे ती परावृत्त होते.

ताराबाई शिंदे म्हणतात,

स्त्रियांचा जन्म नको देऊ सध्यातरी
रात्र ना दिवस परक्याची ताबेदारी
नाचण्याचा कोंडा नाही कशाचा काजकामा
नको देऊ स्त्रीचा जन्म रामा

स्त्री जर कुटूंबातील कणा आहे तर मग तिच्या हक्कांसाठी तिला संघर्ष का करावा लागतो ? का तिची वेळोवेळी परिक्षा घेण्यात येते ? चारित्र्य फक्त स्त्रीलाच असतं का ? पुरुषांना नाही ? चारित्र्य संशयावरून सितेला का अग्नीपरिक्षा द्यावी लागली ? आजच्या काळातील स्त्री प्रसिध्द सामाजिक कार्यकर्ता सिंधुताई सपकाळ यांना चारित्र्य संशयावरून का परितक्त्या म्हणून जगावे लागले ?

बदल घडवून आणण्यासाठी शिवराय, लोकमान्य, भगतसिंग यासारखे युगपुरुष जन्माला यावेत असे ओरडून सांगणारा समाजमात्र यांना जन्म देणारी स्त्रीच होती हे विसरत आहे.

स्वप्न ते नव्हे जे आपण झोपून बघतो. तर स्वप्न ते हवे जे तुमची झोप उडवेल. - डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

आपल्या आई-बहिणींची विटंबना होत असतांना एक दिवस गर्दी करून मेणबत्ती जाळणे ऐवढेच काय ते चित्र आज दिसतयं.

स्त्रियांना नेहमी नाण्यासारखं जगावं लागतं जशा नाण्याच्या दोन बाजू असतात अगदी तसेच आई, बहीन, मैत्रीण असे अनेक भूमिका पार पाडाव्या लागतात पण हे करत असतांना हल्ली समाजाने नाण्यांच्या दोन्ही बाजू ह्या गुळगुळीत केल्या आहेत. स्त्रियांकडे आपल्या डोळ्यांना पूर्ण स्वातंत्र्य देऊन बघणारे पुरुष मात्र स्त्री स्वातंत्र्य ह्या विषयावर बोलण्याचे टाळतात. स्त्रियांचा

आजही वापर करून हवा तेवढा उपयोगी वस्तू म्हणून उपभोग घेतला जातो. समाजातील हा दोष नाहीसा व्हावा यासाठी प्रयत्न करणं गरजेचं झालयं.

'Me too' च्या माध्यमातून समोर येणाऱ्या स्त्रियांच्यापलीकडे सुध्दा अत्याचाराला बळी पडलेल्या या स्त्रीयांना बाहेर येणं गरजेचं आहे. तरच भारत प्रगतीपथावर पोहोचेल.

रूपाली भालचंद्र पांडे
बी.कॉम. अंतिम वर्ष

हरवलेले आनंदाचे क्षण

पाहता पाहता मोठे झालो, सगळेच गणित बदलत गेले,
छोट्या छोट्या आनंदाचे क्षण केव्हाच उडून गेले.

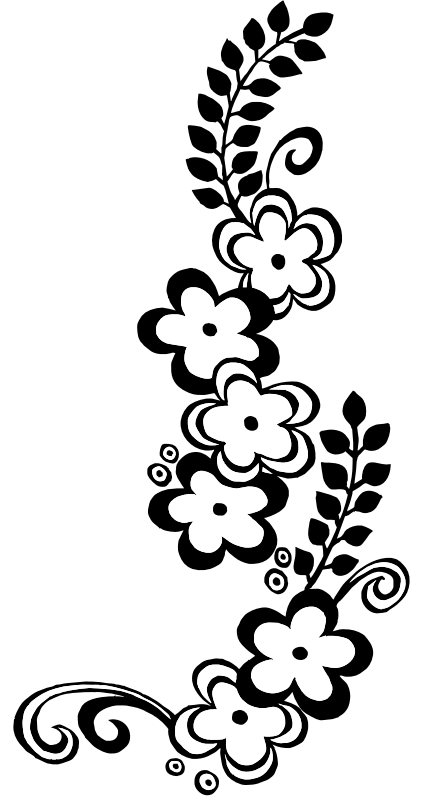
सागरगोट्या, लगोरी वगैरे सोबती सारे सोडून गेले
शनिवारच्या सकाळची आवरतांना धादंल होईल आणि
म्हणता म्हणता दंग्यामध्ये रविवार हळून निघून जाईल.

आता फक्त विकेंड आले त्यातले निरागसपण संपुण गेले
स्पर्धेच्या जगातले सर्वात पहिले दहाविचे वर्ष आले
पाहता पाहता सर्व संवगडी अभ्यासाच्या मागे लागले.

क्लासेस, कॉलेज, ट्यूशनच्या गडबडीत परीक्षा हेच उद्देश बनले
बालपणीचे सुंदर दिवस आयुष्याच्या डायरीत मागे पडले.

गुंफता गुंफता नाट्यांचे बंध किस्से सारे आठवत गेले
आज थोडे मागे पाहतांना अश्रु माझे ओघळून गेले
असे ह्या छोट्या छोट्या आनंदाचे क्षण हरवून गेले.

देवयानी हातवळणे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष



आईची शिकवण हजार धर्मग्रंथांच्या शिकवणीपेक्षा श्रेष्ठ असते.

ज्वालामुखी

पेटला रक्तात ज्वालामुखी
तो आता विझनार नाही
अत्याचारांच्या वाहल्या पर्याली
आता अन्याय सहन होणार नाही
पेटवली प्रगतीची मशाल
तिमिर आता होणार नाही
पेटला रक्तात ज्वालामुखी तो...

गेला स्त्रिचा पती म्हणून तीचे
केश मुंडन होणार नाही
आजची सिता पतीच्या चितेवर
सती जाणार नाही
हे कृष्णा येथे द्रौपदीच आता
चिरहरण होणार नाही
अंधत्व पत्करणारी पतीसाठी
गांधारी निर्माण होणार नाही
पेटला रक्तात ज्वालामुखी तो विझनार नाही...

डिवचला गेला स्त्रिचा स्वामीमान
तो डाचू देणार नाही
ज्ञानरुपी परिसाने झाले सोने
लोह आता होणार नाही
मनुस्मृतीची आठवण स्त्रिला येणार नाही
पेटला रक्तात ज्वालामुखी तो विझनार नाही...

भाग्यउदय झाला स्त्रिजन्मोन स्त्री आता
हिन समजली जानार नाही
कवेत घेतले आकाश आम्ही
पोकळी निर्माण होणार नाही
लेखनी ही सुवार्ताची अर्ध्यावर थांबनार नाही
पेटला रक्तात ज्वालामुखी तो आता विझनार नाही.

सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

फक्त तु खचू नकोस...

जन्माला संधी मिळेल तुलाही,
लगेच हिरमसु नकोस,
आयुष्य खुप सुंदर आहे,
फक्त तू खचू नकोस.

प्रेम तुझ्यावर करणारे,
कितीतरी लोक आहेत,
तुझ्यासाठी जोडणारे,
खुप सारे हात आहेत,
अरे अशाच आपल्यांसाठी,
तू ही थोडं हसून बघ,
आयुष्य खुप सुंदर आहे,
फक्त तू खचू नकोस.

उठ आणि उघडून डोळे,
पहा जरा जगाकडे,
प्रत्येकाच्या आयुष्यात,
काहितरी असतेच थोडे,
नाही नाही म्हणून,
उगाच कुढत तू बसू नकोस,
आयुष्य खुप सुंदर आहे,
फक्त तू खचू नकोस.

सामर्थ्य आहे हातात जर,
स्वप्ने डोळ्यात घेऊन चल,
परिस्थितीशी भिडवून छाती,
दोन हात करत चल,
विजय तुझाच असेल,
तेव्हा मागे वळून बघू नकोस,
आयुष्य खुप सुंदर आहे,
फक्त तू खचू नकोस.

निकीता वर्धमान तापसी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

प्रसन्नता ही एकाग्रतेची पहिली पायरी आहे.

बंधनात बांधु नका

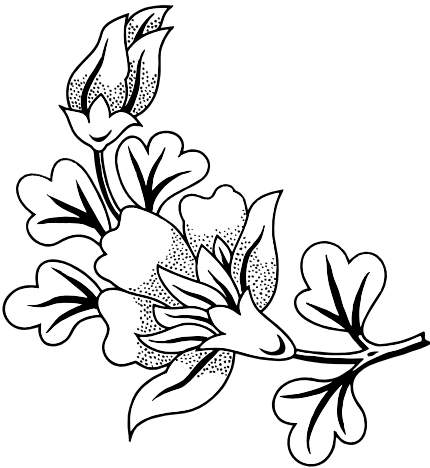
जन्मता मिळाले स्वातंत्र्य हे बंधनात बांधु नका
जगु द्या आम्हा मुक्तपणे निर्बंध असे लादू नका
झेप घेत्या पक्षाला पखांपासून छादू नका
जन्मता मिळाले स्वातंत्र्य हे...

बहुरु द्या वसंताला, शिशिर त्यामध्ये बघु नका
अस्त झालेल्या सुर्याचा उद्य होतांनी रोखू नका
जन्मतः मिळेल स्वातंत्र्य हे...

कुठवर चालनार हुकूमशाही
स्त्री पण कशातच कमी नाही
नर-नारी मध्ये भेदभाव करु नका
जन्मतः मिळाले स्वातंत्र्य हे बंधनात...

नरनारायण तर नारी नारायणी
मर्दा संग लढली ती झाशीची मर्दानी
टाकाच नाण्याचे दोन पैलू
असे वेगळे फेकू नका
जन्मतः मिळाले स्वातंत्र्य हे बंधनात बांधु नका.

सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. - द्वितीय वर्ष



शपथ !!

गर्जा महाराष्ट्र माझा, त्याची मराठी मायबोली
सात समुद्र किती तिची, करुणेची ती सावली
आज दिवस या मातेचा, ऐक गाथा या धरतीची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची
ज्ञानेश्वरांनी उपदेश केला, तुकोबांनी मंत्र दिला
महाराष्ट्राच्या हृदयामध्ये, मराठीचा अंश पेरला
हि आहे माय मराठी, दिव्य वाणी संतांची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची !!

महाराष्ट्राच्या खोऱ्यांमध्ये, टिळकांची दहाड गुंजते
आंबेडकरांच्या ज्ञानाची, गंगा येथेच वाहते
हिच माती साक्ष आहे, शिवबाच्या स्वराज्याची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची !!

खंड मिळाले खंडांना, प्रगती आली जगात
माझी माय मराठी, राहिली काहींच्याच मनात
इंग्रजीचा जयघोष झाला, मराठीचा कणाच मोडला
काही भाषा राहिली केवळ,
इतिहासकारांच्या शब्दांची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची !!

उठ मर्दा, जागा हो
मराठीच्या अस्मितेसाठी, सदैव तू उभा हो
आता गरज या आईला,
तुझ्या ध्येय आणि साथीची
शपथ आहे मर्दा तुला मराठी मातीची !!

वैष्णवी धनंजय पोरे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

जीवनाला आकार द्यायचा असेल तर अहंकार बाजूला ठेवावा लागेल.

सांग तुला ग माये...

कुणी अशी केली किमया कुणास नाही कळते
सर्वगुण संपन्न हे व्यक्तिमत्त्व कोणी रेखाटले
सांग तुला ग माये कोण असे बनविते ॥ धृ ॥

तु शक्ती तु बुध्दी तुच सागर करुणेचा
चुकले जरी मी कधी न तु मज फटकारते
सांगुनी प्रेमाने तु मज कवटाळते ॥१॥
सांग तुला ग माये.....

तव अंगात भरले चैतन्य संपूर्ण जगताचे
करुनी सगळ्यांची तु कामे, कधी न कोण दुखविते
चंदनापरी अंग झिजवुनी, तु सुगंध सगळ्यांना देते ॥२॥
सांग तुला ग माये

तुज काशी तुच विश्वेश्वर तुच आहे हिमालया
मग मी कशास जावू, तयास पाहावया
नतमस्तक होवूनी तुझ्या चरणांवर मज दर्शन होते जगताचे ॥३॥
सांग तुला ग माये

तुच धरती तुच आकाश तुच माझा निसर्ग
मग मी कशास विनाकारण करु तुझ्या संस्काराचा विसर्ग
कोठूनी आणीले हे ज्ञान जयाच्या प्राषणाने मज तु पुष्ट बनविते ॥४॥
सांग तुला ग माये.....

जान्हवी अ. मांडळे
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

‘आई’

आई शब्द तुझ्या प्रेमाचे
अक्षर माझ्या पेनाचे
सतत आठवतात ते दिवस
मला तुझ्या शिकवणुकीचे
आईच्याच ममतेने माझ्या
यशाची आशा आहे
आई माझी सदा हसत रहावी
यातच माझे जीवन सुखी आहे.

शारदा बाळकृष्ण साठे
एम.कॉम. - प्रथम वर्ष

मैत्री

श्वासातला श्वास असते मैत्री,
ओठातला घास असते मैत्री,
काळजाला काळजाची आस असते मैत्री,
कोणीही जवळ नसतांना
ईश्वराचा भास असते मैत्री...

शारदा बाळकृष्ण साठे
एम.कॉम. - प्रथम वर्ष

नम्रतेच्या गुणाशिवाय कुणालाच काही शिकता येणार नाही.

मुलीची हाक

नऊ महिने नऊ दिवसानं, झाली जगमग घाई
या वंशाच्या दिव्यापाई, नको पणती विझवू आई ॥६॥

उद्या तुझ्या गर्भाची चाचणी होणार ग,
मुलगी आहे म्हणून सारे नाक मुरडणार ग,
माझ्या चिमुकल्या कानाला तुझी कुजबूज ऐकु येई ॥७॥

अधिकाराने तु माझा नको करु घात ग,
जन्मभर ठेवीन आई मी तुला सुखात ग
तुच माझं नशीब, तुच माझी पुण्याई गं ॥२॥

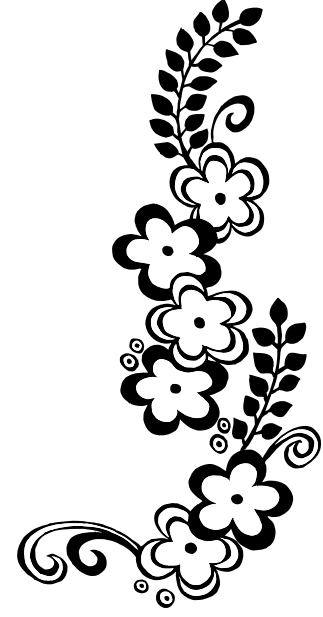
मुला समान मुलीला मिळो जन्माचा आनंद ग,
तुच भृण हत्येला या घाल पाया बंद ग,
तारण मारण सर्व तुझ्याच हाती आई गं ॥३॥

आई मारु नको ग मला, आई जन्म घेऊ दे ग,
आई नको सांभाळू मला तळहाताच्या फोडावाणी ग,
मला साभाळणारा आई तो विश्वाचा धनी गं ॥४॥

तुझ्या आईन तुझ्या वेळी केल असत अस,
आई होण्याच भाग्य तुला लाभल असत कस,
कुलस्वामीनी आहेस तु राक्षसी विचार गं,
सोडून दे आई मारु नको ग मला जन्म घेऊ दे आई ॥५॥

या वंशाच्या दिव्यापाई नको पणती विझवू आई
नको पणती विझवू आई.

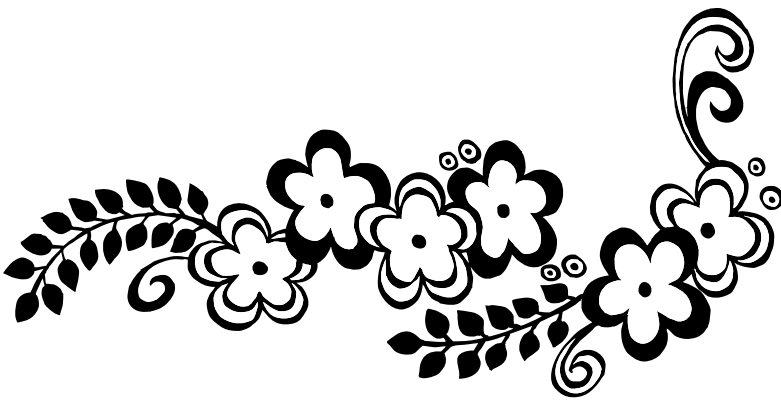
कोमल किशोर ढोरे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष



जीवनाचे सार

जन्माला आला आहेस
थोडं जगुन बघ
जीवनात दुःख खूप आहे
थोडं सोसून बघ
चिमूटभर दुःखाने कोसळू नकोस
दुःखाचे पहाड चढून बघ
यशाची चव चाखून बघ
अपयश येतं निरखून बघ
डाव मांडण सोपं असतं
थोडं खेळून बघ
घरटं बांधण सोपं असतं
थोडी मेहनत करुन बघ
जगणं कठीण मरणं सोप असतं
दोन्हितल्या वेदना झेलून बघ
जगणं मरणं एक कोड असतं
जाता-जाता एवढं सोडवून बघ.

निकीता वर्धमान तापसी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष



कार्याचे यश हे साधनांवर नव्हे तर हिंमतीवर अवलंबून असते.

आठवणी...

काही व्यक्ती किती गोड असतात ना...
जवळ नसुनही नेहमी सोबत असतात
सुख देऊन जातात...
दुःख घेऊन जातात...

त्यांनी मिठी मारल्यावर जग पायाखाली वाटत
त्यांची आठवण येताच मनात बरच काही दाटत
वाटत की सर्व सोडून त्यांच्या जवळ जावं...
त्यांना डोळ्यात भरून पहावं
पण मनाला वाटत तस होत नसतं...
कारण...

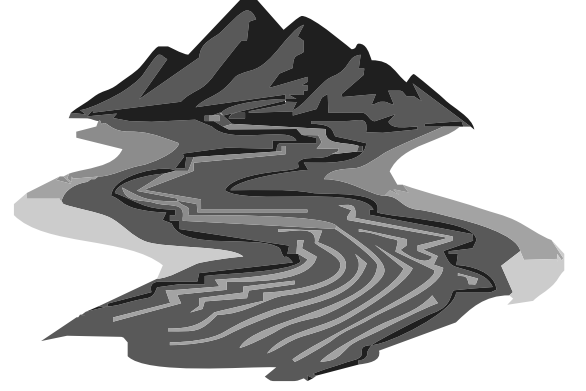
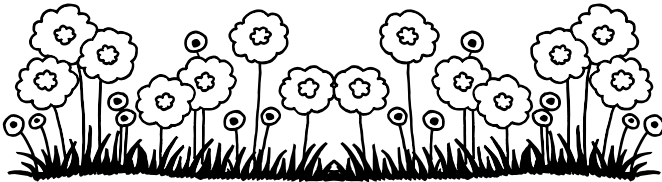
ते इतके दूर गेलेले असतात की
त्यांना भेटण अशक्य असत

जेव्हा मनात त्यांच्या आठवणींच्या येता पुर
तेव्हा अश्रुंनी दाटून येतो उर...
अशा वेळी किती असह्य वाटत...

मनाला फार वेदना होतात, जस आकाश फाटत
ज्या वेळी आपल्याकडे सर्व काही असते
तरीही कुणाची तरी कमी भासते
त्यावेळी जीव होतो अगदी बावरा...
ऐकत नाही मन कितीही सावरा

म्हणून अशा व्यक्तींना नेहमी हृदयात जपायच असतं
त्यांच्या आठवणींनी जीवन फुलवायच असत...
अशा व्यक्तींना नेहमी हृदया जपायच असत...
हृदयात जपायच असत...

नेहा संजय ढोरे
बी.ए. - प्रथम वर्ष



आपली मोर्ण

ना बोलते ना हसते
एकट्यांसाठी क्षणभराची साथी बनते
मिळेल ते घेऊन आणि असेल ते देऊन
सदैव आपली वाहत राहते
कधी उद्रेक करते
कधी मोकळीच बसते
कधी खळखळ हसते
तर कधी अचानकच कोसळते
ना दुर्गंधीची तक्रार
ना देण्याचा अधिकार गाजवते
वाट अडविली तिची तरी
आपली दुसरी वाट शोधून जाते
सदैव कार्यरत राहण्याचा बोध देते
फक्त घेण्याऐवजी थोडे देण्याचाही
संदेश खरा देऊन जाते.

संध्या रामकरन प्रजापति
बी.ए. - तृतीय वर्ष

लहान मुलांमध्ये आढळणारी चौकसवृत्ती म्हणजे ज्ञानाची भूक होय.

गरीबीच चित्र (वन्हाडी भाषा)

गरीबीच चित्र सखे माया डोयात पाय
काय सांगु तुले कसे दिवस काढत होती माई माय
तुरीच्या दाईले ढोमनभर पाणी करत होती माई माय
जवारीच्या पिठात अंबाडीची भाजी चुरत होती माई माय
गव्हाच्या दयनात तांदुळाच्या चूरा दयत होती माई माय
काय सांगु सखे तुले कसे दिवस काढत होती माई माय
हायपाय दुखले की पायाले चिंध्या बांधत होती माई माय
दुखल्या कपायावर लसनाच्या पाकळ्या चोयत होती माई माय
आल्या गेल्याच हसल्या मुखान स्वागत करत होती माई माय
गरीबीवर अस झाकन आमच्या ठेवत होती माई माय
काय सांगु सखे तुले कसे दिवस काढत होती...
संसारात गरीबीसंग भांडत होती माई माय
तिच्या वाट्याच जेवनही आम्हाले वाडत होती माई माय
उरल सुरल शिळ तुकड खात होती माई माय
जिवन तिच जाळून आमच सुख पायत होती माई माय
काय सांगु सखे तुले कसे दिवस काढत होती...
मोडली पण आयुष्यात कुणापुढे झुकली नाही माई माय
दिव्या सारखी अखंड जळत रायली माई माय
अशी आहे सुवार्ताची कनखर माय
गरीबीच चित्र सखे माया डोयात पाय
काय सांगु सखे तुले कसे दिवस काढत होती माई माय.



मैत्री

निराशेचा अंत असते मैत्री
आशेचा एक किरण असते मैत्री
दोन मनांना जोडणारी रेशीमगाठ असते मैत्री
एकाकी जीवनात प्रेरणा असते मैत्री
हृदयाच्या पाना पानास एक नाव असते मैत्री
असंख्य पानातून साकारलेली एक कला असते मैत्री
चंद्राहुनही शितल असते मैत्री
सुर्याहुनी प्रखर असते मैत्री
पण सदैव जपाव या नात्याला
कारण काचाहूनही नाजूक असते मैत्री.

मनिषा गो. चक्रदेवे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. - द्वितीय वर्ष



इतरांची वाट पहायची सवय ठेवाल, तर तुम्ही मागे पडाल.

अर्धांगिनी



बाप

मुलीच्या लग्नापर्यंत कडक वाटणारा बाप लग्नानंतर इतका हळवा कसा होतो ? मुलीसाठी जितक करता येईल तितकं, जिवाच रान करत राहतो.

घरात असताना जास्त न बोलणारा लग्नानंतर फोन मॅसेज करून चौकशी करत राहतो आधी डोळे वटारून पाहणारा, आता डोळे भरून निरोप देतो मुलीच्या लग्नानंतर बाप इतका हळवा कसा होतो? कधी कोणाला काही न बोलणारा स्वतःवर अन्याय झाला तर वेळ मारून नेणारा, मुलीसाठी मात्र जगाविरुद्ध उभा राहतो मुलीच्या लग्नानंतर बाप इतका हळवा कसा होतो? पाहुणे आले तर फारसा फरक न पडणारा जाव्याची मात्र खुप वाट पाहतो, मुलीची पहिल्यापेक्षा जास्त काळजी घेतो मुलीच्या लग्नानंतर बाप इतका हळवा कसा होतो ?

प्रियंका हितेन्द्र चौव्हाण
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

घर होत तुझ पण त्यावरील छप्पर मी होती
मार्ग होता तुझा पण मार्गदाता मी होती.
कुळ होत तुझ पण वंश वाढवणारी मी होती
संतान होती तुझी पण त्यांना घडवणारी मी होती.
मृग होता तु पण तुझी करस्तुरी मी होती
कपाळ होत तुझच पण त्यावरील ललाटरेषा मी होती.
सागरी शिंपला होतास तु पण
त्यामधील मोती मी होती
उभा तरु होता तु तुझी छाया मी होती
दिन होता तु पण तुझी रजिनी मी होती.
वादळ होतास तु पण तुला सामावून
घेणारी भूमी मी होती
या इहलोकीचा स्वर्ग होतास तु
त्या स्वर्गातील तुझ्या वाटेची वाटसरु मी होती.
आयुष्य होत तुझ पण तुझी अर्धांगिनी मी होती
शेवटी घर होत दोघांच पण सावरणारी मात्र मीच होती
सावरणारी मात्र मीच होती.

सुवार्ता मधूकर खरात
बी.ए. - द्वितीय वर्ष



कुठलेही काम हलके नसते, ते नाकारणारा माणूस हलका असतो.

रांगोळी

प्रत्येकाच्या घराला असते आंगण
आंगणात असते तुळशी नि भरपूर झाड
सर्वांच आहे आपापल महत्त्व खास
पण बिचारी रांगोळी आंगणातील कोपऱ्यात हळूच हसते खास
तिला नाही गर्व स्वतःच्या अस्तित्वाचा
परंतु ती नसली की आंगणाच अस्तित्त्व होते खल्लास
दररोज सकाळी सगळ्यांच्या आधी ती आंगणात वसते
ऊन असो, थंडी असो की असो वारा
सगळ्या ऋतुमध्ये ती हसते
घरात येणाऱ्या प्रत्येकाचे करते स्वागत ती सर्वप्रथम
प्रत्येकजण आंगणातील रांगोळी पाहूनच घरात करतात आगमणम्
कोणी तिला पुसल्याशिवाय होत नाही ती अधीर
खरच रांगोळी ताई किती हो तुम्ही खंबीर.

जान्हवी अ. मांडळे
बी.ए. - द्वितीय वर्ष



वेळेचे महत्व

एका वर्षाचे महत्व काय असते हे
परीक्षेत नापास झालेल्या विद्यार्थ्यांना विचारा ।

एका महिन्याचे महत्व काय असते
हे बाळाला जन्म देणाऱ्या आईला विचारा ।

एका दिवसाचे महत्व काय असते
हे साप्ताहिकाच्या संपादकाला विचारा ।

एका तासाचे महत्व काय असते
हे भेटीसाठी प्रतीक्षा करणाऱ्या प्रेमीकांना विचारा ।

एका मिनीटाचे महत्व काय असते
हे गाडी चुकलेल्या व्यक्तीला विचारा ।

एका सेकंदाचे महत्व काय असते
हे अपघातातून वाचलेल्या व्यक्तीला विचारा ।

एका मिली सेकंदाचे महत्व काय असते
हे ऑलिम्पिकमध्ये दुसऱ्या आलेल्या धावपटूला विचारा ।

शारदा बाळकृष्ण साठे
एम.कॉम. - प्रथम वर्ष



ज्याच्या जवळ उमेद आहे तो कधीही हरू शकत नाही.

जगाच काय ते काहीही म्हणतील...

तुम्ही हसलासात तर ते जळतील,
तुम्ही रडलातर ते हसतील.

काही नवं केल तर पाप म्हणतील,
जुन्यात अडकून राहीलातर श्राप म्हणतील.

गमावल तर दरिद्री म्हणतील,
कमावल तर माज म्हणतील.

पुढे निघाला तर मागे ओढतील,
मागे राहिला तर तुडवतील.

तुम्ही हात दिला तर साथी म्हणतील,
तुम्ही तुमचा विचार केला तर स्वार्थी म्हणतील.

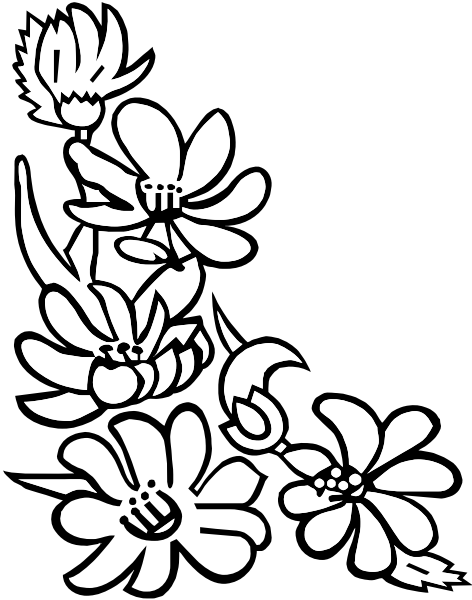
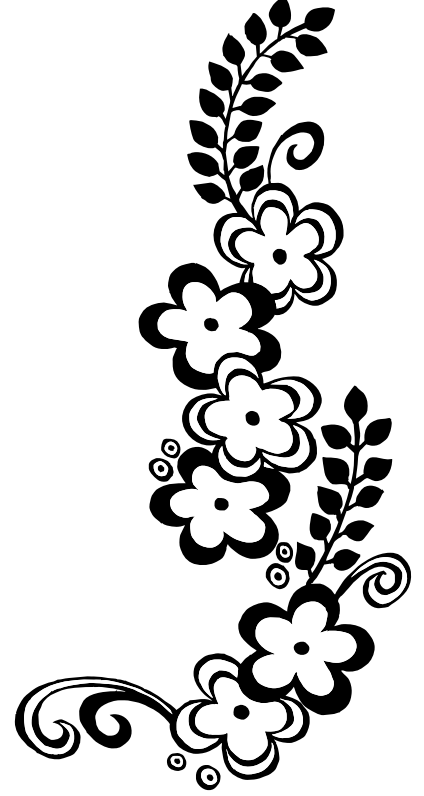
कौतुक केलं तर वाह म्हणतील,
उणीव दाखवली तर जा म्हणतील.

काही केल तर.... काय केल ?? म्हणतील,
नाही केल तर ... काय केल ?? म्हणतील.

म्हणूनच...

तुम्ही जगा तुम्हाला हवं तस
जगाच काय ? ते काहीही म्हणतील.

पुजा शंकर गिरी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष



मैत्री

आहात तुम्ही सावरायला म्हणून पडायला आवडते,
आहात तुम्ही हसवायला म्हणून रडायला आवडते,
आहात तुम्ही समजावयला म्हणून चुकायला आवडते,
माझ्या आयुष्यात आहेत तुमच्यासारखी मैत्री
म्हणून मला जगायला आवडते.

पुजा शंकर. गिरी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

स्त्री चे हृदय हे जगातील सर्व तत्वज्ञानाचे माहेरघर आहे. - श्रीमती रुझवेल्ट

हिंदी विभाग

नारी एक शक्ति

मैंने सुना है, नारी का मन बड़ा चंचल होता है। नारी दयालु, शांत और सुंदर होती है। लेकिन हमारी संस्कृति ने नारी को बंधन में रखा है। जैसे नारी को घर के सारे काम करने पड़ते हैं। उसके कपड़े साधे, उसका रहन-सहन एकदम सीधा होना चाहिए। ऐसी सबकी अपेक्षा होती है। नारी के स्वभाव की दुर्बलता की वजह से वह अपनी आवाज नहीं उठा पाती। वह एक सादा नियम भी नहीं समझ सकती कि दुनिया में रहनेवाले सारे प्राणी, नर-नारी सब एक दूसरों पर निर्भर होते हैं। फिर यह भेदभाव क्यों ?

लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल रही हैं। नर को अपनी शक्ति का परिचय दिलाने और अपनी प्रगति का प्रयत्न वह कर रही है। आज की नारी अपने हक, अधिकारों के प्रति काफी सजग हुई है। नारी ने साबित किया है कि वह भी कुछ कम नहीं, जो नर कर सकते हैं उनसे कई गुना बेहतर वह भी कर सकती है। जीवन के अनेक क्षेत्रों में वह आगे बढ़ रही है।

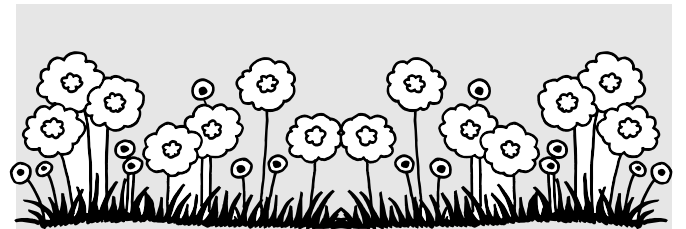
नारी का स्वभाव, उसकी सुंदरता अपने आप में ही एक अद्भुत शक्ति है। इस सृष्टि में गौर से देखा जाए तो अनेक प्राणियों में नारी ज्यादा सुंदर होती है। परंतु ईश्वर ने आदमियों में ऐसा नहीं किया। उसने नारी को सुंदर बनाया क्यों ? क्यों कि शायद सहिष्णुता, मितभाषिता, सहनशिलता जैसे आत्मिक गुणों का भरमार है। इन्हीं गुणों के कारण वह संसार में सम्माननीय है।

नारी संसार में पहले 'माँ' बनकर आई, वह हमें जन्म देकर, हमारा लालन-पालन करती है। हमें बड़ा करने के लिए बहुत कष्ट उठाती है।

हम पर अच्छे संस्कार हो इसका भी खयाल रखती है। अगर दुनिया में नारी नहीं होती तो हम भी नहीं होते। हम भी सफल इन्सान नहीं बनते। चाहे वह हमारी बहन हो या बेटी वह प्यार लेकर ही हमारी जिंदगी में आती है। अपनी चंचलता का अनुभव पत्नी बनती है तब वह अपना स्वाभिमान, अपनी शक्ति और साथ ही अपने प्यार का परिचय देती है। अपने बच्चों के लिए आदर्श माता बनती है, काम घर का हो या ऑफिस का बड़ी लगन से, पूरी कार्यशक्ति से उसे वह पूर्ण करती है। वह एक पतिव्रता भी है, वह किसी को धोखा देना नहीं चाहती। वह कभी-कभी हमारे जीवन में अलग-अलग रूप लेकर आती है। कभी शिक्षिका, कभी परिचारिका, कभी दोस्त। इन विविध रूपों में उसके स्वभाव के अनेक पहलुओं का परिचय हमें होता है। परंतु उसका हर रूप हमारा मन मोह लेता है।

स्त्रियों की संख्या कम होती जा रही है। यह बात हमारे देश, हमारी संस्कृति के लिए हानिकारक है। स्त्री ही तो वह शक्ति है जो संस्कृति का प्रमुख आधार है। उसकी रक्षक है। संसार में समानता लाने का वह प्रयास करती है। अतः मुझे लगता है कि 'नारी' एक अद्भुत शक्ति है।

साक्षी अनिल बजाज
बी.कॉम. - प्रथम वर्ष



संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है। असंभव से भी आगे निकल जाना... - स्वामी विवेकानंद

कोरोना की महामारी पशु, पक्षी को मिली अपनी जिंदगानी

देश में कोरोना महामारी के चलते ६ महिने से अधिक समय लॉकडाऊन चल रहा है। जिसकी वजह से सभी कामकाज ठप पड़े हैं ना तो कारखाने खुले हैं और ना ही गाड़ियों की आवाजाही है लेकिन इन सबके बीच एक अच्छी खबर ये है की इस लॉकडाऊन का पर्यावरण पर काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है लॉकडाऊन के चलते जल, वायु और ध्वनि प्रदुषण में भारी कमी आई है।

जिस सड़क पे इंसान, कार, सायकल, स्कूटर, आदी दिखाई देते थे आज उस सड़क पर इंसान की परछाई भी दिखाई नहीं दे रही। क्यो की कोरोना जैसी महामारी ने सबके जीवन का अंदाज ही बदल दिया है। जो इंसान २४ घंटे तक अपने-अपने काम काज में व्यस्त रहता था आज वह अपने घर की चार दिवारों में कैद हो के बैठा है। जिस इंसान को लगता था कि बस दुनिया और सड़को पर उसका हक है आज उसे पता चल गया है की इन सड़को पे उससे कहीं जादा किसी और का हक है।

इस धरती पे सबसे सुन्दर अगर कुछ हो तो वह है पर्यावरण कृतु जिसे हम एक सुंदर चित्र भी बना सकते हैं इस धरती पर पर्यावरण जैसी सुंदरता किसी में नहीं। इस पर्यावरण को अगर किसी ने बदला होगा तो वह सिर्फ और सिर्फ कोरोना ने कहने को ये एक महामारी है। लेकिन ... जीवन में हर एक बात का अंदाज इस महामारी से ही बदला है।

जिस सड़क पे इंसान दिखाई देते थे आज उस सड़क पे पशु - पक्षी दिखाई देते हैं। जैसे

प्रतिता होता है ये शहर, ये धरती, ये सड़क हमारी न होके पशु पक्षी की ही है। जिस सड़क पे हम आजादी से घुमते थे आज इस सड़को पे इस सब का राज है। ईश्वर ने ये धरती सभी के लिये बनाई है लेकिन इस धरती पर हम अपना ही हक दिखाते थे लेकिन ये वक्त और ये सोच सिर्फ और सिर्फ कोरोना ने ही बदली है। भी इस महामारी से सभी पीड़ीत है। फिर भी इस विकट स्थिती में हमें इस महामारी ने अच्छा सबक सिकलाया।

जिन नदियों में चारों तरफ सिर्फ कुड़ा कचरा दिखाई देता था आज उन नदियों में कांच के समान बहता सुंदर नीर दिखता है। सड़को पे जिस तरह २४ घंटे गाड़ीया और उनका धुंआ दिखाई देता था आज उस सड़क पे ऑक्सिजन मिल रहा है। सच में इस कोरोना के विकट स्थिती में हमने इस धरती को बदलते देखा अपने जीवन के साथ पर्यावरण का भी कितना ख्याल रखना चाहिये ये सिर्फ आज हमें इस महामारी ने ही सिखाया।

कोरोना की महामारी
पशु - पक्षी को मिली अपनी जिंदगानी

दिव्या राजेश चव्हाण

बारिश

यह बारीश भी कहर लाती है...
एक और हिज़...
एक और वस्त की बदली छाती है...
बीते लम्हों की भी याद दिलाती...
पुराने जख्मों को सुलगाती है ...
यह बारिश कहाँ रोज आती है...
मेरे लब्जों को रफतार दे जाती है।

गायत्री थोरात

जीवन में मन की शांति का मूल्य संपत्ति और स्वास्थ्य से कहीं ज्यादा होता है। - डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

चार सिंपीयों का मूल्य...



एक ५ वर्ष का लडका अपनी ३ वर्ष की छोटी बहन के साथ बाजार से जा रहा था। अचानक से उसे लगा की, उसकी बहन पिछे रह गयी है। वह रुका, पिछे मुडकर देखा तो जाना कि, उसकी बहन एक खिलौने के दुकान के सामने खडी कोई चीज निहार रही है। लडका पिछे आता है और बहन से पुछता है, 'कुछ चाहिये तुम्हे?' लडकी एक गुड्रिया की तरफ उंगली उठाकर दिखाती है। बहन बहुत खुश हो गयी है। दुकान दार यह सब देख रहा था, बच्चे का व्यवहार देखकर आश्चर्यचकीत भी हुआ... अब वह बच्चा बहन के साथ काउंटर पर आया और दुकानदार से पुछा, 'कितनी किमत है इस गुड्रिया की?'

दुकानदार एक शांत व्यक्ती है, उसने जीवन के कई उतार चढाव देखे होते है। उन्होने बडे प्यार और अपनत्व से बच्चे से पुछा, 'बताओ बेटे, आप क्या दे सकते हो?' बच्चा अपनी जेब से वो सारी सिंपे बाहर निकालकर दुकानदार को देता है जो उसने थोडी देर पहले बहन के साथ समुंदर किनारे से चुन चुन लायी थी।

दुकानदार वो सब लेके युं गिनता है जैसे पैसे गिन रहा हो। सिंपे गिनकर वो बच्चे की तरफ देखने लगा तो बच्चा बोला, 'कुछ कम है क्या?'

दुकानदार : 'नही नही, ये तो इस गुड्रिया की किमत से ज्यादा है, ज्यादा मै वापिस देता हूं' यह कहकर उसने ४ सिंपे रख ली और बाकी की बच्चे को वापिस दे दी।

बच्चा बडी खुशी से वो सिंपे जेब मे रखकर बहन को साथ लेकर चला गया।

यह सब उस दुकान का नौकर देख रहा था, उसने आश्चर्य से मालिक से पुछा, 'मालिक ! इतनी महंगी गुड्रिया आपने केवल ४ सिंपों के बदले मे दे दी?'

दुकानदार हंसते हुए बोला, 'हमारे लिये ये केवल सिंप है पर उस ६ साल के बच्चे के लिए अतिशय मुल्यवान है। और अब इस उम्र मे वो नही जानता की पैसे क्या होते है?'

पर जब वह बडा होगा ना...

और जब उसे याद आयेगा कि उसने सिंपों के बदले बहन को गुड्रिया खरीदकर दी थी, तब उसे मेरी याद जरूर आयेगी, वह सोचेगा कि... 'यह विश्व अच्छे मनुष्यों से भरा हुआ है।'

यही बात उसके अंदर सकारात्मक दृष्टीकोन बढाने मे मदद करेगी और वो भी अच्छा इन्सान बनने के लिए प्रेरित होगा।

संध्या रामकरन प्रजापति
बी.ए. (भाग ३)

आपकी अच्छाई आपके मार्ग में, बाधक है। इसलिए आंखों को क्रोध में लाल होने दिजिए।
अन्याय का मजबूती से सामना किजिए। - सरदार पटेल

अपनी तुलना दूसरो से नहीं करना चाहिए...

एक बार की बात है किसी जंगल में एक कौवा रहता था, वो बहुत ही खुश था, क्यो कि उसकी ज्यादा इच्छाये नहीं थी व अपनी जिंदगी से संतुष्ट था। लेकिन एक बार उसने जंगल में किसी हंस को देख लिया और उसे देखते ही सोचने लगा कि ये प्राणी कितना सुन्दर है, ऐसा प्राणी तो मैंने पहले कभी नहीं देखा, इतना साफ और सफेद इतना सुन्दर, इसलिए यह प्राणी बहुत ही खुश रहता है। इस पर तोते ने कहा, हाँ मैं तब तक खुश था जब तक मैंने मोर को नहीं देखा था। मेरे पास वो दो ही रंग लेकिन मोर के शरीर पर तो कई तरह के रंग हैं।

अब कौवे ने सोचा सबसे ज्यादा खुश कौन है। यह तो मैं पता करके ही रहूंगा इसलिए उस मोर से मिलता ही पड़ेगा। कौवे ने मोर को जंगल में ढूँढा लेकिन उसे पूरे जंगल में एक भी नहीं मिला और मोर ढूँढते ढूँढते व चिड़ीयाघर में पहुंच गया, तो देखा मोर को देखने बहुत से लोग आए हुए हैं और उसके आसपास अच्छी खासी भीड़ है। सब लोगो के जाने के बाद कौवे ने मोर से पुछा पुरी दुनिया में सबसे सुन्दर प्राणी तुम हो और रंगबिरंगी हो तुम्हारे साथ लोग फोटो खिंच रहे थे तुम्हें तो बहुत अच्छा लगता होगा। इस पर मोर बहुत उदास होते हुए कहाँ भाई अगर सुन्दर हूँ तो भी क्या फर्क पडता है। मुझे चिड़ीयाघर में कैद करके रखा है। मुझे तो मेरे मर्जी से संतुष्टी से जंगल में खुश रहना है। और मुझे आजाद होना है। कौवा यह सुनकर हैरान हो गया, की जंगल का सबसे सुन्दर प्राणी होने के बाद वह सुखी नहीं है। इसलिये दूसरों के साथ अपनी तुलना कभी नहीं

करनी चाहिए। बल्की अपने अंदर के गुणों को और अपने खुशी को सभी के साथ मिलजुलकर संतुष्टी के साथ बाटना चाहिए।

प्रिया शिवप्रकाश मिश्रा
बी.ए. (भाग ३)

किसी विद्यार्थी की सबसे जरूरी एवम् महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि प्रश्न पूछना।

इसलिए विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



सज्जनों को क्रोध जल पर खिंची गई रेखा के समान है, जो शीघ्र ही विलुप्त हो जाता है। - रामकृष्ण परमहंस

प्राणीयों की भावना

सभी प्राणी लगभग बहुत भावुक रहते हैं। उन में से अधिक भावुक कुत्ता है। अगर आप उसे दो तीन दिन खाना खिलायेंगे तो वह कई साल तक हमें नहीं भूलते। पर शर्म की बात है भी इंसान को खाना खिलाये तो वह एक दिन बाद भुल जाएगा।

प्राणी यो को प्रेम की भाषा समझती है पर वह दुःख की बात है की प्राणी उनकी भावना मुख से बोल नहीं पाते। वह हमारी भाषा अच्छे से समझ पाते है। प्राणी यों को आप अगर प्रेम दो तो वह आपसे दुगना प्यार करेगा।

एक आदमी एक कुत्ते को पालता था। वह उस कुत्ते को इंसान से भी ज्यादा प्रेम करता था। अगर आदमी को घर पर देर हो जाए तो कुत्ता उसके मालिक का इंतजार करता था। अगर मालिक कभी दुःखी हो और जब तक उसका मालिक खाना न खाए तब तक वह कुत्ता भी खाना नहीं खाता था।

पर एक शाम एसे आती है मानो किसी की नजर लगी हो, मालिक का घर को लौटते समय में अचानक एक दुर्घटना हो जाती है और मालिक की मौत हो जाती है। और कुत्ता मालिक के घर लौटने का इंतजार करता है। और कुछ देर बाद कुत्ता मालिक को ढूढने के लिये उसके ऑफिस के और जाने लगता है और रास्ते में उसको मालिक की दुर्घटना हुई कार नजर आती है। यह देखकर कुत्ता आस पास के लोगो की मदद मागने की कोशिश करता है पर बेजुबान होने की वजह से उसकी तकलीफ लोंगो के समझ में नहीं आती। और वह दुःखी होकर अपने मालिक के पास बैठ जाता है। और धीरे धीरे अपने मालिक की जिस

जगह पर दुर्घटना में मौत हुई उसी जगह पर वह बीना खाये पिये पडा रहतो है और कुछ दिनों के बाद उस कुत्ते की भी मौत हो जाती है।

इस कहानी से यह सिख मिलती है की कोई भी प्राणी से आप अगर दिलो जान से प्यार करो तो वह भी उतने दिलो जान से आपके प्रति अपनी भावना व्यक्त करता है।



**जीवन में
जबतक जीना है
तक तक सीखना है
अनुभव ही जीवन का
सर्वोत्तम शिक्षक है।**

- स्वामी विवेकानंद

कर्तव्य कभी आग और पानी की परवाह नहीं करता, कर्तव्य पालन ही चिन्त की शांति का मूलमंत्र है। - प्रेमचंद

पैसा

अगर मेरा नाम पैसा है कोई ना मेरे जैसा है...
 कोई कहता डॉलर मुझको
 कोई कहता पाउंड मुझको
 कोई कहता युरो मुझको
 कोई कहता रुपया है
 सच कहूँ ऐ दुनिया वालों
 कोई ना मेरे जैसा है
 मेरा नाम पैसा है...
 मैं हूँ तो जीवन मे बहार है
 वरना सब बेकार है
 मुझसे ही दुनिया का आकार है
 मुझसे ही हर सपना साकार है
 मेरा नाम पैसा है कोई ना मेरे जैसा है...



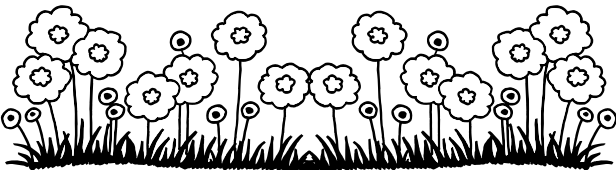
मे हु तो बेगाने भी अपने है,
 मैं नहीं तो अपने भी बेगाने है
 दुनिया के हर मोड़ पर नजर आते है मेरे ही दिवाने है
 मेरा नाम पैसा है, कोई ना मेरे जैसा है...
 मेरे कई रुप है, मेरे कई रंग है,
 मेरे लिये दुनियावाले छेडते कई जंग है
 मैं हूँ तो यह जमाना तेरे संग है,
 वरना यह तु जान ले, यह दुनिया तेरी बेरंग है ।

दिव्या राजेश चव्हाण

पल

हर पल को जी भर के जी ले
 कल मौका मिले ना मिले
 आज को जी भर के जीले
 मरते तो वो है जो मर मर के जीते है
 जीना उसी का जीना
 जो जिंदगी को दाता की
 सौगात समझ कर जीले
 जीना उसी का जीना जो
 जी भर के जीले
 हर ग़म को खुशी समझ कर पी ले ।

राखी दुर्गासिंह चौहान



वक्त

हर वक्त को ना आँख दिखा,
 वक्त तेरे बस में नहीं ।
 वक्त से हर कोई आत है,
 वक्त से हर कोई जाता है ।
 वक्त ही दाता है,
 वक्त ही विधाता है ।
 वक्त तेरे साथ है,
 तो दुनिया तेरे हाथ है ।
 वक्त को तू नमन कर,
 तेरा वक्त ही तेरी औकात है ।

ईशा पांडे

विचार से कर्म की उत्पत्ति होती है, कर्म से आदत की, आदत से चरित्र की,
 चरित्र से आपके प्रारब्ध की उत्पत्ति होती है । महात्मा बुध्द

उनके घर भी दीवाली है...

दीवाली का त्योहार धुम-धाम से मना के,
घर मे जगह-जगह दीये जला के
हर जगह रोशनी हमने फैलाई है
पर जरा उनके बारे मे भी सोचो
जो दीवाली की रात तक दीये बेचते रहे
क्यो की हमारे ही नहीं उनके घर भी दीवाली है

कीतना अच्छा लगता है जब मॉल मे
शॉपिंग करके पाच-दस हजार का बिल लेते हो
पर कभी रास्ते पे दीये बेचने वालो को
एक रुपया भी ज्यादा देते हो ?

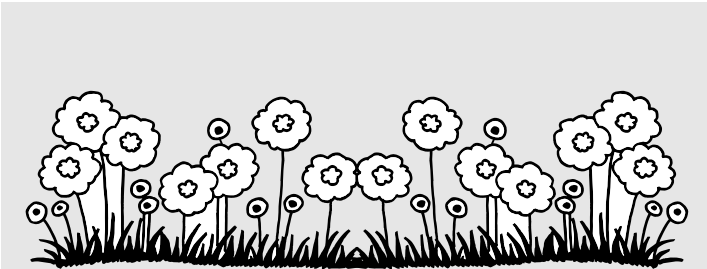
वाह ! खुदा क्या दुनिया बनाई है तुने भी...
तेरा एक बंदा आलीशान चैन की जिंदगी जीता है
और एक जिने के लिए दीन रात मरता है ।

दीय बेचकर जब रात को वो घर पोहचता है,
बच्चा उसका भी पटाखो के लिए रोता है
उसकी बच्ची कहती है भाई से
अरे पगले चल बाहर जो मजा पटाखे
फुटते हुए देखने मे है, वो पटाखे फोडने में कहा ।

बच्ची के शब्द उसकी आँखो में आसु लाते है
इसलिए साहब बे वजह कभी खरीद लिया करो
क्योकी हमारे ही नहीं उनके घर भी दीवाली है...

उनके घर भी दीवाली है..

नेहा संजय ठोरे
बी.ए. - प्रथम वर्ष



किसी के गुणों की तारीफ करने में समय जाया करने की बजाए उन्हें अपनाने की कोशिश करें। - कार्ल मार्क्स

अगर यहीं के हो !

अगर यहीं के हो,
तो इतना 'डर' कैसे,
मगर चोरी से घुसे हो,
तो ये तुम्हारा 'घर' कैसे ?
अगर तुम 'अमनपसंद' हो,
तो इतनी 'गदर' कैसे ?
जिसे खुद 'खाक' कर रहे हो,
वो तुम्हारा 'शहर' कैसे ?
कल तक सिर्फ कोहरा था,
मेरे शहर कि फ़िजा में,
आज नफरत का धुआं है,
तो सुहानी 'शहर' कैसे ?

इज़हार ए नाराजी करो,
संविधान की ज़द में,
मगर गली कूँचों में,
इतनी 'मज़हबी लहर' कैसे ?

सिर्फ लहजा सख्त होता,
तो हम चुप भी रह लेते,
मगर तुम्हारे लफ्जों और नारों में,
'जिहादी' जहर कैसे ?

सियासत से ख़िलाफत करो,
हमें कोई गिला नहीं है,
रियासत से दंगल होगी,
तो हम करें 'सबर' कैसे ?

अगर यहीं के हो,
तो इतना 'डर' कैसे,
मगर चोरी से घुसे हो,
तो ये तुम्हारा 'घर' कैसे ?

जय हिंद !

संध्या रामकरन प्रजापति
बी.ए. - तृतीय वर्ष

जरूरी तो नहीं...

हर किसी के लिये ये दिल धडके जरूरी तो नहीं...
लेकीन ये दिल धडकना छोड़ दे ये जरूरी तो नहीं...

हर ख्वाब मुकम्मल हो ये जरूरी तो नहीं
लेकीन ख्वाब देखना ही छोड़ दे ये जरूरी तो नहीं...

हर मुस्कान के पिछे कोई वजह हो जरूरी तो नहीं
लेकीन हम मुस्कुराना ही छोड़ दे ये जरूरी तो नहीं

हमारा हर कोई दोस्त हो ये जरूरी तो नहीं
लेकीन हम दोस्त करना छोड़ दे ये जरूरी तो नहीं ।

कोमल किशोर ठोरे
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

जिंदगी

समय चला, पर कैसे चला,
पता ही नहीं चला...

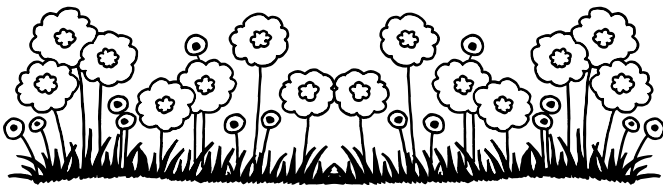
जिंदगी की आपाधापी में
कब निकली उम्र हमारी, पता ही नहीं चला...

कंधे पर चढ़ने वाले बच्चे,
कब कंधे तक आ गए, पता ही नहीं चला

किराये के घर से शुरू हुआ सफर अपना
कब अपने घर तक आ गए
पता ही नहीं चला...

साईकिल के पैडल मारते हुए
हांफते थे उस वक्त,
कब कारो में घुमने लगे है
पता ही नहीं चला...

कभी थे जिम्मेदारी हम माँ-बाप की
कब बच्चो के लिए हुए जिम्मेदार हम
पता ही नहीं चला...



गुरु बिना ज्ञान नहीं मिलता, गुरु का सदैव आदर करें ।

ऐसा कुछ करो...

बात ऐसी करो, कि दिल किसी का ना जले
काम ऐसा करो, किसी की भी ना खले ।

जिन्दगी ऐसी बनाओ, सदा नेकी की राह चले

इरादे इस तरह रखो,

कि हर अच्छे काम में कामयाबी मिले ।

इंसानी रिश्ते ऐसे बनाओ,
जहा बस प्यार ही प्यार पले ।

शारदा बाळकृष्ण साठे
एम.कॉम. - प्रथम वर्ष

जिन काले घने बालों पर इतराते थे कभी हम
कब सफेद होना शुरू हो गए
पता ही नहीं चला...

दर दर भटके नौकरी के खातिर
कब रिटायर्ड हो गए हम
समय का पता ही नहीं चला...

बच्चों के लिए कमाने, बचाने में इतने
मशगुल हुए हम, कब बच्चें हमसे हुए दूर
पता ही नहीं चला...

भरे पूरे परिवार से सीना चौड़ा रखते थे हम
अपने भाई-बहनों पर गुमान था
उन सब का साथ छुट गया
कब परिवार हम दो पर सिमट गया
पता ही नहीं चला...

अब सोच रहे थे अपने लिए भी कुछ करे
पर शरीर ने साथ देना बंद कर दिया
पता ही नहीं चला
जीवन की सच्चाई ।

संध्या रामकरण प्रजापति
बी.ए. - भाग ३

चाहा था क्या और, क्या तुने दियाँ...

ऐ जिंदगी अब तूही कुछ बता,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ॥

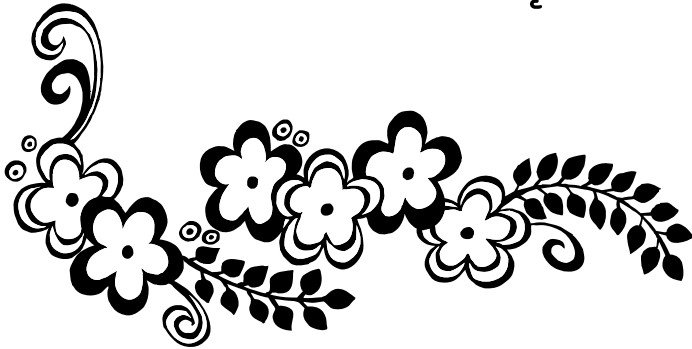
खुशियाँ पलभर, उम्रभर का तरसना,
कैसे करु शिकवा, कोई नहीं अपना,
बाजार मे खुशियाँ है सजी,
हमने निलाम खुद को कियाँ,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ॥

एक मुस्कान, दो बोल प्यारभरे,
कैसे क्याँ कहूँ, गुंगी बहरी दिवारे,
बूट ली खुशियाँ सारी, दर्द से दिल भर दियाँ,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ॥

एक हमराह जो, कुछ दूर साथ चले,
हर खुशी हर गम, मिलकर बाँट ले,
उम्र बाकी और भी थी,
साथी मगर छिन लियाँ,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ॥

कुछ न चाहिये, दिल तुझसे उब गयाँ,
दर्द के सहारे, जीना दिल ने सिख लियाँ,
अब न आँस रही, न कोई गम,
जिंदगी हमने तुझे माफ कियाँ,
जिंदगी हमने तुझे माफ कियाँ,
चाहा था क्या और, क्या तूने दियाँ ॥

निकीता वर्धमान तापसी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष



मेरी प्यारी दो गुड़ीयाँ...

मेरी दुनिया एक दुनिया है छोटी
एक मै, एक मेरी अँजल और एक परी मोटी...
सुलाया एक को गोद में एक कंधे पे सर रख सोयी है...

एक रुठी कभी है मुझसे
कभी एक गले लगाकर रोयी है
ना खवाईश है चांद-तारो की
ना मोती ना नजारो की
एक छोटासा पपी चाहिये मँडम को
जिन्हे वो कहानी सुनाये दूर नदियों की उंचे पहाडो की
ना कभी कहाँ कुछ ना गुस्सा हुआ कभी
लेकीन रुठे एक दिन इस के हमने भी ठान लिया था
ना रुठने देंगे, ना होगा रोने का कोई भी बहाना
बस हसते रहने और मुझे भुल ना जाना
क्या लिखु मै तुम्हपर मेरा प्यार शब्दों में जताऊँ कैसे...

मुझमें बसते हो तुम मै कहकर बताऊँ कैसे
बस एक चाहत है की
अगले जनम मै तुम अपना भाई मुझे चुनो
सिर्फ इस बार क्या हर जनम मै
तुम मेरी बहन बनो
क्यो की मेरी एक दुनियाँ एक दुनियाँ है छोटीसी
एक मै और मेरी अँजल और एक परी मोटीसी...

राखी चव्हाण

सच यही है की इतिहास में कभी विचार-विमर्श से कोई वास्तविक परिवर्तन हासिल नहीं हुआ है । - सुभाषचंद्र बोस

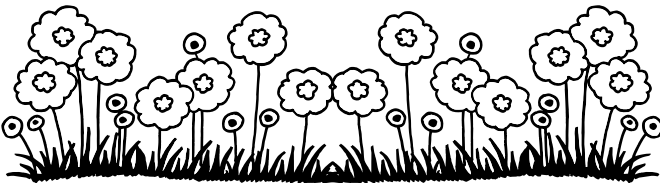
हकीकत

अगर आपको किसी की परवाह है,
तो जिते जी उसकी कदर करो
मरने के बाद नहीं...
अगर आप किसी को पसंद करते हो
तो उसकी वर्तमान में उपस्थित रहो
अतित में नहीं...
अगर आपको किसी पर विश्वास रखना हो
तो अपने लोगो पर रखो
आपके कान भरने वालो पर नहीं...
अगर आप किसी को अपना मानते हो
तो उसे प्रथम स्थान पर रखो पर्याय में नहीं...
किसी को प्रेम करते हो
तो उसकी कदर, इज्जत अभी करो
दिवार पर तसवीर लग जाने के बाद नहीं...

गायत्री कामळे
बी.ए. - अंतिम वर्ष

यारीयाँ

यार तो देखे बहुत, पर तुम से नहीं,
यारीयां तो देखी बहुत, पर हम सी नहीं ।
प्यार करके निभाना आसान है,
पर सच्ची दोस्ती करके नीभाना कठीन ।
चाहे हम इधर हो उधर,
दुआ है बस हम रहे संग-संग,
क्यो कि देखना है दुनिया के हर रंग संग-संग ।
यारी में तो ना कोई चिज मेरी होती है,
ना तेरी होती है, बस हम सब की होती है ।



अपने कार्य में दिलचस्पी लेकर काम करनेवाले को ही सुयश मिलता है ।

मुसिबते

मुसिबते आएगी तुझे डराने के लिए
मुश्किले आएगी तुझे रुलाने के लिए
बाधाएं आएगी तुझे झुकाने के लिए
पर तु कभी हारना मत, तु कभी डरना मत
मुश्किलो को लोगो को खुद दिखा देना
तुम वो मोमबत्ती नहीं जो
युही फुंक मारी और बुझ जाये
तुम वो मोमबत्ती हो, जो मँजिक कि तरह
कभी न बुझ पाये
तुम दिखा देना मुसिबतो को
बाधाओं को लोगो को
तुम मुस्करा सकते हो
तुम निखर सकते हो ।

गायत्री कामळे
बी.ए. - अंतिम वर्ष

यार तो देखे बहुत,
पर तुमसा ना मिला कोई कहीं ।
यारी में तो हर चिज मेरी, तेरी होती है
और तेरी मेरी होती है ।
और बस कहूँगी इतना ही कहते है ना
जिना यहा, मरना यहाँ, उसके सिवा जाना कहाँ
पर यार करते है प्यार यहाँ, मस्ती यहाँ
पर हमारी जैसी यारी कहाँ ।

पुजा शंकर गिरी
बी.कॉम. - तृतीय वर्ष

English Dept.

The Struggles of Our Life

Once upon a time a daughter complained to her father that her life was miserable and that she didn't know, how she was going to make it.

She was tired of fighting and struggling all the time. It seemed just as one problem was solved, another one soon followed.

Her father, a chef, took her to the kitchen. He filled three pots with water and placed each on a high fire.

Once the three pots began to boil, he placed potatoes in one pot, eggs in the second pot and ground coffee beans in third pot. He then let them sit and boil, without saying a word to his daughter.

The daughter, moaned and impatiently waited, wondering what he was doing. After twenty minutes he turned off the burners.

He took the potatoes out of the pot and placed them in a bowl. He pulled the eggs out and placed them in a bowl. He then ladled the coffee out and placed it in a cup.

Turning to her, he asked, "daughter, what do you see?"

"Potatoes, eggs and coffee," she hastily replied.

"Look closer" he said, "and touch the potatoes." she did and noted, that they were soft.

He then asked her to take an egg and break it. After pulling off the shell, she observed the hard - boiled egg. Finally he asked her to sip the coffee. It's rich aroma

brought a smile to her face.

"Father, what does this mean?" she asked.

He then explained that the potatoes, the eggs and coffee beans had each faced the same adversity - the boiling water. However, each one reacted differently. The potato went in strong hard and unrelenting, but in boiling water, it become soft and weak.

The eggs was fragile, with the thin, outer shell protecting its liquid interior until it was put in the boiling water. Then the inside of the egg become hard.

However, the ground coffee beans were unique. After they were exposed to the boiling water, they changed the water and created something new.

"Which one are you?" he asked his daughter.

"When adversity knocks on your door, how do you respond? Are you a potato, an egg, or a coffee bean?"

Moral of the story :-

In life, things happen around us, things happen to us, but the only thing that truly matters is how you choose to react to it and what you make out of it. Life is all about leaning, adopting and converting all the struggles that we experience into something positive.

Shivani G. Karale
B.Com. - II Year

"If at first the idea is not absurd, then there is no hope for it."

Respecting Relationships

We Indians are always being recognized for our manners and customs. We have the glorious past, energetic present and bright future ahead. But today in the dawn of the third decade of 21st century we are experiencing the globalized manner of being. We are fascinated by the western world and its customs and manners. Definitely, nothing is wrong with that. But I think while adapting with those manners we need to preserve our own. India is developing. Although today in the time of pandemic the whole world is in the danger of invisible opposed. Where the world is

appreciating the Indian manner of greetings 'namaste'. India is leading the charge of a warrior, helping other nations. It is our culture to help the needy. India is constantly conveying its readiness and consent of help for the world. It will strengthen India's international relationships. Though India is facing the consequence of pandemic, and power of our prestigious culture and custom which is enabling us to not only sustain ourselves but also accomplishing our duty for the entire humanity.

Rohini Jadhav
(B.A. III)

SUCCESS

“Confidence and Hard work
is the best medicine to kill
the disease called failure.

It will make you successful Person”

“Some of the brightest
minds in the country

Can be found on the last
benches of the classroom”

“Difficulties in your life do not
come to destroy you, but to help you
realize your hidden potential and power,

Let difficulties know
that you too are difficult”

“My message, especially to young people
is to have courage to think differently,
courage to invent,
to travel the unexplored path,

courage to discover the impossible
and to conquer the problems and succeed.

These are great qualities
that they must work towards.

This is my message to the young people.”

“Don't read success stories,
you will get only message...

“Read failure stories,

You will get some
ideas to get success...!!

Learning gives creativity,
Creativity leads to thinking,
thinking provides knowledge,
Knowledge makes you great.

Sandhya R. Prajapati
B.A. - III Year

“Reality is an illusion absent a very persistent one.”

Meditation for Concentration : How It Helps to Maintain a Healthy & Positive Lifestyle

In today's tough times of the pandemic it is very usual that we get stressed and anxious. It is obvious that such dangerous conditions and everything that is happening around the world because of it, may affect our mental and emotional health. Surely fears arise but it's necessary that we should not let them overwhelm us. It's really essential to be calm and deal with any situation with a peaceful and clear mind.

It's known everywhere how meditation is beneficial for us. It's origin can be traced back to around 5000 to 3500 BC. Meditation can be defined as 'a habitual process of training your mind to focus and redirect your thoughts.

Whether you're a student who's trying to focus on studies or a working adult who's trying to focus on your job, sometimes it might get difficult to concentrate regarding today's situation and everything that's going on. Many students can relate to not being able to concentrate on whatever they're studying and if there's no concentration it's almost impossible to grasp anything that you're reading and trying to understand or memorize. That happens because our mind can only imbibe something when it's relaxed, but sometimes we have way too many thoughts on our mind and it's then that we're unable to focus. So if we want to relax our mind what can help is meditation, as it improves concentration and attention. Some

studies showed that even a few weeks of meditation training helped people's focus and memory. It improves your cognitive skills. Not only that but it can also help in keeping a positive mood and outlook.

We often take care care of our physical health but sometimes forget that our mental health is just as important too. It means that we should make sure that we're not falling into depression and anxiety. To do that meditation is an easy and convenient way, as it helps in stress reduction, controls anxiety, helps in maintaining a positive mood thus improving depression. Not only that but the focus that we gain through regular meditation increases memory and mental clarity, which for adults, can also help age related memory loss and dementia.

Meditation doesn't need any special equipments or memberships but anyone can practice it anywhere. We just need to take some time out and do it and just like that we can improve our quality of life. How ? Well first of all because our mind gains peace and relaxation, stress reduces and we start being in a positive and happy mood and thus, our overall health gets better. So, if we want to make our life more joyful and peaceful why not meditate everyday and see how we get to discover just how amazing it's benefits are for us.

**Isha Pradhan
B.A. Final Year**

"If opportunity doesn't knock, build a door".

Values Taught in our Culture

India is a country rich in diversity and culture, the culture moulds the person and his well being. Culture is an essential part of a community not only to shape one's personality but to shape the community and how we live in it. Values taught in our culture are shaped by the community to maintain harmony among the society. Culture is basically a blueprint or a Basic framework which teaches us how to live and strive in the society. There are different types of people around us but isn't it amazing they all follow the same type of things, be it a rich or poor. The culture basically trains people to co-operate with each other and build unity among everyone.

Let take the most recent example, after the outbreak of the corona virus the government imposed self-lockdown, now self-lockdown is not essential to follow or has any compulsion but because of our values we decide to self-isolate ourselves to prevent the virus from spreading forward and also to be safe too. Now a lot of things are taught by our culture and community which we treat as norms and it's always in our sub-conscious mind and we follow those norms without questioning. Somewhere or another these norms help us as a person and shape the person we are.

But when and how these values were made? who made these? how it became so important for the society today? The

answers to all the questions is present in our religious texts. From Bhagwad Geeta to Ramayana or be it any other culture like Christianity which has Bible or Muslim which has Quran. No matter what the religion is you will notice that the teachings, the norms, the values taught are the same. These values which we learn Today have been inculcated by our ancestors, these were made and developed with the society as it was developed. Long time ago people strongly believed in God or they strongly feared the god, whatever it might be once anything was associated with god it became a norm or a compulsion, that might be the reason why we get maximum of the values from our religious texts. However nobody can deny the fact that these values develop us and make the society a better place to live.

**One best book is equal to
hundred good
friends but one good
friend is equal to a library.**

- Dr. APJ Abdul Kalam

Failure is the condiment that gives success its flavor.

Making Our City Clean & Green : Thoughts and Action Plan

“Members of a family will keep their house clean, but they will not be interested in the neighbor’s.”

- M.K. Gandhi

Earth is our mother and environment is a part of earth. So, it’s our duty to keep clean and green our Motherland. Clean India and Green India are the two sides of same coin. Both are important for environment. Modernizations and urbanization both are important for development of country but for the sake of modernization we neglect our environment. Increased urbanization has led to the deforestation. Clearing of the forest had resulted in the loss of trees which in turn increased pollution level of environment. From throwing out garbage on roads, cutting of trees, using of plastic and non-degradable garbage. crating water pollution, inadequate sanitation, open dumping of waste, loss of forest cover, we have always given least importance to make our city clean and green in our lives.

“The Clean India, Green India”

The Clean India Green India slogan states that if we try to keep our country clean, it will become green by cleaning our environment and surroundings then only we all will be able to get a good surrounding of greenery. The Father of Nation, Mahatma Gandhi rightly said, “Sanitation is more important than independence.”

“Cleanliness is Goldiness” is the mantra of Bapu. Swachh Bharat Abhiyan was launched by the honorable PM Narendra Modi on 2nd October 2014 to solve the problem of sanitation and waste management in India by ensuring hygiene across the country. As a success he received Global Goalkeeper Award for this mission given by Bill and Melinda Gates Foundation.

“Cleanliness becomes more important when godliness is unlikely.”

- P.J. O’Rourke

Thoughts and Action Plan :

Here we some tips to keep our surrounding clean and make it green. For making our city clean and green we should start from our home. All we have to do is to buy three dustbins and use then to dump our waste in it, every time. Using three bins instead of one helps to segregate the waste and make it easier to recycle them or turn into compost manure. Avoid the use of plastic. A recycled paper bag would be great. Use it to throw in little pieces of trash instead of always having to rush to the dustbin. People should strictly follow rules and instructions framed by the government about cleanliness. We should collect and separate out our food scrap before we head for the garbage. We should find a compost collection site in our area and take our scrap

“Luck is dividend of sweat. The more you sweat, the tackier you get.”

there weekly or just utilize it for our plant. It creates the greenery at a very low cost. We should avoid the use of non-biodegradable garbage.

Drainage system in the city make unclean to the are and also harmful for health. We should crate alternative for open drainage system in the city and make our city **plant city**. The setting of manufacturing industries has worsened the problem. **Proper management of industrial garbage** can reduce the problem of cleanliness.

Clearing of forest has resulted in the

loss of trees which in turn increased pollution level of the environment. Papers are made from trees. To make papers we have to cut the trees. **Ethical consumption of paper** and creating alternative for this by **adopting the electronic and digital system** will help to save paper and save trees. Promise yourself that you will **plant and grow** at least one free every year instead of cutting it.

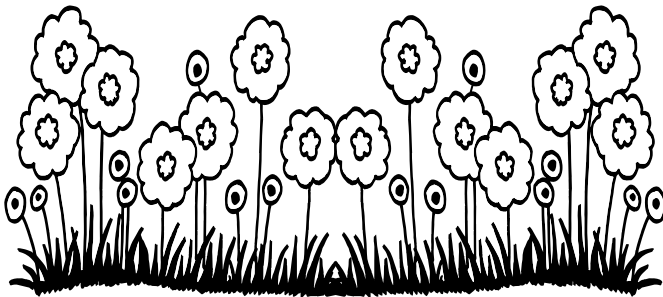
**“If you cut a tree, you kill a life
If you save a tree, you save a life
If you plant a tree, you plant a life”.**

Dr. A.P.J. Abdul Kalam

“Don’t take rest after your first victory because if you fail in second, more lips are waiting to say that your first victory was just luck.”

“Be more dedicated to making solid achievements than in running after swift but synthetic happiness.”

“All of us do not have equal talent. But, all of us have an equal opportunity to develop our talents.”



“Management is doing things right; leadership is doing the right things.”

LIFE and TIME are the world’s best teachers
LIFE teaches us to make good use of TIME
and TIME teaches us the value of LIFE

Dreams are not those which comes While we are sleeping, but dreams are those when you don’t sleep before fulfilling them.

Thinking is the capital,
Enterprises is the way, and
Hard work is the solution.”

Sandhya R. Prajapati
B.A. - III Year

Prosperous Indian Culture

Due to the pandemic called Covid-19 whole world is facing me serious situation. After getting some knowledge about this situation it's possible to be critical for economical growth but at other side this state of human behaviour getting beneficial for our environment and motherland. After knowing this I insisted to think that some days of this life style state making that much deference then, how life did our ancestors lived when they were totally attached to our culture.

To learn the greatness of our pristine culture, we must learn what is happened in this land for long time, what the people of this land did for and from a long time.

Our Indian culture is totally enriched in Medical Science, Arts, Spirituality, Heritage, Sculptures, Sages Etc.

If we talk about medical science the first surgery in world has been done by Sushruta in India.

This land also gave birth to great mathematicians and scientist like Aryabhata, Bhaskara and Ramanujan. Also our therapy of "Ayurveda" is well known for treatment by natural elements instead of drugs. For that we use herbs like Ashwagandha, Amla, Behda, Shatavari, Giloy etc. that found on our mother land.

Our Indian culture teaches our spirituality towards soul, dignity, spiritism

and towards sages taught us Art of living, Yog Abhyasa, Meditation etc. When others get depressed in calamity or helplessness worry and anxiety our mother "Bhagwad Gita" taught us "Mamaivansho Jivloke" that means I exist (God) in all living things also in you by this our culture brightens our life. It teaches to love and respect relation by showing the unconditional love between "Ram" and 'Bharata'.

But now a day our idea of success become purely economic. We are forgetting our culture, intelligence, wisdom, respect, beauty, love that we valued. We are just blindly following western culture, instead of knowing esthetics of our culture. Someone said "They don't know yoga but they know coco-cola" then how will you get that golden days back.

We will have to re-write our past when people were satisfied about life. We will have to learn Science behind our culture instead of tagging them and our rituals and customs as superstitious and meaningless and we should learn that 'Being modern does not meant to be western.' and be proud to be heritor of this prosperous culture. Because 'Duralabham Bharate Janma'. It is a rare opportunity to be born in India.

Nikita A. Navale
B.A. Part - I Year

"It's not whether you get knoehed down, it's whether you get up."

संस्कृत विभाग

‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ ‘मानवताः’

केनचित् कविना उक्तम् अयं निजो परोवेति गणना लघुतेचसाम् । उदारचरितानन्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

अस्मिन् जगति जनाः द्विविधाः सन्ति । येषां चेतः विशालं भवति ते कोऽपि-भेदः न मानयन्ति । किन्तु लघुचेतमानवा, भेदभावं कुर्वन्ति । यदि वयं सर्वे एकस्य परमात्मानः पुत्राः तर्हि भेदभावस्य किं कारणम् ? इदं मम् इदं परस्य इति भावना एवं दुःखाय, क्लेशाय भवति । सर्वेषां हृदये यदि एकत्व भावना स्यात् तर्हि सर्वे परस्परस्नेहे वसन्ति ।

यदि मनुष्य हृदये स्वार्थभावना भवति तर्हि सः श्रेष्ठकार्यं कर्तुं कदापि न शक्नोति । ये स्वार्थं परित्यज्य परोपकाराय स्वजीवनं यापयन्ति तेषां जीवनं सफलं भवति ।

यथापरिवारे माता सर्वेषु पुत्रेषु स्निह्यति तथा समाने अपि सर्वेषां प्रति स्नेहभावः आचरित्व्यः । उदारपुरुषाः सर्वं विश्वं स्वपरिवारवत् मानयन्ति । तेषां जीवनं नित्यं परहिताय, परकल्याणाय भवति । सर्वविश्व स्वकुटुम्बं मन्यमानाः ते कदापि उन्मार्गं सेविन न भवन्ति ।

अदिती देशपांडे

एम.ए. संस्कृत - द्वितीय वर्ष

‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ ‘विश्व कल्याण भावना’

यथा परिवारे माता सर्वेषु पुत्रेषु स्निह्यति तथा समाने अपि सर्वेषां प्रति स्नेहभावः आचरित्व्यः उदारपुरुषाः सर्वं विश्वं स्वपरिवारात् मानयन्ति । तेषां जीवनं नित्यं परहिताय, परकल्याणाय भवति । सर्वविश्वं स्वकुटुम्बं मन्यमानाः ते कदापि उन्मार्गं सेविन न भवन्ति । नितिमार्गं न परित्यजन्ति । ते स्वार्थं परित्यज्य सततं लोकसेवां कुर्वन्ति । परदुःखेन दुःखिताः भवन्ति । अस्माकं प्राचीनेषु ग्रन्थेषु एतदेव कथितं यत् संसारे भेदभावः न कर्तव्यः स्वार्थभावना विनाशं प्रति गच्छति ।

विश्वकल्याण भावनया मानवः गौरवं लभते । वसुधैव कुटुम्बकम् इति विशाल भवनाम् आश्रित्य अस्माकं जीवनं सफलं करणीयम् । सर्वं कल्याण भावना, सर्वहित कामना सुभाषितेषु अपि कथिता यत् ।

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तुं मा कश्चित् दुःखं भाग्भवेत् ॥

अतः उच्यते गौरवप्राप्त्यर्थं, सम्मान-प्राप्त्यर्थं स्वार्थभावना त्याज्या, तथा वसुधैव कुटुम्बकम् इयं भावना स्वीकरणीया ।

सायली सुदामे

एम.ए. संस्कृत - द्वितीय वर्ष

लक्ष्मी तनीति वितनांति च दिक्षुकीर्तिम् । किं किं म साधयति कल्पलतेच विद्या ॥

‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ ‘विश्व कुटुम्बकम्:’

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत् ।

प्राचीन भारतीयानां मनसि विश्वस्य सर्वेषां जनानां कृते कल्याण भावना आसीत् । अतः वसुधैव कुटुम्बकम् एव ते मन्यन्ते स्म ।

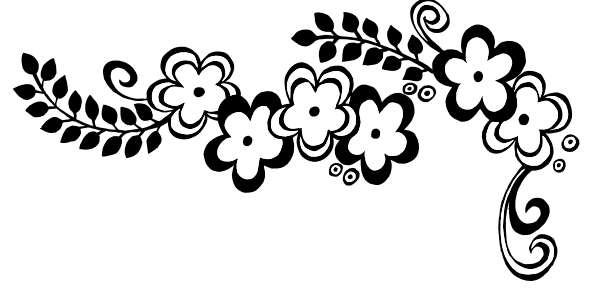
अद्यापि ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ इति भावना जगति इति सर्वेः मनुष्येः अंगीकर्तव्या ।

महाजनाः विश्वस्य सर्वेषां जनानां उन्नतये पुष्टये तुष्टये च चिन्तनं कुर्वन्ति । भारतीयाः महर्षयः महात्मानः या प्राचीनकाले स्वज्ञानैः द्वीपान्तगणि देशान्तराणि वा उपकृतवन्त इति सर्वेषां विदितमेव ।

भारतस्य महान् सम्राट् अशोकः विश्वजनानाम् अभयुदयाय भगवतः बुद्धस्य सत्य-अहिंसयोः प्राचारार्थं चीन-लंकादयेषु विदेशेषु एव कुटुम्बकम् मन्यन्ते ते जनाः साधनः सन्ति । सत्यं आचरन्ति ।

वृषाली जोशी

एम.ए. संस्कृत - द्वितीय वर्ष



‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ ‘स्वजीवनम्’

यथा अयं निजः परो वेति
गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

लघुचेताः जनाः सर्वदा स्वखुरस्य एव चिन्तनं कुर्वन्ति । किंतु उदारचरिताः जनाः सर्वे जनाः सुखिनः भवन्तु इति भावनया संयुक्ता भवन्ति । सर्वान् जनान् सुखीं कर्तुम् एव स्वजीवनस्य परम् उद्देश्यं स्वकर्तव्यं मन्यन्ते । तेभ्यः संपूर्णं वसुधा एवं तेषाम् कुटुम्बं सन्ति । यथा -

परोपकारायः फलन्ति वृक्षाः ।
परोपकारायः वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः ।
परोपकारार्थम् इदं शरीरम् ।

अतः वसुधायां स्थिता सर्वे जनाः मम सन्ति । एतद् विचारः यः करोति, तेभ्य एव वसुधैव कुटुम्बकम् ।

ललिता सावरकर

एम.ए. संस्कृत - द्वितीय वर्ष

गुणदोषो गृहन्निन्दुक्षेडाविवेश्वरः । शिरसा श्लाघते पूर्व परं कण्ठे वियच्छति ॥

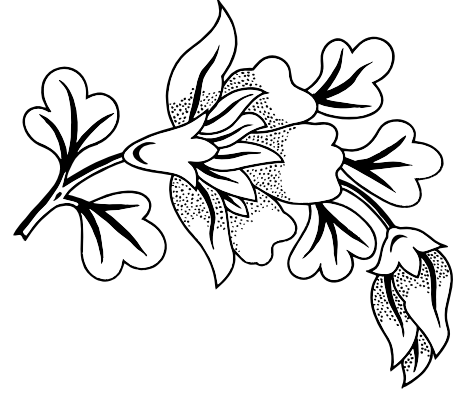
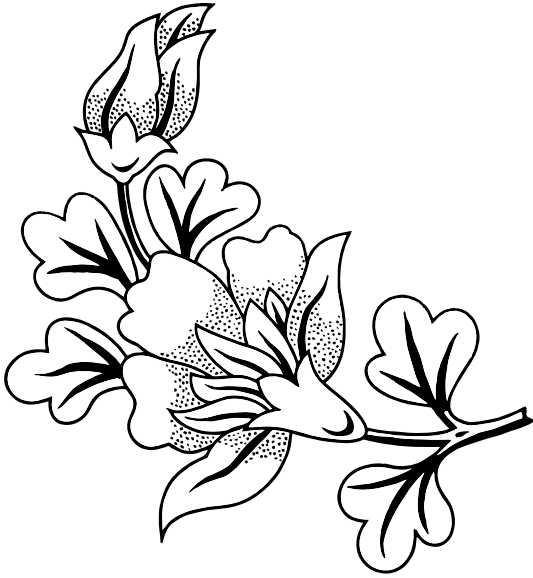
‘सर्वे देशाः वसुधैव कुटुम्बकम्’

ब्रिटन देशे यूवां हृदयं सन्तपण्य अस्ति ।
तत्कारणतः सर्वकारनीते : विरोधिन्वेत ते सघर्षम्
आरबधवन्तः सन्तिः । अल्पेषु अपि देशेषु एषा
स्थितिः भवितुम् अहीति इति प्राज्ञाः वदान्ति ।
एतादृशानां घटनानां प्रभावः अपि भारते दृश्येत एवं
।

वयं सुस्याः स्याम् चेत् वयं सृदुढा भवेय
चेच्च न पर्यान्नम् । अस्यप्रति वेशिनः राष्ट्रे
विद्यमानाः सर्वे देशाः च सुस्या शान्तिसम्पन्नाः च
भवेयुः । ता एव अस्यदीयं जीवंन निरातऽस्याण् ।
‘सर्वे देशाः सुखिनः भवन्तु’ इति प्रार्थना करणीया
अस्ति अघ । सा प्रार्थना तु न तेषां हितस्य
कायनया, अपि तु अस्मद्विक्ताकाड्या ।

एतदघं अनिवार्यम् ।

माधूरी ज. शुक्ला
एम.ए. संस्कृत - प्रथम वर्ष



‘वसुधैव कुटुम्बकम्’

वस्तुतः अयत्वे भारतस्य अर्थस्थितिः
तृप्तिकरी एव आसीत् (अथवा चिन्ता जनिका न
आसीत्) किन्तु अमेरिकी यार्थास्थितौ जातस्य
परिवर्तनस्य कारणतः भारते अन्यत्र च महान्तः
कल्लोलाः ।

गृहे स्त्रीशिशो जन्म यदि भवेत् तर्हि बढुत्र
विषादः प्रदर्श्यते - ‘अहो पुत्री जाता । इति । किन्तु
एरिस्य अपवाद रूपेण अस्ति ‘धरहर’ ग्रामः यश्व
बिहारराज्ये अस्ति । एतस्मिन् ग्राये यदि स्त्रीशिशुः
जायेत तर्हि ग्रहजनाः तन्निमित्ती कृत्ये ग्रामे
ससन्तोष सस्यारोपण इदानो प्रायः विशति
सहकाधिकानी (२०,०००) स्थानि सन्ति ।
एतद्विपरीत तया समीपस्था भासन्ते’ प्रतिस्त्रीशिशु
दश सस्थानि अरोपयानि इति ग्रामे परस्परा तस्य
कारणान् एव ग्राये हरित्समृद्धि आर्थिकत्वाभः च ।

ग्रामस्य एत्त वैशिष्ट्ये श्रुत्वा सन्तुष्ट
मुख्यमन्त्री नितिशुकमारवर्य एत ग्रामप्रति द्विवारम
आगतः आसीत् । ‘स्त्रीशिशु वयं लक्ष्मीस्वरुपां
मन्याम है ’ इति वदति ग्रामप्रमुखः मन्नासिडवर्य ।

जाई विद्यासागर
एम.ए. संस्कृत - प्रथम वर्ष

एकोदरसमुद्रना एक नक्षत्र जानका । न भवन्नि शीले यथा बदरिक्ष्टकाः ॥

‘सर्वे देशाः वसुधैव कुटुम्बकम्’ ‘मानवताः’

विश्वस्य सर्वेऽपि प्राणिनः एकस्यैव परमपिता परमेश्वरस्य पुत्राः सन्ति । एकमेव सर्वे परस्परे भातृत्वस्य बन्धनेन निगडिताः विद्यते । ते सर्वे एकस्य एव परिवारस्य सदस्याः इव वर्तन्ते । अतः एव सर्वेः सह स्वकुटुम्बि जनामिव व्यवहारं कर्तव्यम् ।

मानवेताः प्राणिनस्तु स्वकुटुम्बमेव संसारः इति मन्यन्ते । प्रविनिरेष मनुस्याणां सर्वेः आदिकालादेव प्रतीयते । एकमेव सागरे निमज्जनस्य आकाशात् पतनस्य भयमगणयित्वा तै दूरमपि भूप्रदेश मन्त्रिस्य का जलयानेन, वायुयानेन, लोहशक्त्या वा गत्वा वसति निर्माय च कुटुम्बीकृता वसुधा ।

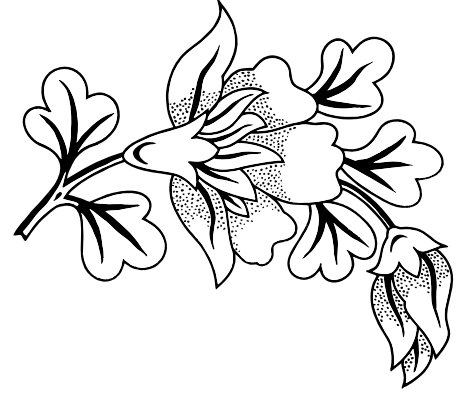
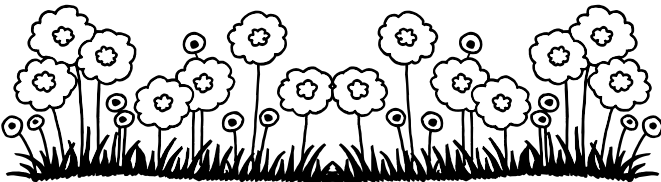
‘अथ कथयते

रविधन्द्रो धना वृक्षाः
नदी गावश्च सज्जनाः
एते परोपकाराय लोके
देवेन निर्मिताः ॥

यथाः निसर्गः अस्ति तथैव
अपि वसुधैव कुटुम्बकम्’
इति जगति इति कर्तव्या’।

रेश्मा भोकरे

एम.ए. संस्कृत - प्रथम वर्ष



‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ ‘मानवताः’

यथा बहवः भणयः सूत्रेण बध्दा सन्त मालारूपेण तिष्ठन्ति तथा देशा सन्ति अया स्वतःश्रानामी तेषा सम्बन्ध तु अस्ति एव । मान्या या सम्बन्धसूत्रम् एकमेव भवेता । किन्तु देशाना मध्ये भवन्ति सम्बन्धतन्तवः बहवः । छेत्वुम अशक्त्याः तन्तवः गुढगत्व्यः तन्तवः अनूध्य परिणामाः तन्तवः । अतः एवं एकस्थ अन्येषु बहुषु देशेषु प्रभाव जनायति ।

एषु दिनेषु जागतिकस्तरे शेर क्षेत्रे दृष्टव अस्थिरता, अनुपात-हास च अस्थ प्रत्यक्ष उदाहरणमा अमेरिका देशस्य काचित् अर्थनिति अस्ति । तत्र तरुडाः ये उत्पन्ना तस्य परिणामतः जगति एव अक्षेत्रे अस्थिरता दृष्टवा ।

यद्यपि ततस्थ देशस्य अर्थनितिः पार्थक्येन अस्ति । तथापि पर प्रभावनियन्त्रणे सा असमर्था भवति ।

रेणु प्रकाश जैस

एम.ए. संस्कृत - प्रथम वर्ष

उपसर्गेड-चक्रे च दुर्मिश्रेच भयावहे । असाधुजनसम्पर्के पलायनि स जीवनि ॥

Bridge / Pouch Courses: 2019-20 (Home Science Department)

The Home Science department has organized two Bridge / Pouch Courses during 2019-20, as continuation of sustainable activity of 2018-19. The courses are as under –

1. “Skill Empowerment for Self: Development, Reliance & Earning” 28th Feb – 13th March 2020

कौशल्य सक्षमते द्वारे
स्वविकास, स्वालंबन व स्वअर्थाजन

2. “Self Empowerment”. 6th - 14th March 2020

Two Interdisciplinary Pouch / Bridge courses were successfully organized . The main focus was on confidence boosting of the students through career / professional enrichment as well as their personal / physical / psychological empowerment. The primary objectives of **Skill Development, Self Empowerment and Career & Entrepreneurial Enhancement** were to be achieved.

1. Aims & Objectives:

- ▶ To enhance knowledge base & capabilities of students.
- ▶ To create awareness about various aspects of self reliance.
- ▶ To create felt need about self earning and financial management.
- ▶ To imbibe & enhance skills related to self development.
- ▶ Skill development culminating in gains in personal life and future career.
- ▶ To achieve long term empowerment through enhancement in knowledge & skills.



2. Responsibilities Allotted for the Course

- ▶ Dr. Anjali Rajwade, Professor and HOD Home Science, was the Organizer.
- ▶ Mr Pavan Mahajan, Asst Professor and Mrs. Seema Agarwal, Mrs. Zeenat Khan, Mrs. Vrunda Bhagat & Mrs Mukta Bagadiya, CHB Asst Professors, were Coordinators.

- ▶ Expert Guest Speakers were invited
- ▶ Collaboration was established with ABMMS, Akola.

3. Course Outcome

- ▶ Important & coherent program linked to fulfilment of Vision of the college.
- ▶ Boosted various skills and self

*One machine can do the work of fifty ordinary men.
No machine can do the work of one extraordinary man.*



empowerment of students.

- ▶ Self employability as well as career options got enhanced.
- ▶ Skill based enrichment in students' lives at Personal, Family, Social & National levels

4. Course Highlights

- ▶ E-Communication.
- ▶ E-Banking & Payments.
- ▶ Recycling & renovation of clothing.
- ▶ Laying of Dining Table.
- ▶ Table manners & etiquettes.
- ▶ Menu Planning.
- ▶ Pot Making & Uses.

- ▶ Household Kitchen Garden.
- ▶ House hold vermi - compost.
- ▶ Food Adulteration Detection.
- ▶ Women Empowerment.
- ▶ Self Grooming.
- ▶ Health Awareness & HB Checkup.
- ▶ Yoga, Meditation & Aerobics.

Both the courses were very successful in terms of response – 48 & 71 students in the courses respectively. The beneficiaries gave positive feedback & expressed desire for more such courses in the coming years.

(Dr Anjali Rajwade)

HOD Home Science



Humanity is acquiring all the right technology for all the wrong reasons.

Home Science Department – At a Glance

Home Science is Science of life in community. It has a wider horizon beyond the classes, for the benefit of masses. Educational reforms were implemented by modifying & upgrading the Teaching – Learning Practices including advanced ICT techniques, for effective curricular delivery & achieving target of optimum outcome. Students' participation in the field projects for educating & counseling their peers of other streams & the public was undertaken. Engagement of students in Research Activities in varied fields was organized, encouraged & guided through effective Student – Teacher rapport. The department has 08 Ph. D Research Students working under the able guidance of Research Supervisors.

Continuous Internal Evaluation process was implemented in an effective manner. Mentor – Mentee relationship practices worked effectively for Slow & Advanced Learners, yielding additional benefits in Student Progression. Meritorious positions in University Examinations were achieved by Komal P Murumkar : 2nd Merit & Musfera Teherim MS : 3rd merit in B.Sc. Home Science. Naina B Turkar, Aamrapali M Dongre & Kiran M Jade bagged 1st, 2nd & 3rd merit position respectively in M.Sc Human Development



while Aasma N Deshmukh was 2nd merit in M.Sc Food Science & Nutrition. The department is proud of the 6 Merit achievers and overall excellent results.

Workshops enhancing entrepreneurial skills, Communication skills & Empowerment among the students were organized. 'TRENDS Exhibition & Sale', imparting practical training & skill enhancement to more than 100 students was organized under Fashion Designing Course. “National Competition on Illustrations & Embroidery” was organized. Two value added interdisciplinary Bridge / Pouch Courses titled “Skill Empowerment for Self: Development, Reliance & Earning” and “Self Empowerment” were organized for holistic benefits.

Extension field activities with active involvement of students & teachers, in the fields of Community Health, NCDs like Diabetes Mellitus, Breast Cancer, Women's Health etc were undertaken for inculcating various skills & imparting Field Training to the students & creating awareness and behavioral change in members of public.



Technology is a word that describes something that doesn't work yet.



“PARAMEDICON” – a one day Workshop for Paramedical persons & public was organized in collaboration with IMA Akola & MODEM Organization, Akola. **Guest lectures, seminars, workshops, flipped classes, educational visit etc were appropriately planned and implemented in order to give boost to curriculum implementation and extracurricular skills.**

The department has Ten (10) Research Papers, published in Journals and an e – Book to its credit. Active participation by teachers was done in Faculty Development Programs & SWAYAM / MOOC Courses. The faculty has participated in 57 International, National & State level Conferences, Seminars & Webinars.

Dr. Anjali Rajwade, Professor and HOD, has been Nominated by SGBAU as Member Faculty, SGBAU and Member - Sub-Committee for preparing programme-wise “Scheme of Teaching & Learning and Examination & Evaluation. She was conferred 'Urjita Award' as Best Female Lecturer & had the honor of being a Resource Person in 4 National Webinars. Ms. Sonal Kame, Asstt. Prof., judged the District level Poster Competition and was appointed as Selection Committee Member at ITI, Akola. Mr Pawan Mahajan, Asstt.

Prof., published an e-Book for public awareness during the Pandemic. Non Teaching staff also worked effectively. Mrs Vandana Pimpalkhare, has been very active in cooking, boxing, Hapkido competitions and was honored with ‘गुणवंत क्रिडा कार्यकर्ता संघटक पुरस्कार २०१९-२०’, by Govt. of Maharashtra and 'Jeewan Gauraw Puraskar', by Health Dept. ZP Akola . Kiran Sharma participated in online webinars.

Academic Calendar was being implemented very earnestly but the unforeseen and out of control situation of COVID – 19 Pandemic extensively disturbed the plans. TLP was continued online. It was decided that the department will strive to fulfill its responsibility towards students & society. The major endeavors were –

1. Scientific Poster on Immunity Boosting was developed & published.
2. Scientific poster on Health for public awareness published
3. e-Book “Understanding Kitchen & Personal Hygiene through Self Learning Material during Pandemic COVID-19” was published
4. National Webinar on – “Relevance of Nutrition & Food Safety during & after COVID19 Pandemic” was conducted.
5. Teaching & Non Teaching staff members in the department participated in Knowledge & Life Skills Enhancing online courses / lectures during the Pandemic.
6. Work from Home was appropriately done by all departmental stakeholders.

Dr Anjali Rajwade
Professor & HOD Home Science

The human spirit must prevail over technology.

Gathering Report - 2019-2020



- 1) Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola had organized Annual Gathering "Uddan" 2020 on 11th and 12th of January 2020. This grand event comprised the celebration of Bharatiya Seva Sadan, the parent institution's 78th Foundation Day as well as Birth Anniversary of the Founder President honourable Mataji Late Smt. Radhadevi Goenka.
- 2) The theme of Gathering was Unity in Diversity which in Indian Philosophy is called as *Vasudhav Kutumbkum*.
- 3) Honourable Ms. Neelam Gorhe, Deputy Chairperson Maharashtra Legislative Council and honourable Mr. Gopikisanji Bajoria, MLC Akola and Buldhana & Vice-President, Bharatiya Seva Sadan, Akola were the inaugural guests.
- 4) Theme-based events, performances and programmes were organized such as Singing Star RDG, Dancing Star

RDG, RDG Idol, Fashion Show, Elocution Competition, and various cultural expressions.

- 5) Eighty-three prizes were distributed among fifty-one students in Prize Distribution Ceremony. Staff members were also felicitated for their various achievements and recognitions. This year's "Vimladevi - Student of the Year Award" was given to Ms. Divya Chavan, B.A.III and Ms. Rani Pali, B.A.III and Ms. Sakshi Pande, B.Sc III were the runners up.
- 6) Entrepreneur Fair was organised and Ms. Ranu Potdar's group was selected for Young Entrepreneur Award.
- 7) Sports Day was also organized for Staff and Students.

**An investment
in
KNOWLEDGE
always pay
the best
INTEREST**

-Pen Franklin

The great myth of your times is that technology is communication.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय सत्र - २०१९-२० चा कला शाखेचा अहवाल

महाविद्यालयात कला विभागाची स्थापना करण्यात आली या विभागाने वर्ष २०१९-२० मध्ये महाविद्यालयामध्ये विविध उपक्रम तसेच कार्यक्रम घेतले. या उपक्रमांचा तसेच कार्याक्रमांचा थोडक्यात वृत्तांत अहवालाच्या स्वरूपात पुढील प्रमाणे :

२१ जून २०१९ रोजी आंतरराष्ट्रीय योग दिवस या कार्यक्रमांमध्ये कला शाखेतील प्राध्यापकांनी तसेच महाविद्यालयातील विद्यार्थिनींनी विशेष सहभाग नोंदविला.

१९ जुलै २०१९ रोजी राज्यस्तरीय स्टँड अप कॉमेडी स्पर्धा महाराष्ट्रशासन व सोनी मराठी वाहिनी आणि मराठी भाषा संचालनालय च्या वतीने मराठी विभागाच्या सहकार्याने घेण्यात आली. या कार्यक्रमांमध्ये सौ. अलका तेलंग, चित्रा खासनविस, डॉ. मिर्झा बेग, अॅड. अनंत खेळकर, श्री. शंशाक येवले, डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अंबादास पांडे, डॉ. चारुशीला रुमाले, डॉ. निभा उपाध्याय यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

२२ जुलै २०१९ रोजी वृक्षारोपन कार्यक्रम श्री. दिलीपराजजी गोयनका, डॉ. देवेंद्र व्यास आणि कलाशाखेतील संपूर्ण प्राध्यापक यांच्या उपस्थितीत संपन्न झाला.

१ ऑगस्ट २०१९ रोजी केवायसी बदल माहिती देण्याचा कार्यक्रम घेण्यात आला त्यामध्ये डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अंबादास पांडे, डॉ. अर्चना भोरे, डॉ. विनोद खैरे, प्राध्यापक संजय विटे यांची प्रमुख उपस्थिती होती नवप्रवेशीत विद्यार्थिनींना या

कार्यक्रमांमध्ये केवायसी सदर्भात माहिती देण्यात आली.

१ ते ७ ऑगस्ट २०१९ मध्ये गृह अर्थशास्त्र विभागा द्वारे जागतिक स्तनपान सप्ताहाचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला डॉ. उर्मिला देशमुख, डॉ. उज्वला वाजपेयी, डॉ. राधा सावजी यांनी विद्यार्थिनींना मार्गदर्शन केले. या कार्यक्रमाला डॉ. विद्या धृव, डॉ. अंजली राजवाडे, डॉ. अंबादास पांडे, प्राध्यापक संजय विटे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

१० ऑगस्ट २०१९ हार्मोनियमचे अंतरंग या कार्यक्रमाचे संगीत विभागाद्वारे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमात महाविद्यालयीन विद्यार्थिनीं तसेच डॉ. अर्चना अंभोरे, डॉ. सुपळकर, प्रा. निबांळकर, प्रा. चापके. प्रा. बंडगर, प्रा. आळशी, प्रा. सगणे, डॉ. निभा उपाध्याय यांचा सहभाग होता.

३ सप्टेंबर २०१९ मराठी अभ्यास मंडळाचे उद्घाटन करण्यात आले या कार्यक्रमात प्रमुख पाहुणे म्हणून डॉ. कैलास वानखेडे होते तर प्रमुख उपस्थिती डॉ. चारुशीला रुमाले, डॉ. संध्या कांबळे, प्रा. संजय विटे, प्रा. स्वप्नील इंगोले, प्रा. मीना दातकर यांची उपस्थिती होती.

३ सप्टेंबर २०१९ गृह अर्थशास्त्र विभागाद्वारे राष्ट्रीय पोषण सप्ताहाचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुणे डॉ. संगीता खेरडे, यांनी मार्गदर्शन केले तर प्राचार्य देवेंद्र व्यास, डॉ. उज्वला वाजपेयी, डॉ. सावजी, प्रा.संजय विटे

यांची उपस्थिती होती.

७ ते १४ सप्टेंबर २०१९ पर्यंत हिंदी विभागाद्वारे हिंदी सप्ताहाचे आयोजन करण्यात आले. यामध्ये विविध स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले. स्वरचीत कविता, कहानी, चित्र पाहून कथा लिहणे, पाहिलेल्या हिंदी सिनेमाचे समीक्षण करणे निबंध लेखन इत्यादी स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले. प्रथम, द्वितीय व तृतीय क्रमांक प्राप्त विद्यार्थीनींना प्रमाणपत्र देण्यात आले. या कार्यक्रमाच्या यशस्वीते करीता हिंदी विभागाच्या प्राध्यापक आणि विद्यार्थीनींनी आपला उत्स्फूर्त सहभाग दिला.

१६ सप्टेंबर २०१९ पोलीस भरती प्रशिक्षण कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. या कार्यशाळेला प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री. रामेश्वर चव्हाण, प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, भाग्यश्री मेसरे, रिना बुंदेले, डॉ.विनोद खैरे, प्रा. संजय विटे, प्रा. श्वेता मेंढे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

२ ऑक्टोबर २०१९ ला डॉ. उमेश पाटील, प्रा. विनोद खैरे यांच्या उपस्थितीत स्वच्छता अभियान राबविण्यात आले. या कार्यक्रमात प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांनी महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींना स्वच्छता अभियान या विषयावर मार्गदर्शन केले.

७ ऑक्टोबर २०१९ रोजी शारदा उत्सवाचे आयोजन करण्यात आले या कार्यक्रमाला श्रीमती उमा बाजोरिया प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते तर श्री. दिलीपराजजी गोयनका यांची प्रमुख उपस्थिती होती. सर्व कला शाखा विभागातील प्राध्यपकांनी आपला सहभाग दिला.

१९ ऑक्टोबर २०१९ रोजी इंग्रजी

विभागाद्वारे इंग्लिश कम्युनिकेशन स्कील ह्या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. या कार्यक्रमाचे प्रमुख अतिथी प्रा. मेघराज घाडगे होते डॉ. शालीनी बंग, तर प्रा. ललित भट्टी, प्रा. संजय विटे, डॉ. अंबादास पांडे, प्रा. राधिका माहुरकर यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

१९ ऑक्टोबर २०१९ रोजी राज्यशास्त्र विभागाद्वारे मतदान जागृती कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. या कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुणे म्हणून मा. श्री. राजेश खवले, उप-जिल्हाधिकारी होते. त्यांनी महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींना मतदान करण्याचे महत्व विषद केले. तर प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. विनोद खैरे, डॉ. आशिष मुठे, प्रा. सोनल कामे, प्रा. श्वेता मेंढे यांची उपस्थिती होती.

२८ नोव्हेंबर २०१९ रोजी संविधान दिनाचे आयोजन करण्यात आले. या दिवशी महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींना संविधानाचे महत्व विषद करून सांगण्यात आले. या कार्यक्रमाला डॉ. धनश्री पांडे, डॉ. विनोद खैरे, डॉ. प्रा. अंबादास पांडे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

१० डिसेंबर २०१९ रोजी राज्यशास्त्र विभागाद्वारे मानवी हक्क दिनाचे आयोजन करण्यात आले हेतो. या कार्यक्रमाच्या यशस्वीतेसाठी डॉ. विनोद खैरे, डॉ. आशिष मुठे व इतर कर्मचारीवर्गाने अथक परिश्रम घेतले.

१८ डिसेंबर २०१९ रोजी महाविद्यालयीन गुणवंत विद्यार्थ्यांचा सत्कार सोहळ्याचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुणे म्हणून भारतीय सेवा सदनचे अध्यक्ष आदरणीय मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका होते. त्यांच्या

आपण आनंदी नसलो तर दुसऱ्यांना आनंद देणार कसा.

हस्ते संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठात बी.ए. भाग ३ मध्ये कु. जाई नागेश विद्यासागर, सातवी मेरीट, एम.ए. संस्कृत मध्ये कु. प्राजक्ता भास्करराव देशपांडे, पहिली मेरीट, एम. ए. राज्यशास्त्र मध्ये कु. दिपाली सहदेव अकरते, दुसरी मेरीट, एम. ए. इंग्रजी मध्ये कु. बुशरा अंजू अब्दुल सय्यद, चौथी मेरीट यांचा सत्कार करण्यात आला. या कार्यक्रमाला महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अंबादास पांडे, डॉ. विनोद खैरे, प्रा. संजय विटे तसेच महाविद्यालयीन विद्यार्थिनी व महाविद्यालयातील सर्व विभागातील प्राध्यापकांची प्रमुख उपस्थिती होती.

२४ डिसेंबर २०१९ रोजी भ्रष्टाचार विरोधी दिन या कार्यक्रमाचे आयोजन समाजशास्त्र विभागाद्वारे करण्यात आले. या कार्यक्रमाचे प्रमुख पाहुणे डॉ. नितीन चौधरी होते तर प्रा. सुमती देवर तसेच इतर प्राध्यापकांची उपस्थिती होती.

१ जानेवारी २०२० रोजी कला शाखे द्वारे 'मै' या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले या कार्यक्रमाला अध्यक्ष म्हणून मा. श्री. दिलीपराजजी गोयनका तर प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अर्चना अंभोरे, डॉ. विनोद खैरे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

३ जानेवारी २०२० रोजी क्रिडा दिवसाचे आयोजन करण्यात आले या आयोजनात विविध विभागाच्या प्राध्यापक वर्गाने आपला सहभाग नोंदविला.

५ जानेवारी २०२० रोजी 'रेडिओ जॉकी' या कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुणे म्हणून डॉ. गणेश बोरकर म्हणून उपस्थित होते. प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, प्रा. संजय विटे, प्रा. स्वप्नील इंगोले, प्रा. आशिष मुठे, प्रा. सुमती देवर, प्रा. नितीन चौधरी यांची उपस्थिती व सहभाग होता.

६ जानेवारी २०२० रोजी 'समय स्फुरत

व्याख्यान' या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यक्रमाला डॉ. निभा शर्मा, डॉ. उज्वला वाजपेयी, डॉ. चारुशिला रुमाले, डॉ. विद्या धृव, प्रा. संजय विटे, डॉ. नितीन चौधरी यांची उपस्थिती होती.

६ जानेवारी २०२० रोजी मराठी भाषा संवर्धन पंधरवाड्याचे आयोजन करण्यात आले. या आयोजनाचे उद्घाटन प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्या हस्ते झाले. तर डॉ. चारुशिला रुमाले, प्रा. स्वप्नील इंगोले, डॉ. संध्या कांबळे यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

७ जानेवारी २०२० रोजी मेंहदी व रांगोळी स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले. त्यामध्ये महाविद्यालयीन विद्यार्थिनींनी मोठ्या प्रमाणात आपला सहभाग नोंदविला. या स्पर्धेच्या यशस्वीतेसाठी डॉ. उज्वला वाजपेयी, डॉ. निभा शर्मा, डॉ. चारुशिला रुमाले, प्रा. सुमती देवर यांचा सहभाग होता.

२९ जानेवारी २०२० रोजी अर्थशास्त्र विभागाद्वारे लोकसंख्येचे स्थलांतर या विषयावर डॉ. प्रदीप ताकतोडे यांनी विद्यार्थिनींना मार्गदर्शन केले तर डॉ. नितीन चौधरी, प्रा. संजय विटे यांचा सहभाग होता.

१ फेब्रुवारी २०२० मराठी विभागाची मराठी साहित्य संमेलनास भेट. डॉ. चारुशिला रुमाले, डॉ. कांबळे, प्रा. स्वप्नील इंगोले यांचा सहभाग होता.

६ फेब्रुवारी २०२० रोजी राष्ट्रीय खुली सुगम संगीत स्पर्धेचे संगीत विभागद्वारे आयोजन करण्यात आले. या स्पर्धेला प्रमुख पाहुणे डॉ. किशोर देशमुख, डॉ. कौमदी बर्डे, डॉ. अभय गद्रे, डॉ. चंद्रकिरण घाटे, डॉ. भाग्यश्री मोकासदार उपस्थित होते तर प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास, डॉ. अर्चना अंभोरे आणि संगीत विभागातील सर्व प्राध्यापक वर्गाचा सहभाग होता.

१५ फेब्रुवारी २०२० रोजी गृहशास्त्र विभागाद्वारे 'उंबरठा ओलांडताना' आरोग्य विषयावर व्याख्यान ठेवण्यात आले. या व्याख्यानाचे प्रमुख पाहुणे डॉ. हर्षवर्धन मालोकार, होते तर डॉ. वाजपेयी, डॉ. सावजी आणि डॉ. धृव यांचा सहभाग होता.

२४ फेब्रुवारी २०२० रोजी मराठी विभागाद्वारे आंतरराष्ट्रीय भाषा दिवसाचे आयोजन करण्यात आले यामध्ये महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात आपली उपस्थिती नोंदविली तर डॉ. अंजली राजवाडे, डॉ. अंबादास पांडे, डॉ. चारुशिला रुमाले, डॉ. धनश्री पांडे यांचा सहभाग होता.

६ मार्च २०२० रोजी राज्यशास्त्र विभागाद्वारे प्रश्नमंजुषा स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते. या स्पर्धेत महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी मोठ्या

प्रमाणात सहभाग घेतला. या स्पर्धेकरीता डॉ. विनोद खैरे, डॉ. आशिष मुठे यांनी अथक परिश्रम घेतले.

१४ मार्च २०२० रोजी राज्यशासन विभागाद्वारे 'स्त्री-पुरुष समानता' या विषयावर चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले या आयोजनात महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी सहभाग घेतला तर कला शाखा विभाग प्रमुख डॉ. अर्चना अंभोरे व कला शाखा उप-विभाग प्रमुख यांनी अथक परिश्रम घेतले.

या अहवालातील प्रत्येक आयोजना महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी आपला सहभाग नोंदविला तसेच प्रत्येक शाखेच्या विभागातील प्राध्यापक तसेच शिक्षकेतर कर्मचारी वर्गांनी अथक परिश्रम घेतले.

ग्रंथालय विभागाचा वार्षिक अहवाल

उच्च शिक्षणाचा महत्वाचा कणा म्हणजे ग्रंथालय होय. आमच्या महाविद्यालयाचे ग्रंथालय समृद्ध व संगणकीकृत असून ग्रंथालयात विविध ३३२३७ पुस्तके वाचनासाठी उपलब्ध आहेत. संशोधन वृत्ती वाचकांमध्ये निर्माण व्हावी या दृष्टिकोनातून विविध विषयावरील नियतकालिके उपलब्ध करून दिले जातात. वाचकांच्या सोयीसाठी सुसज्ज असे वाचनकक्ष उपलब्ध असून याचा उपयोग विद्यार्थीनींनी भरपूर प्रमाणात घेत असतात. विद्यार्थीनींना ग्रंथालयातील साहित्याची माहिती व्हावी या करिता ग्रंथालयाची ओळख हा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला. ग्रंथालय आणि माहिती शास्त्राचे जनक डॉ.एस.आर.रंगनाथन यांची जयंती व पुण्यतिथी उत्साहात साजरी करण्यात आली. यावर्षी ग्रंथालयाद्वारे पुस्तक प्रदर्शनीचे आयोजन करण्यात आले. भारताचे माजी राष्ट्रपती 'मिसाईल मॅन' डॉ.ए.पी.जे.अब्दूल कलाम यांची जयंती, वाचन प्रेरणा दिवस म्हणून साजरी करण्यात आली. यामध्ये विद्यार्थीनी व प्राध्यापकांचा सक्रीय सहभाग होता. ग्रंथालयाद्वारे देवाण-घेवाण, रोजगार मार्गदर्शन, संदर्भ सेवा, इंटरनेट सेवा, झेरॉक्स सेवा विद्यार्थीनींना देण्यात आल्या. विद्यार्थीनींना वादविवाद स्पर्धा, वक्तृत्व स्पर्धा, निबंध स्पर्धा या सारख्या विविध स्पर्धांसाठी वेळोवेळी मार्गदर्शन व पुस्तके उपलब्ध करून देण्यात आले. वाणिज्य व ग्रंथालय विभागाच्या संयुक्त विद्यमाने विद्यापीठ स्तरीय 'स्पार्क' प्रश्नमंजुषा स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले. या सर्व सेवा व कार्यक्रमांमध्ये महाविद्यालयातील शिक्षक ग्रंथालय कर्मचारी व शिक्षकेतर कर्मचारी यांचे विशेष योगदान लाभले.

प्रा. राम बाहेती
समन्वयक

सेवा जग फुलविते, पण प्रीती मन फुलविते.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय सत्र - २०१९-२० चा क्रिडा विभागाचा अहवाल

सत्र २०१९-२० मध्ये संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ आंतर महाविद्यालयीन विविध खेळ स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या होत्या. ज्यामध्ये श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींनी विविध आंतर महाविद्यालयीन स्पर्धेत सहभाग घेतला होता ज्यामध्ये क्रिकेट, खो-खो, कबड्डी, एथलेटिक, ज्युडो, कुस्ती, बॉक्सिंग, व्हॉलीबॉल, फुटबॉल, हॅन्डबॉल, बैडमिंटन, तायक्वांडो, बेसबॉल, टेबल टेनिस, बॉल बैडमिंटन इत्यादी खेळांचा सहभाग होता.

यावर्षी महाविद्यालयातील क्रिकेट टिम, बैडमिंटन टीम व खो-खो टिमने आंतर महाविद्यालयीन स्पर्धेत झोनल फायनल मध्ये द्वितीय क्रमांक प्राप्त करून पारितोषिक मिळविले.

यावर्षी महाविद्यालयामध्ये प्रथमच आंतर महाविद्यालयीन व्हॉलीबॉल खेळाचे आयोजन शारिरीक शिक्षण विभागाद्वारे करण्यात आले होते. या आंतर महाविद्यालयीन महिला व्हॉलीबॉल स्पर्धेचे उद्घाटन विद्यापीठ व्यवस्था परिषद सदस्य डॉ. प्रदीपजी खेडेकर यांच्या हस्ते पार पडला. या व्हॉलीबॉल स्पर्धेत अमरावती जिल्ह्यातील एकूण १५ महाविद्यालयातील संघानी व त्यांच्या प्रशिक्षकांनी सहभाग घेतला होता. या स्पर्धेत अंतिम सामन्यात डिग्री कॉलेज ऑफ फिजीकल एज्युकेशन, अमरावती यांनी विजेते पद मिळविले. तर कला व विज्ञान महाविद्यालय, कुन्हा संघानी उपविजेते पद प्राप्त केले. तसेच सतत तीन दिवसीय व्हॉलीबॉल महिला स्पर्धेची निवड चाचणी पण महाविद्यालयाचे संस्थाध्यक्ष मा. श्री. दिलीपराजजी गोयनका व प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्या हस्ते विजयी संघाला पारितोषिक देण्यात आले. यावेळी विविध महाविद्यालयातील शारिरीक शिक्षक उपस्थित होते. संपूर्ण आयोजनाच्या यशस्वीतेसाठी विद्यालयातील

प्राध्यापकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचाऱ्यांचे सहकार्य लाभले.

दरवर्षी प्रमाणे या वर्षीही अमरावती विद्यापीठस्तरीय आंतर महाविद्यालयीन बॉक्सिंग स्पर्धेत कु. रिया प्रकाश ताराम हिने वजन गट ६९ ते ७५ मध्ये सलग चौथांदा सुवर्णपदक प्राप्त केले व तिचे चयन ऑल इंडिया बॉक्सिंग टूर्नामेंट उत्तरप्रदेश, मेरठ येथे करण्यात आले होते. कु. सायली विजय धानोरकर हिने ५४ ते ६० वजनगट मध्ये रौप्यपदक प्राप्त केले. तीची स्टॅन्डबॉय खेळाडू म्हणून विद्यापीठाच्या टिममध्ये निवड करण्यात आली होती. तसेच कु. काजल अजाबराव घुले व प्रियंका सहदेव टाले दोघांनी बॉक्सिंग स्पर्धेत कांस्य पदक प्राप्त केले.

याचप्रकारे हॅन्डबॉल या खेळामध्ये कु. राणी सागर आढे हिची विद्यापीठाच्या हॅन्डबॉल संघामध्ये निवड करण्यात आली व यावर्षी पहिल्यांदा विद्यापीठाची हॅन्डबॉल टिमही आंतर विद्यापीठ स्पर्धेत तृतीय क्रमांक मिळवून ऑल इंडिया हॅन्डबॉल स्पर्धेत पेरियर विद्यापीठ, सालेन तामिळनाडू येथे दि. १४ ते १६ फेब्रुवारी २०२० रोजी स्पर्धेत कांस्य पदक प्राप्त केले. सोबतच सोलापूर येथे आयोजित अरुमेघ स्पर्धेत तृतीय क्रमांक मिळवून अमरावती विद्यापीठाचे नाव लौकिक केले.

यावर्षी पहिल्यांदा योगासन स्पर्धेत कु. मयुरी अनंत इंगळे हिने ३८ वी बृहन महाराष्ट्र योगासन स्पर्धा उत्तरप्रदेश वाराणसी येथे दिनांक १२ ते १५ जानेवारी २०२० रोजी सहभाग घेतला व अमरावती विद्यापीठाच्या योगासन टिममध्ये स्टॅन्डबॉल खेळाडू म्हणून तिची निवड करण्यात आली होती. याचप्रकारे राष्ट्रीय बॉल बैडमिंटन स्पर्धे बिहार मध्ये मोतिहार येथे दिनांक २२ ते २८ जानेवारी २०२० पर्यंत संपन्न झाली. यामध्ये कु. दुर्गेश्वरी शिवाजी गावंडे हिने सहभाग घेतला होता.

ज्याच्या जवळ उमेद आहे तो कधीही हरू शकत नाही.

अमरावती विद्यापीठाच्या फुटबॉल टिममध्ये यावर्षी कु. शिवाणी कृष्णन कोपूल हिचे स्टॅण्डबॉय खेळाडू म्हणून निवड झाली. तर कु. विजया गौरख दामोदर हिने डिव्हीजन व जिल्हास्तरीय बॉक्सिंग स्पर्धेत सुवर्ण पदक प्राप्त केले यवतमाळ येथे राज्यस्तरीय बॉक्सिंग स्पर्धेत सहभाग घेतला आहे.

महाविद्यालयात स्नेहसंमेलनाचे निमित्ताने ३ दिवसीय क्रिडा स्पर्धांचे आयोजन शारिरीक शिक्षण विभागाद्वारे करण्यात आले. या स्पर्धांचे उद्घाटन संस्थाध्यक्ष श्री. दिलीपराजजी गोयनका यांनी केले.

वरिष्ठ महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींची शारिरीक क्षमता चाचणी घेण्यात आली. या चाचणी करीता बाह्य परिक्षक म्हणून डॉ. संगीता लोहपूर संचालक, शारिरीक शिक्षण धाबेकर कला महाविद्यालय, खडकी व आंतरीक परिक्षक म्हणून प्रा. श्वेता मेंढे व श्री. अशोक दिक्षीत यांचा सहभाग होता.

२१ जून २०१९ रोजी आंतरराष्ट्रीय 'योग दिवस' शारिरीक शिक्षण विभागाद्वारे साजरा करण्यात आला यामध्ये विद्यालयातील विद्यार्थीनी, प्राध्यापकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचारी वर्गाने मोठ्या प्रमाणात सहभाग नोंदविला. हा कार्यक्रम एन.सी.सी. व एन.एस.एस यांच्या संयुक्त विद्यमाने घेण्यात आला.

दि. २९ ऑगस्ट २०१९ रोजी हॉकीचे जादूगर मेजर ध्यानचंद यांचा जन्मदिवस राष्ट्रीय क्रिडा दिवस म्हणून साजरा करण्यात आला. यावेळी शिवछत्रपती पुरस्काराने सन्मानित राष्ट्रीय व्हॉलीबॉल खेळाचे पंच, अखिल भारतीय संघटनेचे सदस्य श्री. साहेबराव ठाकरे उद्घाटक म्हणून लाभले त्यांनी राष्ट्रीय क्रिडा दिवसाचे महत्त्व विद्यार्थीनींना विषद केले. कार्यक्रमाचे सुत्रसंचालन व आभार प्रदर्शन रोहिणी जाधव व स्मिता गोरे यांनी केले.

३० ऑगस्ट २०२० रोजी सकाळी 'फिट इंडिया

मुव्हमेंट' अंतर्गत पायदळ रॅली काढण्यात आली. या कार्यक्रमाला उद्घाटक म्हणून राष्ट्रीय फुटबॉल खेळाडू श्री. रवि संगेकर व सचिन यांची उपस्थिती होती. पायदळ रॅली नंतर स्वच्छता अभियानतर्गत परिसराची स्वच्छता करण्यात आली.

शारिरीक शिक्षण विभागद्वारे ५ ते ७ फेब्रुवारी २०२० या कालावधीत सायंकाळी ७ ते ८ या वेळेत योगा व एरोबिक्स कोर्स महाविद्यालया मध्ये घेण्यात आला यामध्ये प्रा. श्वेता मेंढे यांनी विद्यार्थीनींना प्रशिक्षण दिले तर डॉ. राजेश चंदवशी आर.एल.टी महाविद्यालय यांनी विद्यार्थीनींना सेल्फ डिफेन्स व स्ट्रेचिंग व्यायामाचे प्रशिक्ष दिले. डॉ. संगीता लोहपूर, धाबेकर कला महा विद्यालय यांनी योगावर प्रशिक्षणपर मार्गदर्शन केले. मयुरी इंगळे या विद्यार्थीनीने शुध्दीक्रीयाचे मार्गदर्शन प्रात्याक्षिक दिले. प्रा. हर्षदा वाधोने यांनी विद्यार्थीनींना योगाचे महत्त्व सांगितले.

या सर्व उपक्रमांना तसेच अमरावती विद्यापीठाच्या झालेल्या विविध क्रिडा स्पर्धांमध्ये मिळविलेल्या यशाबद्दल महाविद्यालयाचे अध्यक्ष मा.श्री. दिलीपराजजी गोयनका यांनी अभिनंदन केले तर प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास व प्रा. श्वेता मेंढे यांच्या मार्गदर्शन लाभले. हे सर्व उपक्रम राबविण्याकरीता लेफ्टनंट प्रा. श्वेता मेंढे यांनी अथक परिश्रम घेतले व डॉ. विद्या धृव, डॉ. स्मीता देवर, डॉ. विनोद खैरे, डॉ. विनोद चव्हाण, डॉ. नितीन चौधरी, डॉ. रविंद्र मुंद्रे, प्रा. अनिल निंबाळकर, प्रा. सचिन बंडगर, प्रा. विवेक चापके, प्रा. अजय सुराणा, प्रा.तृती धूत, श्री. योगेश पडगील, श्री. योगेश बानार्डित, श्री. अशोक दिक्षीत, विष्णू ढोणे, सौरभ इंगळे यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

समन्वयक

लेफ्टनंट प्रा. श्वेता मेंढे

संचालक, शारिरीक शिक्षण

कधी कधी स्मितहास्य हे वाळवंटातील पाण्याच्या थेंबासारखे उपयोगी पडू शकते.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय सत्र - २०१९-२० च्या राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाचा विशेष शिबीर अहवाल



श्रीमती आर.डी.जी महिला महाविद्यालय अकोला यांच्या राष्ट्रीय सेवा योना पथकाने सत्र २०१९-२० मध्ये विशेष शिबीराचे आयोजन दि. १५ जानेवारी २०२० ते २२ जानेवारी २०२० या दरम्यान दत्तक ग्राम रुस्तमाबाद (आळंदा) ता. बार्शीटाकळी, जि. अकोला या ठिकाणी घेण्यात आला.

या शिबीरात श्रमदानातून बंधारा निर्मिती, ग्रामस्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, उन्नत भारत



अभियाना अंतर्गत ग्राम सर्वेक्षण, मृदा आरोग्य पत्रिका सर्वेक्षण, इत्यादी कार्यक्रम राबविण्यात आले. शिबीराला संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठाचे कुलगुरु डॉ. मुरलीधर चांदेकर, जिल्हा समन्वयक डॉ. संजय तिडके, क्षेत्रीय



समन्वयक प्रा. रतन येऊल यांनी सदिच्छा भेटी दिल्या. दरवर्षी प्रमाणे भव्य रोग निदान शिबीराचा लाभ ग्रामस्थांनी घेतला.

शिबीराचे आयोजन संस्थेचे अध्यक्ष मा.



श्री. दिलीपराजजी गोयनका, सचिव, अलोक कुमारजी गोयनका, उपाध्यक्ष रविकुमारजी गोयनका, सदस्य श्री. विनीतकुमारजी गोयनका, प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्या मार्गदर्शनात करण्यात आले. शिबीराच्या यशस्वीतेसाठी कार्यक्रम अधिकारी डॉ. उमेश पाटील, महिला कार्यक्रम अधिकारी प्रा. कु. सोनल टी. कामे, सहाय्यक कार्यक्रम अधिकारी प्रा. कु. स्मिता देवर, प्रा. डॉ. आशिष मुष्टे, श्री नंदुभाऊ साबळे तसेच शिक्षकेत्तर कर्मचारी वर्गांनी अथक परिश्रम घेतले.

जो काळानुसार बदलतो तोच नेहमी प्रगती करतो.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय सत्र - २०१९-२० च्या राष्ट्रीय सेवा योजना नियमित कार्यक्रम अहवाल

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० या कालावधीमध्ये राष्ट्रीय सेवा योजना पथकाद्वारे विविध नियमित कार्यक्रम घेण्यात आले. यामध्ये प्रामुख्याने आंतरराष्ट्रीय योग दिन, ३३ कोटी वृक्षारोपन कार्यक्रमांतर्गत वृक्षारोपन, तंबाखु विरोधी शपथ, देशभक्तीपर 'उरी' या चित्रपटाचे रसग्रहण, दत्तकग्राम मध्ये एकूण ७० वृक्षांची लागवड, स्वातंत्र्य दिनाच्या दिवशी नॅशनल इंटिग्रीटी मिशन अकोला यांच्या सहाय्याने स्वयं सेवकांनी दिड किलो मीटर लांबीच्या राष्ट्रध्वज रॅली मध्ये सहभाग, गांधी जयंतीच्या पर्वावर स्वच्छता अभियान राबविण्यात आले.

राष्ट्रीय सेवा योजना दिनाचे औचित्य साधून रक्तदान शिबीराचे आयोजन दि. ३० सप्टेंबर २०१९ रोजी करण्यात आले. या आयोजनात प्राचार्य देवेंद्र व्यास, प्रा. अजय शिंगाडे, प्रा. अनिल निंबाळकर, प्रा. सचिन बंडगर, प्रा. संजय विटे, डॉ. नितीन चौधरी, कु. समिक्षा ढोंबरे, कु. राणु पोदार, कु. स्मिता गोरे, कु. सिध्दी ओवे, कु. रिना यादव, कु. अंकिता भुजबले, कु. श्रध्दा उमाळे, कु. रश्मी लहुटे, कु. प्रियंका पुरोहीत यांनी रक्तदान केले.

३० जुलै २०१९ रोजी युवा प्रशिक्षण शिबीरामध्ये कु. विनीता शैगोकार, कु. वैष्णवी कोटरवार यांनी भाग घेतला.

३० व ३१ ऑगस्ट २०१९ दरम्यान झालेल्या गणतंत्र दिन पथसंचालन या राज्यस्तरीय निवड चाचणी शिबीरामध्ये वैष्णवी कोटरवार व दिक्षा पहरकर यांनी सहभाग घेतला.

१६ ते २१ सप्टेंबर २०१९ या दरम्यान झालेल्या गांधी विचार परिषद, वर्धा येथे निकीता रेवाळे, वैष्णवी उपरीकर यांनी सहभाग घेतला.

२६ नोव्हेंबर रोजी संविधान दिनाचे आयोजन करण्यात आले यामध्ये उद्देश प्रत्रिकेचे वाचन करण्यात आले. यावेळी डॉ. विनोद खैरे यांचे मार्गदर्शन लाभले.

२० डिसेंबर २०१९ रोजी संत गाडगेबाबा पुण्यतिथी निमित्त अभिवादनाचा कार्यक्रम घेण्यात आला. यावेळी प्रा. स्वप्निल इंगोले यांनी त्यांच्या जीवन कार्यावर प्रकाश टाकला.

दि. २६ जानेवारी २०२० रोजी उप-प्रादेशिक परिवहन अधिकारी कार्यालय अकोला व रासेयो यांच्या संयुक्त विद्यमाने रस्ता सुरक्षा अभियानाचे आयोजन करण्यात आले. यावेळी श्री. जिचकार साहेब, वारोकार साहे यांनी रस्ता सुरक्षा या विषयावर विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन केले तर कार्यक्रमाला प्रा. शेक्ता मेंढे, डॉ. उमेश पाटील, प्रा. सोनल कामे, प्रा. स्मिता देवर, डॉ. आशिष मुठ्ठे उपस्थित होते.

२३ फेब्रुवारी २०२० रोजी गाडगे बाबा यांच्या जयंती निमित्त स्वच्छता अभियानाचे आयोजन करण्यात आले. यात महाविद्यालयाचे प्रांगण, कॅटींग व इतर परिसर स्वच्छ करण्यात आला व गाडगेबाबांना आदरांजली वाहण्यात आली.

२० फेब्रुवारी रोजी जागतिक मातृभाषा दिन साजरा करण्यात आला. यावेळी प्रा. इंगोल यांनी मातृभाषेचे महत्व विषद केले.

कोवीड - १९ च्या संदर्भात महाविद्यालयाने जनजागृती करण्याचे दायित्व निभावले. ई-पोस्टर्स, विविध व्हिडिओ निर्मिती, निबंध स्पर्धा, वस्तुनिष्ठ परिक्षा, आरोग्य सेतु ॲपचे महत्व इ. कार्यक्रम घेण्यात आले.

नियमित कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यासाठी संस्थेचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका, उपाध्यक्ष रविकुमारजी गोयनका, प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांचे मार्गदर्शन लाभले. तर या सर्व कार्यक्रमांच्या यशस्वीतेसाठी कार्यक्रम अधिकारी डॉ. उमेश पाटील, महिला कार्यक्रम अधिकारी कु. सोनल कामे, प्रा. कु. स्मिता देवर, प्रा. डॉ. आशिष मुठ्ठे यांनी प्रयत्न केले.

चांगले लोक आणि चांगले विचार आपल्या बरोबर असतील तर जगात कुणीही तुमचा पराभव करू शकत नाही...

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय सत्र - २०१९-२० च्या वादविवाद, वक्तृत्व व इतर स्पर्धांचा अहवाल

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० या कालावधीमध्ये विविध विभागांच्या वतीने आयोजित करण्यात आलेल्या स्पर्धांचा लेखाजोखा दिलेला आहे. विद्यार्थिनींच्या कलागुणांना वाव देण्यासाठी तसेच त्यांच्या अंगीभूत कौशल्यांचा विकास करण्यासाठी या स्पर्धांचा आयोजनाचा हेतू आहे. तसेच या स्पर्धांच्या माध्यमातून विद्यार्थिनींमधील कौशल्या विकसीत करणे आणि त्यांना एक व्यासपीठ उपलब्ध करून देणे हा त्यामागे उद्देश आहे. यामध्ये वक्तृत्व स्पर्धा, गायण स्पर्धा, वादविवाद स्पर्धा, पाककृती स्पर्धा, रांगोळी स्पर्धा, प्रश्नमंजूषा स्पर्धा या आणि अशाप्रकारच्या अनेक स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले होते. अनेक विभागांनी या स्पर्धांमध्ये सक्रिय सहभाग नोंदविला आहे. प्रस्तुत स्पर्धांमध्ये काही राज्यस्तरीय स्पर्धा, काही विद्यापीठस्तरीय स्पर्धा तर काही महाविद्यालयीन स्पर्धा आयोजित करण्यात आल्या होत्या या सर्व स्पर्धांना उत्तम प्रतिसाद लाभला आहे याच स्पर्धांचा थोडक्यात पुढील अहवाल आपल्या समोर मांडण्यात येत आहे.

सत्र २०१९-२० मध्ये महाविद्यालयामध्ये विविध स्पर्धांचे आयोजन करण्यात आले. इंग्रजी विभागाद्वारा ५ मार्च २०२० ला विद्यापीठ स्तरीय निबंध स्पर्धेचे आयोजन केले. या स्पर्धेचा विषय 'Making your City Clean, Green thought and Action Plan' या स्पर्धेला महाविद्यालयातील विद्यार्थिनींनी मोठ्या प्रमाणात आपला सहभाग नोंदविला.

मराठी विभागाने २६ जून २०१९ ला पु.ल.

देशपांडे यांच्या जन्मशताब्दी वर्षानिमित्त सांस्कृतिक मंत्रालय महाराष्ट्र राज्य आणि मराठी विभागाद्वारे जिल्हास्तरीय एकपात्री Standup Comedy स्पर्धा घेतली. या मध्ये जिल्ह्यातील ३१ कलाकारांनी सहभाग घेतला. २६.०२.२०२० या दिवशी कथाकथन स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले. २०.०२.२०२० ला मराठी विभागाने जिल्हा काँग्रेस कमिटी द्वारे आयोजित निबंध स्पर्धेला महाविद्यालयातर्फे ११ विद्यार्थिनींनी सहभाग नोंदविला.

मराठी भाषा संवर्धन पंधरवाडा अंतर्गत, चारोळी लेखन स्पर्धा, चित्रपट समिक्षा स्पर्धा, जाहिरात सादरीकरण स्पर्धा घेण्यात आल्या. १ जानेवारी २०२० ते १५ जानेवारी २०२० या कालावधीत समयस्फूर्त भाषण स्पर्धा घेण्यात आली.

११ जानेवारी २०२० 'स्त्री काल, आज, उद्या' व 'वसुदैव कुटुंबकम्' या विषयावर वक्तृत्व स्पर्धा घेतली.

राज्यशास्त्र विभागाने ६ मार्च ला प्रश्नमंजूषा स्पर्धेचे आयोजन केले त्यामध्ये ७२ विद्यार्थिनींनी सहभाग घेतला.

हिंदी विभागाने हिंदी सप्ताहा अंतर्गत ४ ते १२ सप्टेंबर २०१९ या कालावधीमध्ये निबंध, काव्य, कहानी व कथा स्पर्धा तसेच समाचार लेखन, जाहिरात लेखन, चित्रपट समिक्षा या विविध स्पर्धांचे आयोजन केले ज्यामध्ये महाविद्यालयातील बहुतांश विद्यार्थिनींनी सहभाग नोंदविला.

जगाला शांतीची कला शिकविणे हे स्त्रियांचे दैवी कार्य आहे. - हंट

गृहविज्ञान विभागाद्वारे २० ऑगस्ट २०१९ ला मेहंदी स्पर्धा व रांगोळी स्पर्धा तसेच ९ ऑगस्ट २०१९ ला पोस्टर स्पर्धा घेण्यात आली.

महाविद्यालयामधील अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, समाजशास्त्र व मराठी विभागाच्या सयुक्त विद्यमाने 'ऑनलाईन' प्रश्नमंजुषेचे आयोजन करण्यात आले. यामध्ये विविध महाविद्यालयीन ३३० स्पर्धकांनी आपला सहभाग नोंदविला. विजयी स्पर्धकांना पारितोषिके देण्यात आली.

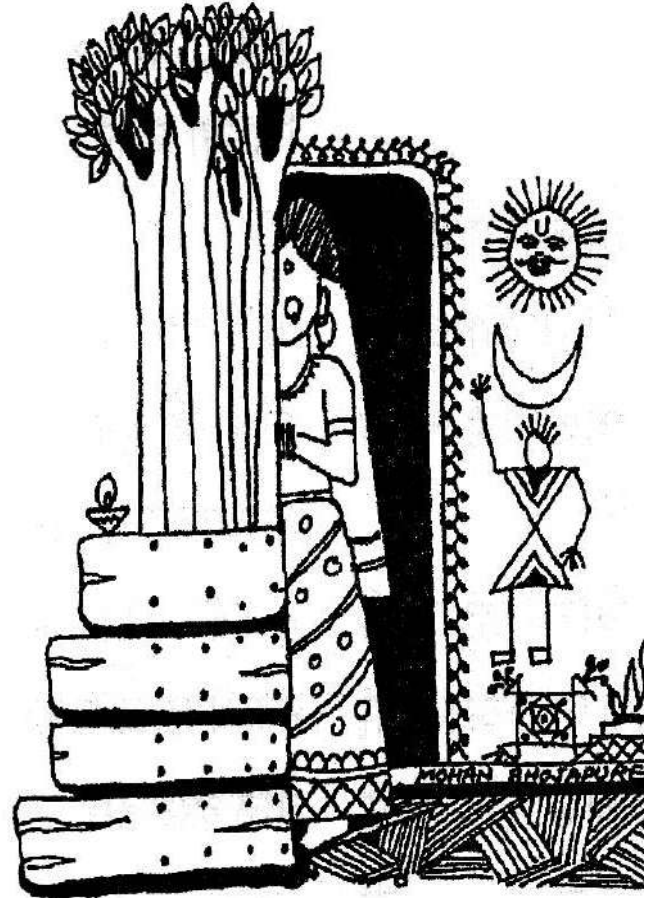
गृह अर्थशास्त्र विभागाने ११.०९.२०१९ ला 'Rich Protein Recipes' स्पर्धा ०२.०८.२०१९ पोस्टर स्पर्धा, २०.०९.२०१९ ला 'Business Plan Competition' PPT व ३०.०९.२०१९ ला 'Slogan Competition' घेण्यात आली.

स्नेह संमेलना अंतर्गत रांगोळी, मेहंदी व वक्तृत्व स्पर्धेचे आयोजन केले या स्पर्धेला बहुसंख्य विद्यार्थिनींनी सहभाग घेतला. संगीत विभागाद्वारा राष्ट्रीय सुगम संगीत स्पर्धेचे आयोजन केले. त्यामध्ये विविध महाविद्यालया मधील ८५ स्पर्धकांनी आपली कला सादर केली तसेच 'Singing Star Competition' सुध्दा घेतली महाविद्यालयातील विद्यार्थिनींनी उत्स्फूर्त प्रतिसाद दिला.

वार्षिक स्नेहसंमेलना अंतर्गत आर.डी.जी आयडॉल या स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते त्यामध्ये कु. निशा डोंगरे हिने प्रयत्न पुर्वक आर.डी.जी आयडॉल हा सन्मान मिळविला. ५० हुन अधिक विद्यार्थिनींनी सहभाग नोंदविला वार्षिक स्नेहसंमेलनाअंतर्गत 'डान्सिंग स्टार ऑफ आर. डी. जी.' या नृत्य स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते. दि. १० जानेवारी २०२० ला

प्राथमिक फेरी घेण्यात आली या मध्ये शास्त्रीय कथक नृत्य, लोकनृत्य, इत्यादी प्रकारचे नृत्य विद्यार्थिनींनी सादर केले. प्रथम पारितोषिक वैष्णवी बर्डे, द्वितीय पारितोषिक ऋतुजा दिवेकर तसेच तृतीय पारितोषिक चंचल गुप्ता यांना प्रदान करण्यात आले या स्पर्धेमध्ये एकूण दहा स्पर्धकांची अंतिम फेरीसाठी निवड करण्यात आली होती.

हा सर्व अहवाल बनविण्याकरीता डॉ. चारुशिला रुमाले, प्रा. स्वप्नील इंगोले, डॉ. आशिष मुठे, प्रा. राम बाहेती, प्रा. निभा शर्मा तसेच इर समितीच्या सदस्यांनी मोठ्या प्रमाणात सहभाग घेतला व त्याकरीता मोठ्या प्रमाणात शिक्षकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचाऱ्यांनी आपले सहकार्य दिले.



आपली आपल्या मुल्यांवरची निष्ठा निर्णय घेणे सोपे बनविते.

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय स्वच्छता व आरोग्य समितीचा अहवाल

महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींचे शारिरीक, मानसिक व बौद्धिक आरोग्य चांगले असावे या हेतून महाविद्यालयात आरोग्य समितीची स्थापना करण्यात आली.

या आरोग्य समितीने वर्ष २०१९-२० मध्ये महाविद्यालयामध्ये विद्यार्थीनींन करीता विविध उपक्रम तसेच कार्यक्रम घेण्यात आले. या उपक्रमांचा तसेच कार्यक्रमांचा थोडक्यात वृत्तांत अहवालाच्या स्वरूपात पुढील प्रमाणे :

दि. ३० ऑगस्ट २०१९ रोजी स्वच्छता व आरोग्य समिती व शारिरीक शिक्षण विभागाच्या संयुक्त विद्यमाने 'फिट इंडिया' या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. या आयोजनात विद्यार्थीनींनी आपले आरोग्य तसेच मजबूत शरीर ठेवण्या करीता कशा प्रकारचा आहार घ्यावा तसेच कुठल्या प्रकारचे व्यायाम करावे यावर मार्गदर्शन करण्यात आले.

दि. १७ सप्टेंबर २०१९ रोजी डॉ. सौ. अंजली राजवाडे यांचे 'आहारातून आरोग्याकडे' या चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले. या चर्चासत्रात, आपल्या रोजच्या दिनचर्येमध्ये विद्यार्थीनींनी कुठल्या प्रकारच्या आहाराचे सेवन करावे तसेच कोणत्या आहारातून किती प्रमाणात आपल्याला प्रोटीन, विटामीन तसेच इतर फायदे होतात यावर डॉ. अंजली राजवाडे यांनी मार्गदर्शन केले.

दि. १८ सप्टेंबर २०१९ रोजी डॉ. जूगल चिराणीया यांचे 'मधूमेह, उच्चरक्तदाब व लठ्ठपणा' या विषयावर भाषण ठेवण्यात आले. यामध्ये

त्यांनी विद्यार्थीनींना, मधूमेह कसा होतो ?, उच्चरक्तदाब कशाप्रकारे निर्माण होतो ? तसेच लठ्ठपणा कसा येतो व या तिन्ही आजारांवर मात कशी करावयाची यावर माहिती दिली.

दि. २७ सप्टेंबर २०१९ रोजी कॉमर्स विभाग व स्वच्छता व आरोग्य समिती यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'स्वच्छता अभियान' राबविण्यात आला. या मध्ये महाविद्यालयातील परिसर स्वच्छ करण्यात आला तसेच स्वच्छतेचे महत्व देखील विद्यार्थीनींना देण्यात आले.

दि. १२ फेब्रुवारी २०२० रोजी स्त्रीरोग तज्ज्ञ डॉ. हर्षवर्धन मालोकार यांचे 'उंबरठा ओलांडतांना' या विषयावर महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींन करीता चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले. यामध्ये त्यांनी, स्त्रीयांनी तसेच विद्यार्थीनींने नोकरी साठी अथवा शिक्षणासाठी घराबाहेर पडतांना आपल्या आरोग्याची कुठल्या प्रकारची काळजी घेतली पाहिजे यावर मार्गदर्शन केले.

दि. २४ फेब्रुवारी २०२० रोजी संत गाडगेबाबा यांच्या जयंतीच्या निमित्ताने महाविद्यालयीन परिसर तसेच महाविद्यालयाच्या आजूबाजूचा परिसर स्वच्छ करण्याची मोहीम राबविली.

या सर्व आयोजनांमध्ये स्वच्छता व आरोग्य समिती सोबत इतर समितीच्या सदस्यांनी तसेच विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात सहभाग घेतला व त्याकरीता मोठ्या प्रमाणात शिक्षकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचाऱ्यांनी आपले सहकार्य दिले.

विश्व ओळखावे आपणावरून | आपणची विश्व घटक जाण |
व्यक्तीपासून कुटूंब निर्माण | कुटूंबापुढे समाज आपुला ||

श्रीमती रा.दे.गो. महिला महाविद्यालय वाणिज्य विभागाचा अहवाल

महाविद्यालयात वाणिज्य विभागाची स्थापना करण्यात आली या विभागाने वर्ष २०१९-२० मध्ये महाविद्यालयामध्ये विद्यार्थीनींन करीता विविध उपक्रम तसेच कार्यक्रम घेण्यात आले. या उपक्रमांचा तसेच कार्यक्रमांचा थोडक्यात वृत्तांत अहवालाच्या स्वरूपात पुढील प्रमाणे :

दि. २३ ऑगस्ट २०१९ रोजी महाविद्यालयात प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास यांच्या मार्गदर्शनाखाली 'प्रभावी संवाद कौशल्य' या चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले. या आयोजनामध्ये प्रमुख मार्गदर्शक म्हणून डॉ. सपना शर्मा, सेंट थॉमस कॉलेज, भिलाई यांनी 'प्रभावी संवाद' कसा करावा यावर विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन दिले.

दि. २६ डिसेंबर २०१९ रोजी वाणिज्य विभागाच्या वतीने 'सायबर सिक्युरीटी आणि अँडव्हॉन्स टेक्नॉलॉजी' या विषयावर मार्गदर्शक म्हणून श्री. राहूल टाले व दिपक शोधनानी यांनी महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन केले.

दि. ७ जानेवारी २०२० रोजी भारतीय सेवा सदनचे अध्यक्ष मा. दिलीपराजजी गोयनका यांचे 'Self Determination' म्हणजे 'मै' या विषयावर व्याख्यान झाले त्यामध्ये त्यांनी विद्यार्थीनींना 'मै' या विषयावर मार्गदर्शन केले.

दि. १८ जानेवारी २०२० रोजी एम.सी. डावरे यांनी 'ई कॉमर्स प्रोजेक्ट व पर्सनॅलिटी' या विषयावर विद्यार्थीनींना मार्गदर्शन केले व प्रोजेक्ट संबंधी माहिती दिली.

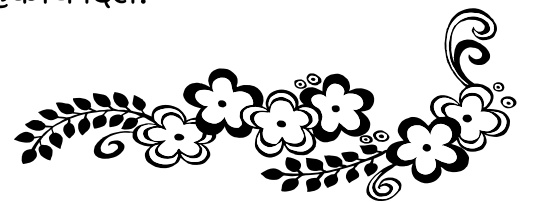
दि. ८ जानेवारी २०२० रोजी प्रतुश भास्कर यांचे 'आर्थिक विपणन जागरुकता' या विषयावर

विशेष व्याख्यान झाले यामध्ये त्यांनी विद्यार्थीनींना 'आर्थिक विपणन' कसे करावे यावर मार्गदर्शन केले. या व्याख्यानाला कॉमर्स मध्ये शिक्षण घेणाऱ्या महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात आपला सहभाग नोंदविला.

दि. ५ फेब्रुवारी २०२० रोजी 'ई-फायलिंग' या विषयावर सनदी लेखापाल मा. श्री. भरत व्यास यांचे व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले होते. या व्याख्यानाचा कॉमर्स विषयात महाविद्यालयात शिकणाऱ्या विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात सहभाग घेतला व 'ई-फायलिंग' करतांना येणाऱ्या अडचणी व त्यावर कसे मात करावयाचे यावर मा.श्री. भरत व्यास यांच्याकडून मार्गदर्शन घेतले.

दि. १० फेब्रुवारी २०२० ला महाविद्यालयात 'स्पार्क' विद्यापीठस्तरीय प्रश्नमंजूषेचे आयोजन करण्यात आले होते. या स्पर्धेत विविध महाविद्यालयीन विद्यार्थीनींनी आपला सहभाग नोंदविला व त्यामुळे या स्पर्धेला भरपुर प्रतिसाद मिळाला व या स्पर्धेचे प्रमुख आयोजक महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. देवेंद्र व्यास हे होते.

या सर्व आयोजनांमध्ये कॉमर्स विभाग समितीच्या सदस्यांनी तसेच विद्यार्थीनींनी मोठ्या प्रमाणात सहभाग घेतला व त्याकरीता मोठ्या प्रमाणात शिक्षकवृंद व शिक्षकेत्तर कर्मचाऱ्यांनी आपले सहकार्य दिले.



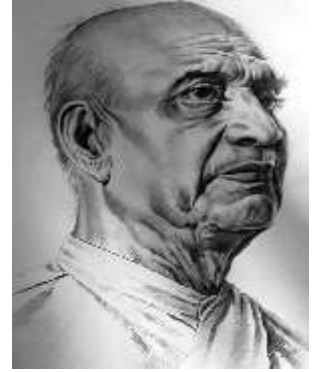
तुमच्या १०० समस्या असल्या तरी फार चिंता करू नका.
त्यापैकी ९० आपोआपच सुटणार आहे.



रांगोळी आणि मेहंदी
स्पर्धेची काही क्षणचित्रे...



चित्रकार की
सुंदर अदाकारी...



कु. तमन्ना मानधने,
बी.ए. द्वितीय वर्ष

शैक्षणिक सत्र २०१९-२०२० मधील प्राध्यापक वर्गाची उल्लेखनीय कामगिरी

Name : **Dr. Devendra Vyas (Principal)**
▶ Business Economics Board of Studies Chairman.
▶ RRC Member. ▶ Academic Council Member.
▶ Faculty Member.

Name : **Dr. Anjali Rajwade (Professor & HOD Home Science)**
▶ Nominated Member on Faculty, SGBAU.
▶ Nominated Member - Sub-Committee for preparing programme-wise "Scheme of Teaching & Learning and Examination & Evaluation, SGBAU.
▶ Honored with 'Urjita 2020 - Award for Best Female Lecturer'

Ph.D. Supervisors

Name : **Dr. Nibha Upadhyay**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Hindi by S.G.B.A. University, Amravati.
University Magazine Committee Member.

Name : **Dr. Anup G. Sharma**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Commerce by S.G.B.A. University, Amravati.

Name : **Dr. Vinod Chavhan**
Achievement : Is recognized as Ph.D. Supervisor in Commerce by S.G.B.A. University, Amravati.

Other Award & Ph.D. Awarded

Name : **Dr. Ravindra Mundre**
Achievement : Awarded by Global Teacher Award.

Name : **Dr. Vidya Dhruv**
Achievement : Awarded Ph.D. in Home Economics by S.G.B.A. University, Amravati.

Name : **Dr. Vijay Aalsi**
Achievement : Awarded Ph.D. in Music by R.S.T. M. University, Nagpur.

Our Laurels.....



-: Students of the Year :-

University Toppers ▶ Naina Turkar ▶ Pragati Deshmukh ▶ Aasma Deshmukh ▶ Bushara Anjum Sayyad
▶ Prajakta Deshpande ▶ Kiran Jade ▶ Komal Marumkar ▶ Musfera Taherim Salim ▶ Jaie Vidyasagar ▶ Apurva Charhate
▶ Aamrapali Dongare ▶ Deepali Akarte.

वृत्तपत्र प्रसार माध्यमांच्या नजरेतून श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय...

मुख्यमंत्री सहायता निधि में एक दिन का वेतन

महिला महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षकत्व कर्मियों को पेंशन



प्रधानमंत्री सहायता निधि के अंतर्गत एक दिवस का वेतन का चेक वितरण कार्यक्रम महिला महाविद्यालय में आयोजित किया गया। शिक्षक एवं शिक्षकत्व कर्मियों को पेंशन के रूप में एक दिवस का वेतन वितरित किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के अधिकारियों का भी शामिल था।

आरडीजी महिला महाविद्यालयामध्ये प्रश्नमंजूषा स्पर्धेला प्रतिसाद



आरडीजी महिला महाविद्यालय में आयोजित प्रश्नमंजूषा स्पर्धा का प्रतिसाद। विद्यार्थियों ने उत्तम प्रदर्शन किया और विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

आरडीजी के लिए आरोग्य विषयक व्याख्यान



आरडीजी महिला महाविद्यालय में आयोजित आरोग्य विषयक व्याख्यान। विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण बातें बताईं। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

वृत्तपत्र



वृत्तपत्र प्रसार माध्यमांच्या नजरेतून श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय...

इंटर डिस्ट्रिक्ट फुटबल महिला टीम जलगांव रवाना



इंटर डिस्ट्रिक्ट फुटबल महिला टीम जलगांव रवाना। टीम को प्रशिक्षण देकर जलगांव के लिए रवाना किया गया। टीम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

शोधकर्ता के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार अधिनियम की जानकारी जरूरी



शोधकर्ता के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार अधिनियम की जानकारी जरूरी। विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को बौद्धिक संपदा के महत्व और अधिकारों के बारे में बताया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

छात्राओं ने जाना साहित्य का महत्व



छात्राओं ने जाना साहित्य का महत्व। साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन के अनेक पहलुओं का ज्ञान प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

आजची आधुनिक स्त्री ही सक्षम, सबल: प्रा. संजय विठे



आजची आधुनिक स्त्री ही सक्षम, सबल: प्रा. संजय विठे। प्रा. संजय विठे ने विद्यार्थियों को आधुनिक स्त्री के गुणों के बारे में बताया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

एनसीसी व आरएसपीच्या एनसीसी कॅडेट्स का सहभाग



एनसीसी व आरएसपीच्या एनसीसी कॅडेट्स का सहभाग। एनसीसी कॅडेट्स ने विद्यालय में कार्यक्रम में सक्रिय भाग लिया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

पल्स पोलियो अभियान में एनसीसी कॅडेट्स का सहभाग



पल्स पोलियो अभियान में एनसीसी कॅडेट्स का सहभाग। एनसीसी कॅडेट्स ने पल्स पोलियो अभियान में सक्रिय भाग लिया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

आरडीजी महिला महाविद्यालयामध्ये योगा अभ्यासक्रमाचा उत्साहात समारोप



आरडीजी महिला महाविद्यालयामध्ये योगा अभ्यासक्रमाचा उत्साहात समारोप। योगा अभ्यासक्रम का उत्साहपूर्वक समापन हुआ। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

अभिव्यक्ति कौशल पर पाठ्यक्रम प्रारम्भ



अभिव्यक्ति कौशल पर पाठ्यक्रम प्रारम्भ। अभिव्यक्ति कौशल के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन के अनेक पहलुओं का ज्ञान प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

आरडीजी महिला महाविद्यालयामध्ये पंच पंचक्रमाचार्य दिवस



आरडीजी महिला महाविद्यालयामध्ये पंच पंचक्रमाचार्य दिवस। पंच पंचक्रमाचार्य दिवस का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

सडे एकर रेडल वॉटज अटवान, गुणम रास्त द्वीतीय, तृतीय चरयाणी सारके सफल रही आरडीजी की नैशनल सुगम संगीत स्पर्धा



सडे एकर रेडल वॉटज अटवान, गुणम रास्त द्वीतीय, तृतीय चरयाणी सारके सफल रही आरडीजी की नैशनल सुगम संगीत स्पर्धा। नैशनल सुगम संगीत स्पर्धा में आरडीजी की टीम का उत्तम प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

सफल रही आरडीजी की विचज कॉम्पिटीशन



सफल रही आरडीजी की विचज कॉम्पिटीशन। विचज कॉम्पिटीशन में आरडीजी की टीम का उत्तम प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

छात्राओं ने सीखे कचरे से कंपोस्ट खाद बनाने के गुर



छात्राओं ने सीखे कचरे से कंपोस्ट खाद बनाने के गुर। छात्राओं को कचरे से कंपोस्ट खाद बनाने के गुर के बारे में बताया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकों का भी शामिल था।

महाविद्यालय मे हुए विविध उपक्रमो के क्षणचित्र...



स्वच्छ राष्ट्र बनाना है ।
कोरोना को हराना है ।



Bharatiya Seva Sadan's
Smt. Radhadevi Goenka College for Women, Akola.
 NAAC Reaccredited Grade - B⁺ with CGPA - 2.71 (Certified Minority Institution)
 Near Nehru Park, Murtizapur Road, Akola - 444 001(M.S.)
 Phone & Fax : 0724-2450905 Website : www.rdgakola.ac.in
 E-mail : rdgcollegeakola@gmail.com